1.रोजगारमूलक हिंदी

1.1 रोजगारमूलक हिंदी की अवधारणा -

रोजगारमूलक हिंदी का तात्पर्य यह वह हिंदी है जिसके केंद्र में रोजगार है,जो रोजगार दिलाने में मदद करती है। रोजगार के अवसर प्रदान करती है और जो रोजगार का कौशल या हुनर सिखाती है।वह आत्ममनिर्भर बनाती है।वह अर्थाजन कराती है।यह वह हिंदी है,जो पद,प्रतिष्ठा ,पैसा देती है। पहचान देती है और परिचय बनाती है।यह करियर ओरियेंटेड हिंदी है। ऐसी हिंदी जो शिक्षा ,प्रशिक्षण और कौशल द्वारा किसी व्यक्ति को किसी विशेष क्षेत्र में काम कराने योग्य बनाती है।हिंदी का यह स्वरूप जो अध्येताओं को रोज़गार का कौशल और अवसर प्रदान करता है। हिंदी भाषा के मौखिक एवं लिखित कौशल एवं सामर्थ्य के आधार पर विहित प्रशिक्षण द्वारा अभ्यर्थी स्वयं को रोज़गारमूलक हिंदी के योग्य बनाता है तथा विविध सरकारी एवं गैर-सरकारी क्षेत्रों में रोज़गार के अवसर प्राप्त करता है।

रोजगारमूलक हिंदी नौकरी ,व्यवसाय या स्वयंरोजगार हेतु भाषिक क्षमताओं का विकास कराती है।जिसका मुख्य उद्देश्य रोजगार प्राप्ति के अवसर प्रदान कराने हैं। यह वह हिंदी जो दिन-ब-दिन व्यापक हो रही है। उसके कई आयाम हैं।कई रुप हैं।कई जलवे हैं। हर एक में कई हुनर है।कौशल है। अब वह वैश्विक माहौल में राजभाषा तक सीमित नहीं रही है। वह शेअर मार्केट की हिंदी बनी है।यह हिंदी बाजार की हिंदी है। मंडी की हिंदी है।भूमंडी की हिंदी है।वह व्यावहारिक है।व्यावसायिक है। लोकोपयोगी है। वह अत्यंत सरल,सहज और संप्रेषणीय है।।सबके के लिए आसान और अहम भी । अब उसने अपने तेवर बदल दिए है।बदले हुए मिजाज में मिसाल बनेगी ।अब हिंदी मजबूरी का नाम नहीं मजबूती का नाम है।वैश्वीकरण,तकनीकीकरण,अंतरजाल तथा यूनिकोड की खोज और प्रयोग से हिंदी में अब अपार ,असिमित रोजगार की संभावनाएँ उपलब्ध हुई हैं।सबके लिए हितकारी साबित होगी। वैश्विक परिप्रेक्ष्य में उसका अनायास ही महत्व स्थापित हो चुका है। अब केवल उपाधिधारी होने से रोजगार नहीं मिलेगा,जिसके पास भाषिक हुनर है वह बेकार नहीं रह सकता। आवश्यकता है कौशलयुक्त भाषा प्रयोक्ता बनने की।"करत करत अभ्यास जडमति होत सुजान"।आवश्यकता है बाजार किस प्रकार की भाषा चाहता है।उसे पहचानना।इसलिए रोजगारमूलक हिंदी समय की माँग है ,यही अवधारणा रोजगारमूलक हिंदी में निहित है और अभिप्रेत भी।

1.2 रोजगारमूलक हिंदी का स्वरुप -

जो हिंदी सरकारी,निजी व व्यावसायिक क्षेत्र में मौखिक तथा लिखित रुप में प्रयुक्त होती है और प्रशिक्षण के द्वारा हुनर प्राप्त कर रोजगार उपलब्ध कराती है तथा जिसके द्वारा अर्थाजन होता है वह रोजगारमूलक हिंदी कहलाती है। वह लोकोपयोगी और संप्रेषणीय है।उसके प्रयोग में ही उसका स्वरुप निहित है। रोजगार जिसका उद्देश्य और अर्थाजन जिसका लक्ष्य।जिसके केंद्र में अर्थ है। दुनिया में अब तक वही भाषा समृद्ध तथा संपन्न हुई ,जिसमें व्यापार है ,रोजगार है। हाँ, प्रारंभ में यह हिंदी राजभाषा के रुप में दफ्तरों में फली,फूली और गढी अब उसका विस्तार हुआ है और अहमियत भी।वैश्विक माहौल में उसका स्वरुप बदला।अब वह मार्केट की भाषा बनी है।तकनीकी की हिंदी बनी।साहित्यिक,कार्यालयीन अनुवाद के साथ मशीनी अनुवाद ने नये रुप में खुद को अधिक सार्थक, गतिशील और विशालकाय बनाया।उसे कृत्रिम बुद्धि विशेष सहयोग दे रही है। अब कृत्रिम बुद्धि तर्क,समझ और व्यवहार के आधार पर मनुष्य का विकल्प बनने के कगार पर खडी है। हिंदी के प्रयुक्त रुपों के प्रयोग के लिए कृत्रिम बुद्धि सहकारिणी,अनुगामिणी के रुप में स्थापित हो रही है।अब हिंदी केवल साहित्य,संवेदना,संस्कृति या मातृभाषा तक सीमित नहीं है बल्कि उसमें रोजगार की असीमित और अपार संभावनाएँ निहित है।एक जमाना था कि लोगों ने चंद्रकांता पढने के लिए हिंदी सीखी लेकिन आज चंद्रकांता पढने के लिए कोई हिंदी नहीं सीखेगा बल्कि आज कोई हिंदी सीखेगा तो मात्र रोजगार के लिए सीखेगा। तमिलनाडु का रिक्क्षावाला अन्य राज्य के ग्राहक को भाप कर तुरंत हिंदी में बोलेगा तो मात्र रोजगार के लिए जिससे उसकी रोजी-रोटी चलती है।

आज हिंदी की लोकप्रियता और आवश्यकता और भी बढ गई है। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहाँ हिंदी का प्रयोग न हो। चाहे प्रिंट मीडिया हो या चाहे इलेक्ट्राॅनिक मीडिया,सोशल मीडिया, फिल्म,संगणक,पटकथा लेखन,गीत लेखन.संवाद लेखन,सामग्री लेखन,ब्लॉग लेखन,फीचर लेखन,वेब लेखन ऐसे कई क्षेत्र हैं जहाँ रोजगार उपलब्ध है।उसका स्वरुप अधिक व्यापक है और भी व्यापक होगा।इसमें कोई दो राय नहीं। वह अपने बलबूते पर विकास का झंडा गढेगी। खुल जा सीम सीम जैसे नई पीढी के लिए रोजगार के कई द्वार खोले हैं।आवश्यकता है हिंदी के बदलते तेवर को समझे,जाने,पहचाने,सीखें। उसके माँग की पूर्ति में ही रोजगार छीपा है। उसमें पूर्णकालिक,अर्धकालिक,अंशकालिक,आकस्मिक तथा वर्क फ्राम होम जैसे कई रुप उसके स्वरुप के अनुरुप हैं। जिसका विशेष अनुभव हमने कोराना के दौरान महसूस किया है।इंटरनेट से डिजिटल युग विशालकाय बना है, जैसे- पत्रिका ,ई-बुक्स,ई-प्रकाशन,ई-बाजार। ऐमेजॉन का ग्राहक के अनुसार जो हिंदी मशीनी अनुवाद होता है ,वह सबसे अधिक सही और लुभावना लगता है। जिस उपभोक्ता को अँग्रेजी नहीं आती है तुरंत उसे हिंदी में मशीनी अनुवाद उपलब्ध करा देता है।दुनिया की सभी कंपनियों ने जाना है कि भारत में व्यापार के लिए हिंदी से बडा कोई विकल्प नहीं है।इसीलिए तो डिस्कवरी तथा एनिमल प्लैनेट जैसे धारावाहिक हिंदी में डबिंग हो रहे हैं। वर्तमान समय में हिंदी में डबिंग यह रोजगार का बहुत बडा क्षेत्र है। आज अँग्रेजी तथा प्रादेशिक भाषाओं की हिट फिल्में सबसे पहले हिंदी में डबिंग हो रही है।

दुनिया की सबसे बडी फिल्मी दुनिया किसी भाषा के पास है तो उसका नाम है हिंदी। इस निजी क्षेत्र ने सबके लिए सबसे अधिक रोजगार दिये हैं। जैसे फिल्म निर्माण में फिल्म निर्देशक,पटकथा लेखन,संवाद लेखन,फिल्म निर्माता,सहायक निदेशक;संगीत और ध्वनि में संगीतकार,गीतकार,संगीत,संगीत समन्वयक;छायांकन और संपादन में छायाकार,संपादक,विजुअल इफेक्टस आर्टिस्ट;विपणन और वितरण में विपणन प्रबंधक,वितरण प्रबंधक,प्रचार प्रबंधक तथा सोशल मीडिया मैनेजर,फिल्म आलोचक व फिल्म पत्रकारिता जैसे कई पद होते हैं,जहाँ रोजगार की सुविधा उपलब्ध होती है।उसका स्वरुप दिन-ब-दिन बढता जा रहा है। हिंदी , फिल्मों में जितनी गढी,ढली,पली,फली,फूली उतनी अन्य किसी रुप में नहीं।देश में ही नहीं विदेश में भी लोगों के जुबान पर हिंदी गीत और हिंदी डॉयलॉग थिरकते हैं,नाचते हैं,माहौल बदलते हैं,करोडों लोगों के दिलों की धडकन बन जाते हैं। वैसे फिल्म ने हिंदी को संजोया,संवारा और सराहा। वह टकसाल की भाषा बना दी।जिसने बेजुबान को जुबान दी।बेघर को घर दिया।यह है रोजगारमूलक हिंदी का स्वरुप,जिसके रुप हैं अनेक।

1.3 रोजगारमूलक हिंदी की उपयोगिता-

वर्तमान समय में परिवेश और परिस्थितियाँ बदली है। बेरोजगारी का बढता अनुपात पिछले दशकों से दुगुना हुआ है।ऐसे समय रोजगारमूलक हिंदी रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने में सहयोगी और उपयोगी साबित हो रही और होगी भी। भाषिक रोजगार उपलब्ध कराना समय की माँग है।उसके पूर्ति में ही रोजगारमूलक हिंदी की उपयोगिता अंतर्निहित होगी।आज छात्र इसलिए हिंदी नहीं पढेगा कि उसे सूर,तुलसी,कबीर और प्रेमचंद को जानना है,उन्हें समझना है बल्कि इसलिए वह वही हिंदी पढेगा जिसमें रोजगार के अवसर उपलब्ध हैं। वह अर्थार्जन हेतु हिंदी पढेगा।भाषिक कौशल हेतु हिंदी पढेगा।हिंदी का तकनीकी रुप समझने के लिए हिंदी पढेगा।तकनीकी में प्रतिभा व्यक्त करने के लिए हिंदी पढेगा। व्यवसाय के लिए हिंदी पढेगा।मंडी की हिंदी पढेगा।अर्थात उसके लिए रोजगारमूलक हिंदी , बेरोजगारी से लढने का हथियार है।भारत ,आज दुनिया का सबसे बडा मार्केट है।यहाँ 83 प्रतिशत लोग हिंदी बोलते हैं।मार्केट भी समझ गया है कि ग्राहक की भाषा में व्यापार करना कितना कारगर साबित होगा। सरकारी से अधिक निजी क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग हो रहा है। नौकरी के अवसर भी सरकारी से निजी क्षेत्र या स्वयं रोजगार में अधिक हैं।1991 से भारत का बाजार ही नहीं भारत भी बदला है।बदलते तेवर के अनुरुप हिंदी ढली है।वह अपना जलवाँ दिखा रही है। उपयोगिता के आधार रोजगारमूलक हिंदी किसी भी भाषा के तुलना में उन्नीस नहीं बीस है, जिसकी निम्नांकित मुद्दों के आधार पर चर्चा करेंगे-

1.3.1 रोजगार के अवसर-आज अशिक्षित से अधिक शिक्षित युवकों में बेरोजगारी की मात्रा कई गुना अधिक है। वे मेहनत तो करना चाहते हैं लेकिन नौकरी हेतु दिशाहीन भटक रहे हैं। ऐसे समय रोजगार दिलाने तथा रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने में रोजगारमूलक हिंदी अत्यंत कारगर साबित हो रही है।हजारों लडके-लडकियों को रोजगार मिल रहा है। आवश्यकता है उस

भाषिक कौशल को प्राप्त कराना है जिसमें रोजगार के अवसर हैं।ऐसे अवसरों से परिचित कराने में तथा अवसर उपलब्ध कराने रोजगारमूलक हिंदी की उपयोगिता सिद्ध हो रही है।तकनीकी,सिनेमा,पत्रकारिता,अनुवाद ,टंकण जैसे अनेक क्षेत्रों में रोजगार के अवसर उपलब्ध है। आज पारपंरिक शिक्षा की जगह रोजगारमूलक हिंदी के नवीनतम पाठ्यक्रमों की आवश्यकता है,जो बेरोजगारी का विकल्प साबित हो रहा है।

1.3.2 भाषिक कौशल- इसके अंतर्गत मुख्यत:दो भाग हैं- लेखन कौशल और अभिव्यक्ति कौशल।लेखन कौशल के अंतर्गत कंटेंट राइटिंग ,समाचार लेखन,फीचर लेखन,पटकथा लेखन। समाज माध्यम में ब्लॉग,वेब,फेसबुक,विज्ञापन,मार्केटिंग आदि के लिए सामग्री लेखन के कई अवसर हैं,जो कार्य आप घर बैठकर अपने समय के अनुसार कर सकते हो। अनेक कंपनियाँ तथा व्यावसायिक वस्तुओं के बिक्री तथा ग्राहक को आकर्षित करने हेतु जानकारी देते हैं या विज्ञापन करवाते हैं,उसके लिए सामग्री लेखन की आवश्यकता होती है। इस लेखन में ग्राहक की मानसिकता पहचानकर लेखन में नवीनतम देने की खूबी होनी चाहिए। सामग्री लेखन की बहुत माँग है। अनेक कंपनियाँ अपने वस्तुओं की पहचान बनाने तथा ब्रांड बनाने हेतु ब्लॉग लेखन करवाते हैं,उसके लिए सामग्री लेखन की आवश्यकता होती है।इसलिए लेखन कौशल अधिक उपयोगी साबित हो रहा है। फिल्म तथा धारावाहिक के लिए पटकथा लेखन समय की माँग है। पटकथा लेखन में कहानी तथा संवाद लेखन सबसे महत्वपूर्ण होता है,उसमें रोजगार के अवसर उपलब्ध हैं। साथ ही अभिव्यक्ति कौशल में संचालन,द्विभाषी तथा चैनलों के लिए एंकरिंग आदि में रोजगार हैं।

1.3.3 अर्थार्जन- व्यापार,बाजार,शिक्षा,सरकारी सेवा,स्वयं रोजगार ,फिल्मी दुनिया, पत्रकारिता,तकनीकी जैसे कई क्षेत्रों में भाषिक कौशल से पारिश्रमिक मूल्य के रुप में अर्थ प्राप्ति होती है। लेकिन आज अच्छे निवेदक नहीं मिलते,जिन्हें टॉर्च लेकर ढुँढना पडता है। जिसके पास यह कला है ऐसे निवेदक एक बडे कार्यक्रम के पंधरह-बीस हजार रु. लेते हैं। आज एक पृष्ठ अनुवाद के एक हजार रु. मिलते हैं। एक पृष्ठ टंकण किया तो पचास रु. और एक पृष्ठ का प्रूफ शोधन किया तो तीस रुपये मिलते हैं। अर्थात रोजगारमूलक हिंदी का एक हुनर आपकी जिंदगी बदल देता है। पद ,पैसा और प्रतिष्ठा देने की ताकत रोजगारमूलक हिंदी में है।

1.3.4 प्रतिभा की अभिव्यक्ति- उत्कृष्ट ब्ला ॅग लेखन प्रतिभा की सृजनात्मक अभिव्यक्ति ही होती है,जिसे लाखों पाठक पढते हैं ,जिनको ब्लॉग से नवीनतम और अत्यंत उपयोगी जानकारी मिलती है। हिंदी में कई ऐसे यू-ट्यूब चैनेल हैं कि जो तथ्यों के आधार पर शोधपरक विश्लेषण करने पर जिसे लाखों दर्शक बडी लगन से देखते हैं,वहाँ यूट्यूबर के प्रतिभा का परिचय होता है। हिंदी में कई उत्कृष्ट एप्लिकेशन निर्माण किये हैं,जिनके द्वारा हिंदी का प्रचार-प्रसार ही नहीं हो रहा है बल्कि रोजगार भी प्राप्त हो रहा है। अत: उत्कृष्ट माध्यम लेखन में प्रतिभा की अभिव्यक्ति होती है। अर्थप्राप्ति होती है।इसलिए प्रस्तुत माध्यम की प्रस्तुति अत्यंत उपयोगी साबित हो रही है।

1.3.5 आत्मनिर्भरता और स्वानंद- रोजगारमूलक हिंदी आत्मनिर्भर तथा स्वानंदी बनाती है।इस हिंदी ने लाखों युवाओं को आत्मनिर्भर बनाया है। अनेक युवाओं को अपने भाषिक कौशल ,प्रतिभा और परिश्रम से अपने भीतर की चेतना को जगाकर आत्मनिर्भर बनाया। रोजगारमूलक हिंदी से व्यावसायिक अवसरों में वृद्धि हुई है और नवीनतम के लिए स्वतंत्रता भी मिली । संचार और लेखन कौशल का विकास होने से आत्मविश्वास बढता है। आर्थिक स्थिरता प्रदान होती है। सामाजिक सम्मान मिलता है।अत:रोजगारमूलक हिंदी के ज्ञान और कौशल से व्यक्ति आत्मनिर्भर बनाता है। रुचि के अनुसार कार्य करने से आनंद मिलता है।यह इसकी उपयोगिता है।

1.3.6 जीनजीवन की भाषा- रोजगारमूलक हिंदी की सबसे बडी खासियत उसकी सरलता,सहजता और संप्रेषणीयता है, जिससे वह जनजीवन का हिस्सा बन जाती है।जैसे कई ऐसे स्लोगन है जिसकी भाषा लोगों के स्मृति का हिस्सा बन गई,जैसे- "ठंडा का मतलब,कोका कोला। या "कुछ मीठा हो जाए"(कैटबरी)। जन जीवन से जुडे इस रुप से अपनी जडें गहरी बनी । वह लोगों के जुबान की भाषा बनी है।इससे वह लोकप्रिय और उपयोगी भाषा बनी है।

1.4 रोजगारमूलक हिंदी के विभिन्न क्षेत्र -

वर्तमान समय में यदि सबसे अधिक रोजगार किस क्षेत्र में हैं तो वह तकनीकी में।भारत में आज लगभग एक अरब मोबाईल और एक करोड से अधिक संगणकों का प्रयोग लोग करते हैं। विदेशी कंपनियों ने यह जान लिया है यूनिकोड आने से भारतीय भाषाओं में अनंत संभावनाएँ है और जिसमें बहुत बडा मार्केट है। आज हिंदी भाषा के तकनीकी क्षेत्र में बहुत बडा रोजगार उपलब्ध है,जैसे- हिंदी टंकण, हिंदी वर्तनी जाँचक,व्याकरण जाँचक,मशीनी अनुवाद,ई शिक्षा,ई प्रकाशन,ई पत्रिका,ई बुक,ई कॉमर्स,ब्लॉग,वेबसाईट,यू-ट्यूब,फेसबुक,पेजमेकिंग,वायस टाइपिंग,वाक से पाठ ,पाठ से वाक ,पाठ से अनुवाद तथा हिंदी में सॉफ्टवेयर निर्माण आदि क्षेत्र हैं। हिंदी में एक पृष्ठ टंकण के लिए पच्चास रुपये मिलते हैं । एक दिन में 20पन्ने टंकण होते हैं तो एक दिन की कमाई एक हजार रु. होती है। आज हिंदी विषय में बी.ए.,एम.ए.,एम.फिल.,पीएच.डी.उपाधि प्राप्त छात्र मिलेंगे लेकिन अच्छा टंकणकर्ता मिलना दुर्लभ-सा है। इस अनुभव से अधिकत्तर अध्यापक गुजरे हैं।अर्थात जिनके पास कौशल है,हुनर है उनके लिए बेकारी का प्रश्न नहीं है। बेकारी का प्रश्न तो उनके लिए है ,जो उच्च शिक्षित तो हैं लेकिन कोई कौशल नहीं है। हिंदी मजबूरी का नाम नहीं मजबूती का नाम है ,जिसे हम भूल गये।उन क्षेत्रों का विवरण निम्नांकित है-

1.4.1 राजभाषा हिंदी -

राजभाषा का तात्पर्य है राजकाज की भाषा ,सरकार चलाने की भाषा,सरकार के कार्यों के लिए प्रयुक्त की भाषा । हिंदी इस देश की राजभाषा(संघभाषा) है।14 सितम्बर,1949 को संविधान सभा हिंदी को राजभाषा के स्वीकारा । संविधान के अनुच्छेद 343 (i) के अनुसार "संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी"। अनुच्छेद 351 में हिंदी के प्रचार-प्रसार और विकास के संदर्भ में दिशानिर्देशित किया है। हिंदी के क्रियान्वयन और हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए गृहमंत्रालय के अंतर्गत सन 1975 में राजभाषा विभाग की स्थापना हुई है।राजभाषा 1976 के अनुसार केंद्रसरकार के मंत्रालयों तथा कार्यालयों में हिंदी के क्रियान्वयन के लिए सभी कार्यालयों में राजभाषा अधिकारी का पद निर्माण किया गया है।उसी अनुसार केंद्र सरकार के मंत्रालयों,कार्यालयों तथा रेल,राष्ट्रीय बैंकों और बीमा कंपनियों में राजभाषा अधिकारी की नियुक्तियाँ होती है। रोजगार पाने की दृष्टि से यह बहुत बडा अवसर है।

राजभाषा अधिकारी का कार्य होता है कि हिंदी यह देश की राजभाषा है,जिसका प्रचार-प्रसार कराना,अपने कार्यालयीन कर्मचारियों को हिंदी का प्रशिक्षण देना,अपने कार्यालयों में हिंदी का अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करवाना,हिंदी में कामकाज हो ।अर्थात उस प्रकार का माहौल निर्माण कराना ही राजभाषा अधिकारी का कार्य होता है। सरकारी तथा अन्य कार्यालयों की योजनाओं,नीतियों तथा पत्रों का अँग्रेजी से हिंदी करवाना जिससे सभी को जानकारी आसानी से प्राप्त होगी।राजाभाषा अधिकारी,हिंदी अधिकारी ,हिंदी निदेशक सभी एक जैसे पद हैं । सभी का उदेश्य हिंदी का कार्यान्वयन ही है।केंद्रीय मंत्रालयों में हिंदी अधिकारी की जगह उपनिदेशक शब्द होता है।केंद्र सरकार तथा बैंको की ओर से लगभग हर वर्ष राजभाषा अधिकारी का विज्ञापन आता है।कई नियुक्तियाँ होती हैं।इस पद की शैक्षिक पात्रता यह है कि आपकी पदव्युत्तर शिक्षा हिंदी में हो और बी.ए.के स्तर पर अँग्रेजी विषाय हो। इसका चयन पूर्व परीक्षा ,मुख्य परीक्षा और साक्षात्कार के द्वारा होता है। केंद्र सरकार में राजभाषा अधिकारी की नियुक्तियाँ उन्हीं के द्वारा तथा बैंको के राजभाषा अधिकारी की नियुक्तियाँ इंस्टीट्यूट ऑफ बैंकिंग पर्सलन सेलेक्शन (IBPS) द्वारा होती है।आय.बी.पी.एस.भारत की एक स्वायत संस्था है। आवश्यकता है कि हिंदी टंकण तथा अँग्रेंजी से हिंदी या हिंदी से अँग्रेजी अनुवाद करने का कौशल होना चाहिए। एक वर्ष की अनुवाद पदविका होनी चाहिए ,जो देश के कई विश्वविद्यालयों उपलब्ध हैं।अत: राजभाषा हिंदी रोजगार का बहुत बडा क्षेत्र है।

1.4.2 यू-ट्यूब–

वर्तमान समय में पैसे कमाने का महत्वपूर्ण माध्यम यू-ट्यूब कहना होगा। क्योंकि जिसके यू-ट्यूब चैनेल को एक हजार सबक्राईबर मिलें हैं और जिसका चैनेल चार हजार घंटे देखा गया हो उसे यू-ट्यूब के द्वारा पैसा मिलना प्रारंभ होता है। जिनमें से 55 प्रतिशत यूट्यूबर को तो 45 प्रतिशत गूगल कंपनी को मिलते हैं क्योंकि यू-ट्यूब गूगल का वेबस्थल(Website) है। यू-ट्यूब चैनेल पर आपका वीडियो जितने अधिक लोग देखतें हैं उतने ही अधिक पैसे मिलते हैं ।इसलिए आपका वीडियो जादा छोटा भी न हो और दस मिनट से बडा भी न हो। आपका वीडियो अत्यंत रुचिपूर्ण हो दर्शक को बाँधकर रखें।आज दुनिया में सबसे अधिक यू-ट्यूब भारत में देखा जाता है । यू-ट्यूब मनोरंजन और जानकारी के लिए देखा जाता है। छोटे बच्चे से लेकर बूढों तक मनोरंजन के वीडियो देखते हैं,जिससे मनुष्य के मस्तिष्क का डोपामाईन हार्मोन्स एक्टीव्ह होता है ।वह जितना एक्टीव्ह होता है उतनाही मनुष्य को आनंद मिलता है। इसलिए यू-ट्यूब पर सबसे अधिक वीडियो मनोरंजन और जानकारी से संबंधित होते हैं,जिससे अनेक यूट्यूबर को लाखों रुपयों का रोजगार उपलब्ध हो रहा है।

1.4.3 ई-बुक्स -

भारत में आज हार्ड कॉपी से अधिक ई-बुक्स पढने वालों की संख्या अधिक है। ई-पाठक यानी इलेक्ट्रॉनिक पुस्तक का डिजिटल रुप पढनेवाला पाठक। पाठक ई-बुक्स को मोबाईल,टैबलेट,कंप्यूटर पर जब चाहे तब और जहाँ चाहे वहाँ पढ सकता है। ई-किताबें कहीं सशुल्क हैं तो कहीं निःशुल्क । ऐमेजॉन के किण्डल एप पर अत्यंत लेटेस्ट किताबें नाम मात्र कीमत पर हम पढ सकते हैं। इसलिए ई-बुक्स बनाकर बेचने का बहुत बढा रोजगार उपलब्ध हुआ है। पाठक को आकर्षित करने के लिए उस किताब में ऑडियो-वीडियो के साथ किताब को रंगीन और सुंदर फॉन्टों में बना सकते हो। रोजगार की दृष्टि से यह बहुत अच्छा व्यवसाय है। इस व्यवसाय के लिए अतिरिक्त पैसे खर्च करने की भी आवश्यकता नहीं है।आवश्यकता है तो मात्र ई-बुक्स बनाने के कौशल की। यह कौशल आप कुछ ही दिनों में प्राप्त कर सकते हो।

1.3.4 ब्लॉग लेखन-

ब्लॉग लेखन रोजगार का बहुत बडा क्षेत्र है। ब्लॉग लेखन से जहाँ एक ओर हम अपने भाव,विचार,कल्पना,जानकारी , नवीनता और सृजनात्मक अभिव्यक्ति से दुनिया से जुड सकते हैं तो दूसरी ओर व्यावसायिक दृष्टि से रोजगार भी पा सकते हैं। मनोरंजन,जानकारी,व्यवसाय,शिक्षा,स्वास्थ्य ,कला आदि किसी भी विषय पर आप ब्लॉग बना सकते हो।विषय की कोई सीमा नहीं ।आवश्यकता है ब्लॉग लेखन में नवीनता हो,निरंतरता हो,शोधपरकता हो,पठनीयता हो,सहज,सरल और बोधपरक भाषा हो,गागर में सागर भरने की कला हो,

छोटे-छोटे परिच्छेद हो,ऑडियो-वीडियो व चित्रों का प्रयोग हो, अत्यंत आकर्षक शैली हो,प्रत्येक ब्लॉग का शीर्षक तथा उपशीर्षक अत्यंत सटीक हो। जापान का प्रत्येक तीसरा आदमी ब्लॉग लेखन करता है। सोशल मीडिया का यह बहुत बडा प्लैटफॉर्म है। हम स्वयं के लिए या अपने कंपनी के उत्पादन की पहचान बनाने हेतु भी ब्लॉग लेखन कर सकते हैं,जिससे अधिक लाभ होगा। सही लाभ ब्लॉग लेखन के विज्ञापन के अर्थार्जन से होता है। जितनी मात्रा आपके ब्लॉग को अधिक पाठक मिलते हैं उतनी ही मात्रा में विज्ञापन से अधिक पैसे मिलते हैं।

1.4..5 अनुवाद-

भूमंडलीकरण में दुनिया बहुत बदली है। हर कंपनियों को अपनी हर वस्तु ग्राहक के भाषा में बेचनी है और ग्राहक को अपनी ओर आकर्षित करना है। इसलिए विज्ञापन क्षेत्र में अनुवाद के लिए बहुत बडे अवसर हैं। केंद्र सरकार के प्रत्येक मंत्रालयों तथा बैंक -बीमा में भी अनुवादक पद होते हैं। साहित्य क्षेत्र में भी अनुवाद करने पर अच्छा पारिश्रमिक मिलता है।एक शब्द के लिए दो से पाँच रुपये अर्थात एक पृष्ठ अनुवाद के छह सौ रुपये मिलते हैं।आवश्यकता है दोनों भाषा पर प्रभुत्व हो ।अर्थात स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा दोनों पर। दो भिन्न संस्कृति ,समाज,इतिहास और भूगोल का सामान्य ज्ञान हो।दुनिया के किसी भी भाषा में उत्कृष्ट ग्रंथ प्रकाशित होता है तो तुरंत उसका अनूदित रुप अँग्रेजी में आता है।इसलिए दुनिया के उत्कृष्ट ग्रंथों का अनुवाद अपनी भाषा में कर भाषा को समृद्ध और संपन्न करना चाहिए। इस दृष्टि से साहित्य अकादेमी ने बहुत बडा कार्य किया है। अनुवादक को अच्छा मानदेय भी मिलता है।

1.4.6 पटकथा लेखन-

पट और कथा से पटकथा (Script)शब्द बना है।पट का अर्थ है परदा और कथा का अर्थ है कहानी। पटकथा अर्थात फिल्म ,टेलीवीजन,टेलीफिल्म,शॉर्टफिल्म तथा इन जैसे कई अन्य माध्यमों के लिए लिखा कच्चा चिठ्ठा ।उसे जब संवादों में ढाला जाता है तब पटकथा बनती है। कहानी पटकथा का आधारतत्व है तो फिल्म या धारावाहिक का आधारतत्व पटकथा ।बीना पटकथा के फिल्म की कल्पना भी नहीं की सकती।यह दृश्य-श्रव्य माध्यम लेखन है जिसमें शैली प्रस्तुतीकरण और दृश्य लेखन अपना अलग महत्व रखता है।संवाद पटकथा का प्राण होता है। 'शोले','दीवार' जैसी फिल्मों के संवादों ने लोगों के दिलों पर राज किया। 'दीवार' फिल्म का अभिताभ बच्चन और शशीकपूर संवाद निम्नांकित है-

अभिताभ बच्चन-"आज मेरे पास बिल्डिंग है ,प्रॉपर्टी है,बैंक बैलेन्स है,गाडी है।क्या है, तुम्हारे पास?"

शशीकपूर-"मेरे पास...माँ है..."

कथा में भूतकालीन क्रियापद होते हैं तो पटकथा में वर्तमानकालीन क्रियापद।'था' की जगह 'है' का प्रयोग। जैसे कथा में-"एक था राजा।एक थी रानी।राजा मर गया और रानी मर गयी।" पटकथा में-"एक होता है राजा और एक रानी।राजा मरा और रानी भी।"

वैसे पटकथा किसी भी विषय पर बन सकती है।विषय की कोई मर्यादा नहीं।समाज,इतिहास,संस्कृति,लोक संस्कृति,वर्तमान समय की कोई चर्चित घटना या विषय हो सकता है,जैसे 'पदमावत' एक ऐतिहासिक फिल्म है,जो संजय लीला भंसाली के निर्देशन में बनी है। साहित्य की अनेक रचनाएँ फिल्म का विषय बनी है,जैसे-शरतचंद्र चट्टोपाध्याय का 'देवदास' उपन्यास।इस उपन्यास पर अब तक तीन फिल्में बनी हैं। वर्तमान समय में सबसे अच्छा करियर पटकथा लेखन में है।आज सैकडों टेलीविजन चैनेल हैं,वेब सीरिज हैं,फीचर लेखन हो रहा है। ऐसी हजारों जगह पर पटकथा लेखन की आवश्यकता है और इसमें अनंत संभावनाएँ हैं। इसमें दाम है,नाम है और शोहरत भी। हिंदी पटकथा लेखन में मनोहर श्याम जोशी,जावेद अख्तर,के.ए.अब्बास,सलीम खान,गुलजार ,कमलेश्वर, राही मासूम रजा आदि साहित्यकारों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आवश्यकता है पटकथा लेखन कौशल में महारत हासिल करना। कई विश्वविद्यालय के जनसंचार या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के पाठ्यक्रमों में पटकथा लेखन का प्रश्नपत्र होता है।ऑनलाइन में भी पटकथा लेखन के कई कोर्सेस उपलब्ध हैं।

1.4.7 निवेदन -

निवेदन कला अंतर्मन की सृजनात्मक अभिव्यक्ति होती है। जिसके पास समय सूचकता हो,भाषिक कौशल हो,उच्चारण कला में पारंगत हो,आरोह-अवरोह की समझ हो,श्रोता की मानसिकता को समझने की कला हो,विनोदीवृत्ति हो,सार्थक प्रस्तुतीकरण हो तो वह उत्कृष्ट निवेदक बन सकता है। अच्छे निवेदन के लिए अभिनव कौशल और वेशभूषा का अपना अलग महत्व होता है। स्थान,समय और परिवेश के अनुसार भाषा का प्रयोग करना चाहिए।आवश्यकता के अनुसार मुहावरें,कहावतें तथा सूक्तियों का प्रयोग हो। शब्दों का सार्थक चयन करना और चयनित शब्दों का सार्थक क्रम में रखकर निश्चित आरोह-अवरोह के साथ उच्चारण करने से श्रोतागण निवेदक की ओर आकर्षित ही नहीं होतें बल्कि और आगे सुनने की उत्सुकता में रहते हैं।सभा,सम्मेलनों तथा अन्य कार्यक्रमों में निवेदकों की अधिक माँग है।वर्तमान समय में इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में निवेदकों को अच्छा पारिश्रमिक मिलता है।लेकिन अच्छे निवेदक नहीं मिलते हैं।15 अगस्त ,26 जनवरी जैसे कार्यक्रमों का संचालन कई उत्कृष्ट निवेदक करते हैं।आकाशवाणी सिलोन से प्रसारित कार्यक्रम ' बिनाका गीतमाला' का संचालन अमीन सयानी करते थे तो लोग उनकी आवाज सुनने के लिए उत्सुक रहते थें। इसमें अच्छा करियर उपलब्ध है।

1.4.8 सामग्री लेखन(Content Writing)-

विभिन्न माध्यमों के लिए सामग्री लेखन यह बहुत बडा रोजगार का अवसर उपलब्ध है। ब्लॉग लेखन,यू-ट्यूब लेखन,वेबसाईट लेखन तथा अन्य सोशल मीडिया के मार्केटिंग के लिए सामग्री लेखन समय की माँग है।आवश्यकता है कन्टेंट

राइटिंग में नवीनता,नुतनता,विश्वनियता,उपयोगिता ,स्पष्टता,संक्षिप्तता,सहजता,सारगर्भितता ,पठनीयता,भाषिक चुंबकीयता होनी चाहिए।सामग्री लेखन में विषय तथा भाषिक ज्ञान के साथ पाठक को आकर्षित करने की कला होनी चाहिए।कन्टेंट राइटिंग अपने प्रोडक्ट का ब्रांड बनाती है।पहचान बनाती है।व्यापार में वृद्धि होती है।इस लेखन के लिए समाज मनोविज्ञान का ज्ञान होना चाहिए। शोधपरकता और धाराप्रवाह भाषा होनी चाहिए। कन्टेंट लेखन से वस्तु की खरीदने की माँग बढती है।यदि कन्टेंट लेखन में ताकत है तो आप रैकिंग जल्दी पाते हो।विशेषता हिंदी में कन्टेंट लेखन की बहुत माँग है।आप घर बैठे ऑनलाईन कार्य कर सकते हो। कन्टेंट लेखन का कौशल सीखने के लिए कई ऑनलाइन पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं।

1.4.9 टूरिस्ट गाइड-

टूरिस्ट गाइड वह व्यक्ति होता है,जो किसी समूह या किसी व्यक्ति को दर्शनीय स्थलों का मौलिक मार्गदर्शन करता है। वह यात्रियों का पथदर्शक या यात्री सलाहकार होता है। टूरिस्ट गाइड बहुश्रुत और बहुभाषी होना चाहिए। किसी को भारत दर्शन करना है तो उसके टूरिष्ट गाइड को अच्छी हिंदी आनी ही चाहिए। बीना हिंदी के भारत की यात्रा करना असंभव-सा होगा।उत्तर भारत तो हिंदी बेल्ट है लेकिन दक्षिण भारत का रिक्शावाला अपने व्यवसाय हेतु आपसे तुरंत हिंदी में बोलना शुरु करता है।हिंदी भाषा पर जिसकी पकड है और पर्यटन की व्यावसायिक कला अवगत है तो वह टूरिस्ट गाइड बनकर अच्छा रोजगार पा सकता है। कई गाइड तो अपनी भाषा से इतना प्रभावित करते हैं कि अपनी जुबान पर्यटक के स्मृति का हिस्सा बन जाती है।सही टुरिस्ट गाइड स्वयं से अधिक यात्रियों का खयाल रखते हैं,जैसे कश्मीर ,लदाख,मानसरोवर की यात्रा के दौरान अनुभव आता है।क्योंकि उनकी दिनचर्या पर्यटकों पर ही निर्भर होती है। टूरिस्ट गाइड को इतिहास,संस्कृति,धर्म,लोकसंस्कृति ,पर्यटन,बाजार,यातायात की सुविधा,तकनीकी का सामान्य ज्ञान तथा वह अच्छा फोटोग्राफर भी हो।उसकी सहज,सरल,सटीक भाषा हो,कुशल अभिव्यक्ति हो,वाकचातुर्य हो,मर्यादाशील विनोदीवृति हो,जिससे यात्री अपने आप जुड सकते हैं।

यात्रा स्थल- भारत अत्यंत प्राचीन देश है,जिसे देखने दुनिया से कई सैलानी आते हैं।कई दिनों तक न मिलनेवाला आनंद एक यात्रा से मिलता है।कई किताबों से नहीं मिलता वह ज्ञान एक यात्रा से मिलता है। वैसे भारतीय धार्मिक स्थलों की अधिक यात्रा करते हैं, जैसे- बारा ज्योर्तिलिंग ,अष्टविनायक,कोणार्क,विरुपाक्ष मंदिर,सुवर्ण मंदिर,गोमतेश्वर,पलिताना,लुम्बिनी,बोधगया,सारनाथ ,कुशीनगर,जामा मस्जिद,अजमेर शरीफ,मक्का ,मदीना मस्जिद आदि पवित्र क्षेत्र भारत के हजारों किलें इतिहास के ग्वाह हैं,जिसे देखने कई यात्री आते हैं।कई विदेशी यात्री होते हैं,जो ऋषिकेश,अंजता-एलोरा की गुफाएँ तथा विश्वप्रसिद्ध ताजमहल देखने आते हैं, जिनकी ओर से टूरिस्ट गाइड को अधिक पैसे मिलते हैं। वर्तमान समय में भारत के लोग प्रकृति का सुंदर नजारा देखने जम्मू- कश्मीर,नैनीताल,ऊटी ,मैसूर,महाबळेश्वर जाते हैं। कई यात्री अभयारण्य देखने की बेहद रुचि रखते हैं,जैसे जिम कार्बेट,गीर ,काजीरंगा अभयारण्य।

टूरिस्ट गाइड के पाठ्यक्रम निम्नांकित जगह पर उपलब्ध हैं,जैसे -

1.इंडियन इन्स्टुट ऑफ टूरिझम ॲन्ड ट्र्व्हल मॅनेजमेन्ट ,दिल्ली

2.बनारस हिंदू विश्वविद्यालय,बनारस

3.वाय.एम.सी.ए.,नई दिल्ली

4.अलोन अकादमी देहरादून

5.इन्टरनॅशनल ट्र्व्हल ॲन्ड ट्यूरिझम अकादेमी,चंडीगड

टूरिस्ट गाइड के प्रकार-

1.नगर यात्रा गाइड,2. सांस्कृतिक विरासत यात्रा गाइड,3.पर्यावरणयात्रा गाइड,4.शैक्षिकयात्रा गाइड,5.ऐतिहासिक स्थलों का गाइड,6.एडवेंचर गाइड आदि।

1.4.10 हिंदी पत्रकारिता-

हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में रोजगार की अपार संभावनाएँ हैं। समाचारपत्र,रेडियो,दूरदर्शन, पत्रकारिता के साथ खोजी ,फोटो और वेब पत्रकारिता में भी अनंत अवसर उपलब्ध हैं।समाचारपत्र लोकतंत्र का चतुर्थ आधारस्तंभ है। पत्रकारिता में सामाजिक प्रतिबद्धता के साथ अर्थार्जन भी होता है। पत्रकारिता में संवाददाता,संपादक,प्रस्तुतकर्ता,कैमरामैन,ग्राफिक्स डिजानर,कंटेंट राइटर,जनसंपर्क अधिकारी आदि पदों पर अवसर मिलता है।भारत में सबसे अधिक समाचारपत्र प्रकाशित होते हैं तो वे हिंदी में। इसलिए रोजगार पाने की दृष्टि से हिंदी पत्रकारिता अच्छा विकल्प है।

हिंदी पत्रकारिता पाठ्यक्रम की अग्रणी संस्थाएँ निम्नांकित हैं-

1.दिल्ली पत्रकारिता स्कूल,दिल्ली विश्वविद्यालय,दिल्ली

2.भारतीय जनसंचार संस्थान,नई दिल्ली

3.ए.जे.के.जनसंचार शोध केंद्र,जामिया मिलिया इस्मालिया,नई दिल्ली

4.माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय,भोपाल

5.एशियन पत्रकारिता कॉलेज,चेनई

6.उस्मानिया विश्वविद्यालय,हैदराबाद

7.महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,वर्धा

8.सिम्बोयसिस जनसंचार संस्थान,पुणे

9.इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय,नई दिल्ली

1.4.1 1 विज्ञापन -

विज्ञापन एक कला है,जिसके द्वारा उपभोक्ता वस्तु खरीदने के लिए आकर्षित होता है और विक्रय में बढोतरी होती है। आज दुनिया में ऐसी कोई कंपनी नहीं होगी,जो अपने ब्रांड का विज्ञापन नहीं करती होगी।सुबह की चाय की चुस्की के साथ जो विज्ञापन शुरु होता है तो वह रात के गुडनाईट तक।चाहे वह माध्यम समाचारपत्र का हो,रेडियो का हो,दूरदर्शन का हो,समाज माध्यम का हो या होल्डिंग का हो लेकिन भारत में सबसे अधिक विज्ञापन हिंदी से ही होते हैं।इसलिए विज्ञापन में रोजगार की दृष्टि से नयी पीढी के लिए अनंत संभावनाएँ है और अनेक पद उपलब्ध होते हैं,जैसे-विज्ञापन प्रबंधक,बिक्री प्रबंधक,जनसंपर्क निदेशक,रचनात्मक निदेशक,विपणन संचार प्रबंधक,कॉपी राइटर,फोटोग्राफर,पटकथा लेखक आदि। आवश्यकता है रचनात्मक प्रतिभाशीलता,स्वतंत्र सोच,प्रभावी संचार कौशल,दूसरों को प्रभावित करने की अदभुत क्षमता और लीक से हटकर सोचने की कला।

"लीक-लीक गाडी चले,लीकहि चले कपूत।

लीक छाडि तीनों चलें,शायर सिंह सपूत...।"

प्रतिस्पर्धा के युग में अपना जो सर्वश्रेष्ठ देता है,उसका ही भविष्य बनता है।इस क्षेत्र में चुनौती भी है,रोमांच भी है,प्रसिद्धि भी है और पैसा भी।आवश्यकता है योग्यता और कौशल की।विज्ञापन का उपभोक्ता कौन है?किस वर्ग का है ? उसकी जनसंख्या कितनी है?उनकी रुचि क्या है?उनकी आदतें कौनसी हैं?उनकी महत्वाकांक्षाएँ कौनसी है?उनका शैक्षिक स्तर क्या है?विज्ञापन के लिए कंपनी का बजट कितना है? और विज्ञापन का माध्यम कौनसा है?इन सारी बातों को ध्यान में रखकर विज्ञापन बनाना

पडता है।पेप्सी ब्रान्ड के विज्ञापन का बजट तीनसौ करोड तो हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड का बजट प्रतिवर्ष छह सौ सत्तर करोड रु.का होता है। हाँ,इस बात खयाल रखा जाता है कि विज्ञापन आकर्षक,रोचक और प्रेरक हो।विज्ञापन में कल्पना,कल्पकता,कलात्मकता,काव्यात्मकता,गुणात्मकता,दृश्यात्मकता,विश्वनियता,सृजनात्मकता होनी चाहिए।रुप,रंग,गुण,संरचना ,भाषा,चित्र के माध्यम से वस्तु की सही जानकारी देनी चाहिए। आज भारत में आठसौ से अधिक मान्यताप्राप्त विज्ञापन एजेंसियाँ हैं।आपको विज्ञापन में स्वतंत्र रुप से करियर बनाना है तो जिसका पाठ्यक्रम कई निम्नांकित शैक्षिक संस्थाओं में उपलब्ध है,जैसे-

1.भारतीय जनसंचार संस्थान,दिल्ली

2.कोलकाता मीडिया संस्थान, कोलकाता

3.डब्लू.एल.सी. कॉलेज ऑफ इंडिया नोएडा,वाराणसी,जम्मू,लखनऊ

4.के.सी. कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज,मुंबई

5.साधना अकादमी फॉर मीडिया स्टडीज,नोएडा,मुंबई,अहमदाबाद

6.एम.आई.सी.ए. मुद्रा संचार हिसार

7.सिम्बायोसिस इंस्टीट्यूट ऑफ मास कम्युनिकेशन,पुणे

8.जेवियर्स इंस्टीट्यूट ऑफ मीडिया एंड कम्युनिकेशन,पुणे

2.1 यूनिकोड तथा हिंदी टंकण

2.1.1 यूनिकोड :-

2.1.1.1 प्रास्ताविक :- यूनिकोड यह संगणक की मानक प्रणाली है। यूनिकोड प्रत्येक अक्षर के लिए विशेष नम्बर प्रदान करता है। दुनिया की सभी भाषाओं के अक्षरों को इनकोडिंग करने का विशाल कार्य यूनिकोड कंसोर्शियम नामक संस्था ने किया है, जिस संस्था की स्थापना 3 जनवरी,1991 में अमरिका के कॉलिफोर्निया में हुई। इसका विस्तारित नाम यूनिवर्सल एनकोडिंग कंसोर्शियम है। यूनिवर्सल शब्द से यूनि और एनकोडिंग शब्द से कोड शब्दांश से यूनिकोड शब्द बना है । यूनिकोड सभी के लिए नि:शुल्क है। इस संस्था का वितपोषण सभी सदस्यों के सहयोग चलता है। इसके निर्माण में ऐपल और झेरॉक्स जैसी कंपनियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा लेकिन जिसकी खोज डॉ. मार्क डेव्हीस ने की है । वे ही यूनिकोड कंसोर्शियम के अध्यक्ष तथा यूनिकोड के जनक हैं। वे गूगल कंपनी के अंतर्गत 2006 से इसी विषय पर अनुसंधान कर रहे हैं। यूनिकोड की प्रथम आवृत्ति अक्तूबर,1991 में आयी जिसमें चौबीस लिपियाँ और 7128 अक्षर थे।उनमें नौं लिपियाँ भारतीय थी,जिनमें देवनागरी,तमिल,तेलुगु,उडिया,मलयालम ,गुजराती,गुरुमुखी और कन्नड थीं। सितम्बर,2023 की 15.1 नामक संशोधित आवृति में दुनिया की 161 लिपियों को तथा 149813 अक्षरों का एनकोडिंग किया है।

2.1.1.2 यूनिकोड की क्रांति :-

ऐपल,गूगल,मायक्रोसॉफ्ट,आय.बी.एम.,एच.पी.,औरेकल यूनिसस जैसी कंपनियाँ दुनिया के बाजार में एक-दूसरे स्पर्धक हैं।लेकिन सभी कंपनियों ने मिलकर वैश्विक स्तर का व्यापार करने हेतु तथा विश्व के हर भाषिक व्यक्ति को अपने साथ जोडने हेतु सभी ने यूनिकोड को स्वीकृति दी। भारत सरकार ने सन 2000 में यूनिकोड का सदस्यत्व स्वीकारा।आज गूगल सर्च इंजिन,जीमेल,ब्लॉग पोस्ट,ट्यूटर,फेसबुक,यूट्यूब ,इन्स्टॉग्राम जैसी सभी समाजमाध्यमों ने यूनिकोड को स्वीकार ने से प्रत्येक व्यक्ति अपनी मातृभाषा में कार्य कर रहा है। प्रारंभिक दौर में संगणक तथा गूगल की भाषा मात्र अँग्रेजी थी। यूनिकोड का आविष्कार होने से पहले अँग्रेजी के अक्षर संकेत लिपि में एनकोडिंग होते थे,जो पर्याप्त नहीं थें,जो संकेत परस्पर विरोधी होते थें । अडोबी जैसी कंपनियों से 1985 के दौरान फ़ॉन्ट खरीदने पढते थे। एक संगणक में टंकित लेख दूसरे संगणक में खोला नहीं जा सकता है। खोलने के बाद वे अक्षर जंक या गारबेज होते थे। क्योंकि यदि मेरे पी.सी.में कृतिदेव फ़ॉन्ट में टंकण किया है और दूसरे के पी.सी. में श्रीलिपि है तो वहाँ यह फाईल ओपन नहीं होती थी ।लेकिन यूनिकोड के फ़ॉन्टों ने क्रांति की है क्योंकि यूनिकोड का कोई भी फ़ॉन्ट किसी भी नये पी.सी. में ओपन होता है।यूनिकोड की सौगात न मिलती तो हिंदी मात्र किताबों की दुनिया तक सीमित रहती।हिंदी के डिजीटलीकरण में यूनिकोड की महत्वपूर्ण भूमिका है। देवनागरी लिपि में हिंदी,मराठी,नेपाली भाषाएँ समाहित हैं। हिंदी के विभिन्न अक्षरों के लिए जो कोड निश्चित किये हैं वे 0900 से 097F तक । जैसे 'अ' के लिए=0905,'क' के लिए =0915 है। वैसे यूनिकोड कोई फ़ॉन्ट नहीं है । उसका अपना फ़ॉन्ट समूह है,उनके फ़ॉन्ट हैं;जैसे-Mangal,Aprajita,Arial Unicode MS,Kokila,Utsaah आदि। वैसे कृतिदेव भी कोई फ़ॉन्ट नहीं है बल्कि वह समूह है।उनके फ़ॉन्ट हैं Kruti Dev010 से Kruti Dev 740 तक। फ़ॉन्ट का तात्पर्य है एक रुप या आकारवाला अक्षरसमूह।

2.1.1.3 मंगल फ़ॉन्ट और समाज माध्यम :-

यूनिकोड का सबसे प्रसिद्ध और प्रचलित फ़ॉन्ट मंगल है।वह संगणक,मोबाईल,जीमेल,यूट्यूब सभी जगह खुलता है। देवनागरी लिपि हेतु और मायक्रोसॉफ्ट के आग्रह से मंगल फ़ॉन्ट रा.कृ.जोशी जी ने बनाया।वैसे वे नैशनल सेंटर फॉर सॉफ्टवेअर टेक्नॉलॉजी में कार्यरत थे।उन्होंने अपने पत्नी के नाम के आधार पर फ़ॉन्ट का नामकरण मंगल कर दिया। वर्तमान समय में फ़ॉन्ट मंगल का सबसे अधिक प्रयोग समाचार पत्रों में हो रहा है। समाचारपत्र को भेजनेवाली खबरें लोग अपने मोबाइल से ही भेज रहे हैं। प्रस्तुत फ़ॉन्ट का टंकण दुनिया के किसी

भी कंप्यूटर में ओपन होता है। आज सैंकडों हिंदी की ऑनलाइन पत्रिकाएँ हैं।वे ऑनलाइन पत्रिकाएँ कोई अमरिका से तो कोई न्यूज़ीलैंड से। यूनिकोड के कारण अमरिका से प्रकाशित होने वाली पत्रिका हम तुरंत ही पढ सकते हैं,जैसे-अनुभूति,अभिव्यक्ति,गर्भनाल, सहचर,सृजनगाथा,ई-विश्वा ,हिंदी चेतना। यूनिकोड के मंगल फ़ॉन्ट के कारण कलम,कागज और किताब तक सीमित हिंदी देश-विदेश की स्क्रिन पर चली गई है। समाचारपत्र के साथ यूटयूब,फेसबुक, ब्लॉग लेखन के लिए मंगल फ़ॉन्ट का प्रयोग किया जाता है।दुनिया में सबसे अधिक ब्लॉग लेखन जापान में होता है।वहॉ हर तिसरा आदमी ब्लॉग लेखन करता है।हिंदी में ब्लॉग लेखन 21 अप्रैल,2003 में शुरु हुआ।हिंदी का पहला ब्लॉग अलोककुमार नौ-दो ग्यारह है। आज हिंदी में हजारों ब्लॉग लिखे जा रहे हैं तो वे मात्र यूनिकोड के मंगल फ़ॉन्ट के कारण । मंगल फ़ॉन्ट windows-10 और windows - 11 में इनबिल्ट उपलब्ध है। लेकिन इसके पूर्व के ओ.एस. windows95,98,ME में यूनिकोड नहीं चलता क्योंकि उसके लिए कंप्यूटर 32 Bit की क्षमता का होना चाहिए।यदि आपके पास windows-7-8 &9 है तो उसमें भी डाउनलोड कर इन्स्टॉल कर सकते हो।

2.1.2 हिंदी टंकण का सामान्य परिचय और उसकी विशेषताएँ :-

टंकण का अर्थ है कुंजीपटल के बटनों पर अंकित वर्णों के स्पर्श से मुद्रित शब्द ।सन 1714 ई.में इंग्लैंड के इंजीनियर हेनरी मिल ने टंकण यंत्र बनाना प्रारंभ किया लेकिन अमरिका के डब्लू ए.बर्ट ने 1829 में बर्ट टाइपराइटर निर्माण किया। उन टाइप कुंजियों को जेवियर ने अर्ध्द चंद्रकार टोकरी जैसा रुप दिया तो 1836 में क्रिस्टोफर शोल्सन ने टंकण यंत्र को व्यावहारिक मॉडल बनाया जिस पर इँग्रजी कैपिटल अक्षर और अंक आए।अमरिका के रेमिंग्टन कंपनी ने उसमें और अधिक परिवर्तन किया और उस कंपनी ने 1890 में भारत लाया। रेमिंग्टन कंपनी और भारत सरकार के सहयोग से देवनागरी लिपि में 1924 में टंकण यंत्र बना।टंकण यंत्र में सुधार हेतु डॉ.राजेंद्र प्रसाद के मार्गदर्शन में हिंदी टाइपराइटिंग स्टेंडर्डाजेशन समिति ,1962 में काकासाहेब कालेलकर और 1976 गृहमंत्रालय राजभाषा विभाग के सहयोग बहुत अच्छा कार्य हुआ।कुँजी पटल का सबसे अच्छा रुप 1976में रेमिंग्टन कंपनी के सहयोग से बना। कल के टाइपराइटर की जगह आज के संगणक ने ली है। आज जो संगणक पर रेमिंग्टन पद्धति से टाइप होता है वह कल के टाइपराइटर पद्धति का प्रतिबिंब है। वैसे वर्तमान समय में चार पद्धति से टंकण होता है;जैसे- (1)रेमिंग्टन टंकण शैली,(2)इन-स्क्रिप्ट टंकण शैली, (3)फोनेटिक इंग्लिश आधारित टंकण शैली, और (4)वॉइस टाइपिंग।इन पद्धतियों का विवरण निम्नांकित है-

(1) **रेमिंग्टन टंकण शैली:- इस टंकण शैली की अपनी पद्धति है| उसका अपना की-बोर्ड लेआउट है। रेमिंग्टन टच टाइपिंग प्रणाली है। सबसे पहले संगणक में इसी पद्धति का प्रयोग हुआ । पुराने कंप्यूटर में रेमिंग्टन पद्धत टाइपरायटर से ली है,जो नये टंकणकर्ता के लिए यह पद्धत कठीन लगती है लेकिन जो टाइपराइटर या पुराने कंप्यूटर पर कार्य करते हैं उनके लिए रेमिंग्टन पद्धत आसान लगती है। क्योंकि उन्हें इस पद्धत पर कार्य करने की आदत है। इसमें एखाद संयुक्त व्यंजन टंकण करना है तो दो या तीन कुंजी का प्रयोग करना पडता है। कृतिदेव जैसा फ़ॉन्ट रेमिंग्टन लेआउट में उपलब्ध है। 70-80 के दशक में संगणक 8 बिट का हुआ करता था जिसमें कृतिदेव चलता है क्योंकि कृतिदेव -8 बिट का फ़ॉन्ट है। पुराने 8 बिट के कंप्यूटर में नया इन-स्क्रिप्ट नहीं चलता है। रेमिंग्टन में टाइप करते समय जैसा पाठ दिखाई देता है, उसी क्रम में टंकणकर्ता कुँजीपटल से टाइप करता है;जैसे-**

स + ि +व + त + ा = सविता

क + ा + म + र् = कर्म

ब + ा + े + ड + र् = बोर्ड

(2) इन-स्क्रिप्ट टंकण शैली:-जैसा पाठ दिखता है वैसा ही रेमिंग्टन में टाइप होता है लेकिन इन-स्क्रिप्ट में जिस तरह का उच्चारण होता है उसी क्रम में टाइप होता है;जैसे-

स + व + ि + त + ा = सविता

क + ा + र् + म = कर्म

ब + ो + र् + ड = बोर्ड

यदि नये व्यक्ति को टंकण सीखना है तो इन-स्क्रिप्ट सबसे आसान की-बोर्ड लेआउट है।इसमें एक वर्ण के लिए एक ही कुँजी होने से आसान होता है तथा गलतियाँ भी कम होती है;जैसे 'क्ष' (Numeric key-7) 'त्र' (Numeric key-6) 'ज्ञ' (Numeric key-5) 'श्र' (Numeric key-9)के संदर्भ में । साथ ही इस की-बोर्ड में दूसरी एक महत्वपूर्ण सुविधा यह है कि अल्पप्राण व्यंजन की जो कुँजी है वही कुँजी शिफ्ट के साथ स्पर्श करने पर महाप्राण व्यंजन बन जाता है,जैसे -K कुँजी(Key) से 'क' अल्पप्राण व्यंजन टंकण होता है और शिफ्ट के साथ K कुँजी दबायेंगे तो 'ख' महाप्राण व्यंजन बनता है। इन-स्क्रिट के की-बोर्ड के दाई बाजू में अधिकत्तर कुँजियाँ व्यंजन (क,ख)की हैं तो बाएँ बाजू की अधिकत्तर कुँजियाँ स्वर (अ,आ)की ।यह फ़ॉन्ट कहीं पर खुलता है लेकिन रेमिंग्टन के कृतिदेव फ़ॉन्ट में टंकण की हुई सामग्री मात्र उसी कंप्यूटर में खुलती है जिसमें कृतिदेव फ़ॉन्ट उपलब्ध है। वह अन्य कंप्यूटर में नहीं खुलता । वह आउटडेटेड फ़ॉन्ट है।अब उसका प्रयोग मात्र प्रकाशन संस्थाओं में हो रहा है क्योंकि अब तक उसी में उन्होंने कार्य किया है। उन्हें आदत-सी बन गई है। विंडोज-10 और विंडोज-11 में इन-स्क्रिट अंतर्निर्मित (Inbuilt) है। केवल हिंदी भाषा को जोडना है।साथ ही विंडोज -7,8,9 के लिए http:/WWW.bhashaindia.com वेबसाइट से Indic Language Input Tool डॉउनलोड कर और इन्स्टाल करें। सभी भारतीय भाषा में इन-स्क्रिप्ट उपलब्ध है।भारत सरकार ने 1986 में इन-स्क्रिट को स्वीकारा है। इतना ही नहीं तो आप देवनागरी लिपि में टंकण करना जानते हैं तो कन्नड भी लिख सकते हो। कंप्यूटर में ही नहीं मोबाइल में भी मंगल फ़ॉन्ट में टंकण होता है। प्रस्तुत किताब मैंने मोबाईल पर ही टाइप की है।

(3) फोनेटिक की-बोर्ड:- हिंदी पाठ को रोमन लिपि में टाइप करना और स्क्रिन पर हिंदी में शब्द के दो-तीन रुप आते हैं,उनमें जो सही है उसे चयन करना;जैसे - 'श्याम ' लिखना है तो कुँजीपटल पर Shayam टंकण किया जाता है। अर्थात जैसे बोला जाता वैसा ही अँग्रेजी में टाइप किया जाता है। इंटरनेट पर कई लोग इस टंकणविधि को अपनाते हैं। हिंदी की यह टाइपिंग ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों रुपों में उपलब्ध है। ऑनलाइन में टंकण को कॉपी पेस्ट करना पडता है।इसकी गति धीमी होती है। ऑफलाइन के लिए इस टूल्स को डाउनलोड करना पडता है तब विंडोज के वर्डपैड,गूगल टॉक आदि में हिंदी लिखा जाता है।इस टूल्स को फोनेटिक(Input Method Editor) कहा जाता है। हिंदी में लिखना है तो रोमन वर्ण के कुंजियों का टंकण क्रम निम्नांकित है –

s + a + v + i + t + a + a = सविता

k + a + r + m = कर्म

b + o + r + d = बोर्ड

(4) गूगल वॉइस टाइपिंग:- हिंदी में वॉइस टंकण करना है तो मोबाइल ,गूगल डॉक्स और एम.एस.वर्ल्ड में सुविधा उपलब्ध है।वॉइस टाइप के लिए इंटरनेट की आवश्यकता होती है।यह सुविधा पुराने लॅपटॉप या कंप्यूटर में नहीं है। यह सुविधा विंडोज-10 और विंडोज-11 में उपलब्ध है। विंडोज- 10 में डॉक्स द्वारा बढिया ढंग से टंकण होता है।उसके लिए गूगल डॉक्स की हिंदी भाषा और माईक जारी करना आवश्यक है। इंटरनेट की स्पीड जितनी अधिक उतनी ही अधिक गति वॉइस टायपिंग को होती है। गूगल डॉक्स में बोलकर जो टंकण होता है वहीं पर कई भाषाओं में तुरंत अनुवाद कराने की सुविधा भी उपलब्ध है। डॉक्स की यह सुविधा बहुत अच्छी और आसान है। एम.एस.वर्ल्ड में भी वॉइस टायपिंग की सुविधा उपलब्ध हुई है।लेकिन वह कठीन है । वॉइस टंकण का सबसे सरल और आसान माध्यम मोबाइल है।आज सबसे अधिक लोग मोबाइल में वॉइस टाइपिंग कर रहे हैं।

यूनिकोड टंकण की विशेषताएँ :-

(1) एक कैरेक्टर के लिए एक कोड है।(2)दुनिया के सभी लिपियों के कोड अलग-अलग हैं।(3) दुनिया के सभी 16 बिट और 32 बिट कंप्यूटर पर यूनिकोड टंकण की सुविधा उपलब्ध है।(4) दुनिया के किसी भी कंप्यूटर पर टंकण की गई सामग्री दुनिया में कहीं पर भी खुलती है।कृतिदेव जैसी समस्या निर्माण नहीं होती है। (5)हिंदी में सबसे अधिक सरल,सहज टंकण यूनिकोड में ही संभव है। (6) कुँजीपटल में वर्ण का क्रम अत्यंत सूसुत्रता के साथ है, जिससे गलतियाँ कम होती है।(7) जो अल्पप्राण व्यंजन की कुँजी है वही कुँजी शिफ्ट के साथ स्पर्श करने पर महाप्राण व्यंजन बन जाता है,जैसे -K कुँजी(Key) से 'क' अल्पप्राण व्यंजन टंकण होता है और शिफ्ट के साथ K कुँजी दबायेंगे तो 'ख' महाप्राण व्यंजन आता है। (8) इन-स्क्रिट के की -बोर्ड के दाई बाजू में अधिकत्तर कुँजियाँ व्यंजन (क,ख)की हैं तो बाएँ बाजू में अधिकत्तर कुँजियाँ स्वर (अ,आ)की हैं । (9)यूनिकोड में हिंदी टंकण करने के लिए मंगल, कोकिला,अपराजिता आदि फ़ॉन्ट उपलब्ध हैं। लेकिन सबसे अधिक टंकण मंगल में होता है(10)यूनिकोड से ही हिंदी दुनिया से जुडी और दुनिया हमसे जुडी,जिससे हिंदी सही मायने में वैश्विक बनी।

2.2.1 पृष्ठ संयोजन तथा प्रूफ पठन:-

2.2.1.1 पृष्ठ संयोजन:

पृष्ठ संयोजन को अँग्रेजी में page setup कहते हैं। माइक्रोसॉफ्ट एम.एस.वर्ल्ड में टंकण किए हुए दस्तावेज को प्रिंटिंग के अनुसार नियंत्रित करने का नाम पृष्ठ संयोजन है। जब संगणक पर एम.एस.वर्ल्ड ओपन किया जाता है तब पेज लेआउट (Page Layout) दिखाई देता है।पेज लेआउट क्लिक करने पर उसके अंतर्गत मार्जिन,ओरिएंटेशन,साईज,कालम,ब्रेक,लाईन नंबर, हायफनेशन आदि ऑयकॉन होते हैं।उसका विवरण निम्नांकित है-

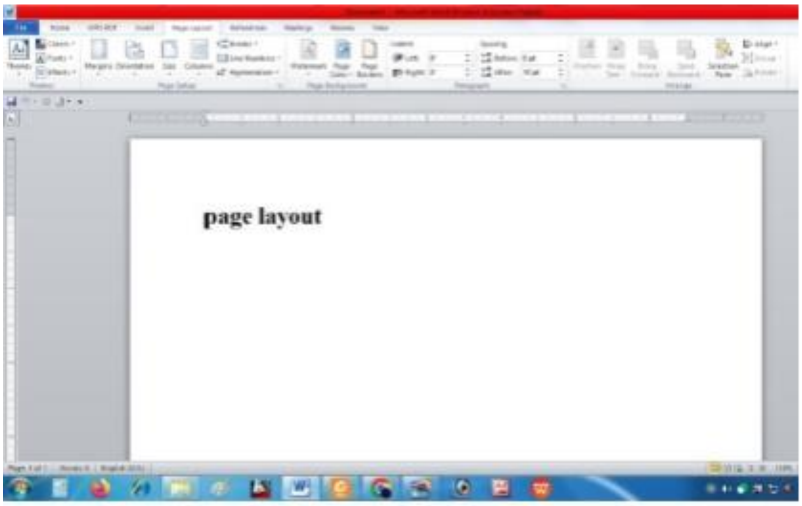

(1) मार्जिन: - **मार्जिन को हिंदी में हाशिया,सीमा या पन्ने के चारों ओर की खुली जगह को कहते हैं। शब्द-संसाधक में चार मार्जिन होते हैं,जैसे-Top,Bottom,Left और Right ।अर्थात नीचे ,उपर,दाएँ और बाएँ। इसकी गणना इंचों में गीनी जाती है। आप जिस ओर चाहे उस ओर उतनी मार्जिन ले सकते हो। A4 साईज के अनुसार चारों ओर से 1.25 जगह छोडना आइडियल होता है। A4 साईज डिफॉल्ट रुप में उपलब्ध होती ही है।अपनी आवश्यकता और पन्ने के आकार के अनुसार उसे सेटअप करें।निम्नांकित चित्र में देखिए-**

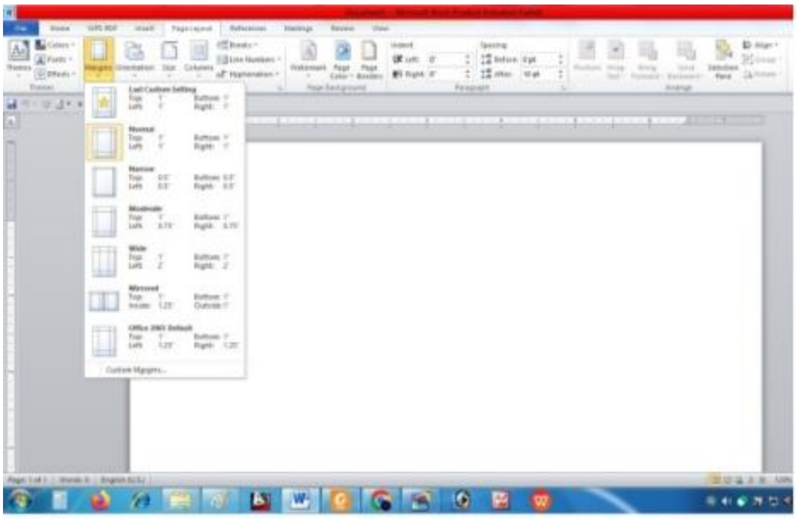

(2)ओरिएंटेशन:- इसके दो प्रकार होते हैं,जैसे-Portrait अर्थात खडा पृष्ठ और Landscape अर्थात आडा पृष्ठ।अधिकत्तर टंकण खडे पन्ने पर ही होता है लेकिन आवश्यकता के अनुसार उस पृष्ठ को हम आडा भी कर सकते हैं।निम्नांकित चित्र में देखिए-

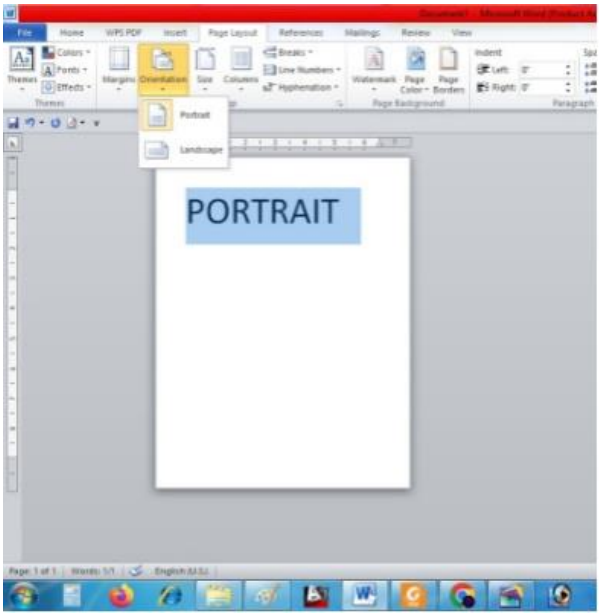

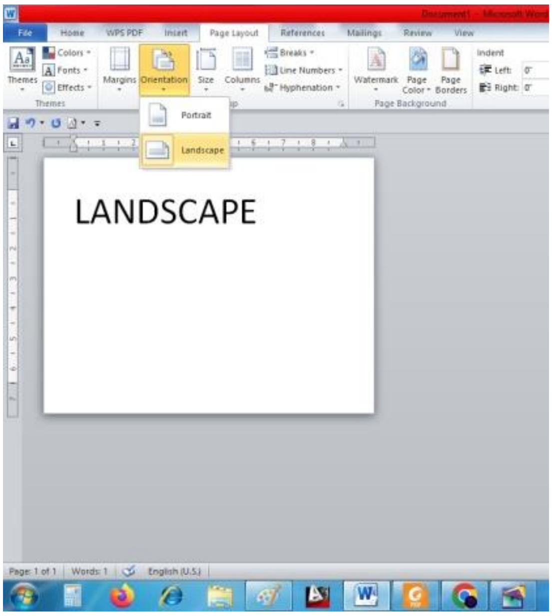

(3)साईज:- लेआउट के अंतर्गत जिस पृष्ठ पर टंकण किया जाता है और अपने अनुसार प्रिंट हेतु पृष्ठ का आकार निश्चित किया जाता है ,उसे साईज कहा जाता है। पृष्ठ साईज कई प्रकार के होते हैं,जैसे-Letter(8.5x11),Legal(8.5x14),Exective(7.25x10.5),A4(8.27x11.69),A5(5.83x8.27),B5-JIS(7.17x10.12),Envelope#10(4.12x9.5)आदि। लेकिन सबसे अधिक A4 साईज का ही प्रयोग किया जाता है। निम्नांकित चित्र में देखिए-

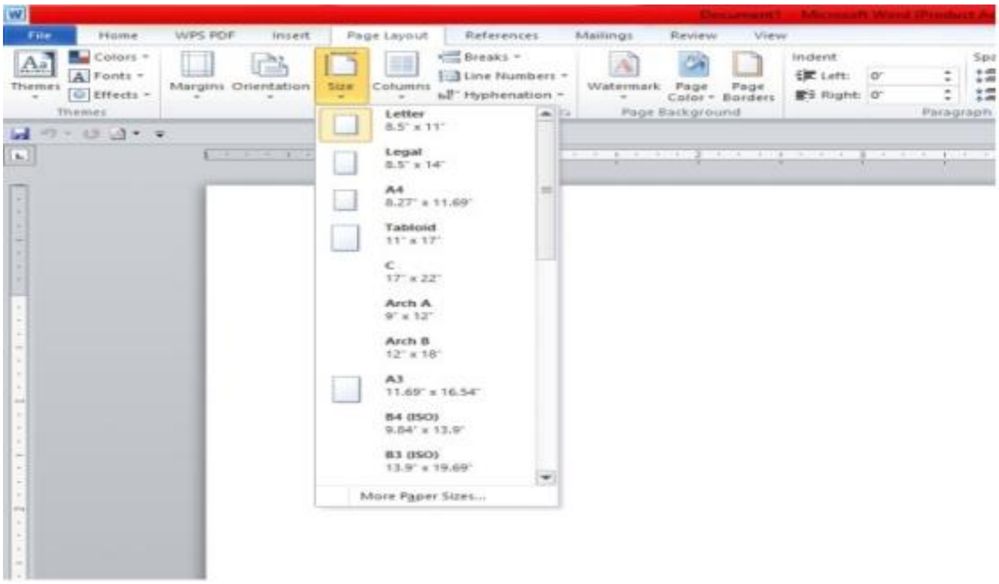

(4)कॉलम:-एक पन्ने पर टंकण की सामग्री दो कॉलम में या तेरह कॉलम तक विभाजित हो सकती है।अपनी आवश्यकता के अनुसार सामग्री को दो-तीन कॉलम में विभाजित कर सकते हैं। इसका अधिकत्तर प्रयोग समाचारपत्र में होता है।समाचारपत्र की सभी खबरें कॉलम में ही होती हैं। निम्नांकित चित्र में देखिए-

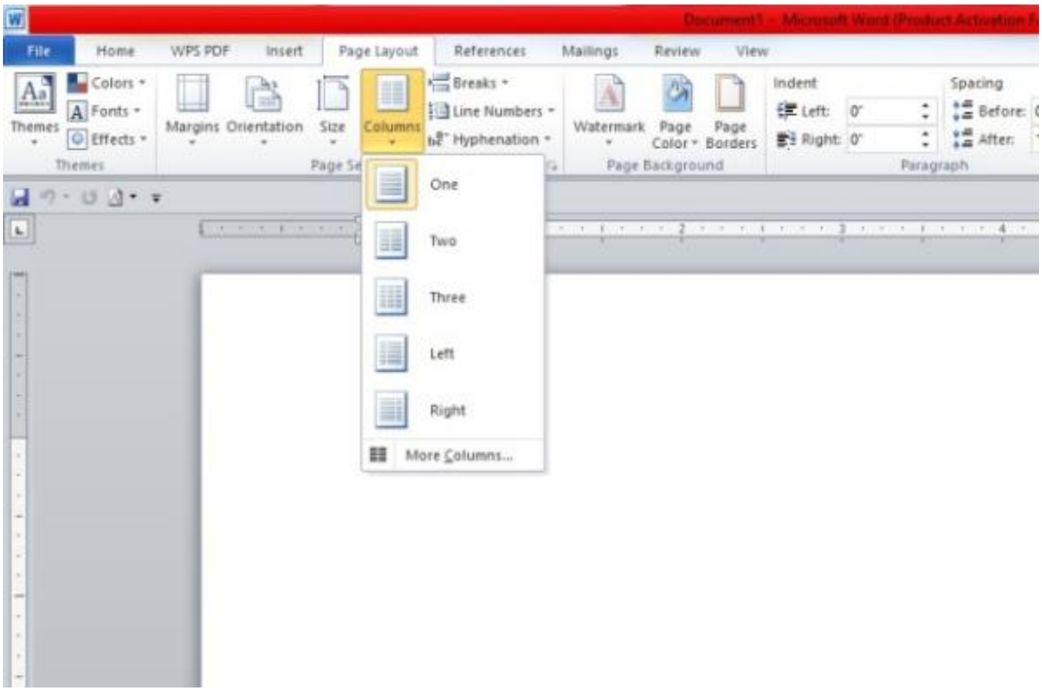

(5)ब्रेक:- पेज ब्रेक का तात्पर्य पन्ने का निचला हिस्सा अगले पन्ने पर ले जाना है तो आप उतने भाग को क्लिक कर पेज ब्रेक करेंगे तो वह सामग्री अगले पृष्ठ पर चली जाती है। निम्नांकित चित्र में देखिए-

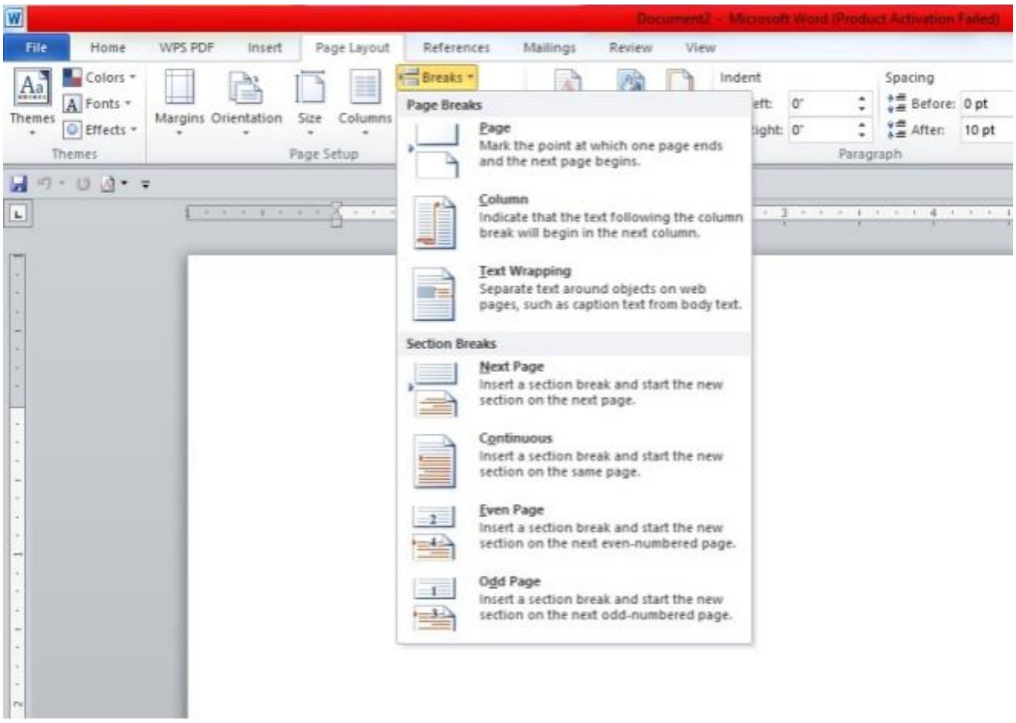

(6)लाइन नंबर:- लाइन नंबर में None, Continuous, Restart Each Page, Restart Each Section, Suppress for Current Paragraph आदि उपघटक हैं। जिन मुद्दों को लाइन के क्रम अनुसार क्रमांक देने हैं तो continuous क्लिक करें । साथ ही प्रत्येक पन्नों पर समान क्रमांक देने हेतु Restart Each Page को क्लिक करें। निम्नांकित चित्र में देखिए-

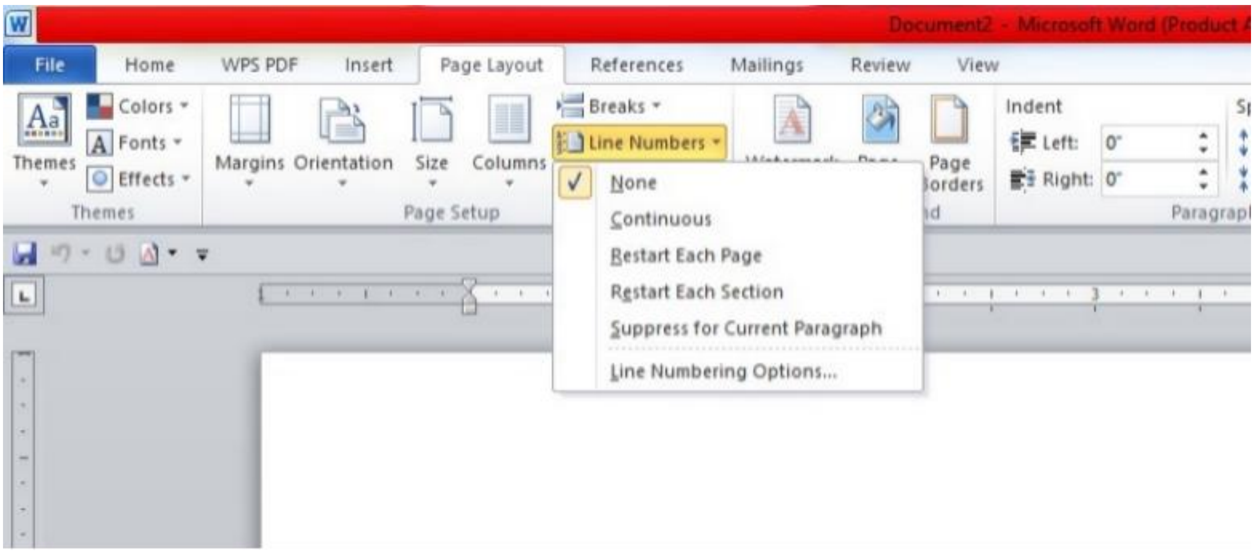

(7)हायफनेशन:- एम.एस.वर्ल्ड में सामग्री टंकण करने पर कई शब्दों का आधा हिस्सा उपर की लाईन में और कट होकर आधा हिस्सा नीचे लाईन में आता है। दोनों भाग एक ही शब्द के हैं ,उसे निर्देशित करने के लिए हाइफन(-) का चिह्न होता है। उसमें तीन प्रकार होते हैं,जैसे- नन,ॲटोमॅटिक ,मैन्युअली। नन को चिह्नित किया तो पूर्ववत रहता है। ॲटोमॅटिक किया ॲटोमॅटिक्ली हाइफन चिह्न आता है और मैन्युअली में उन्हीं को चिन्हित होता है ,जिसको आपने हाईफन दे कर चिह्नित किया है। निम्नांकित चित्र में देखिए-

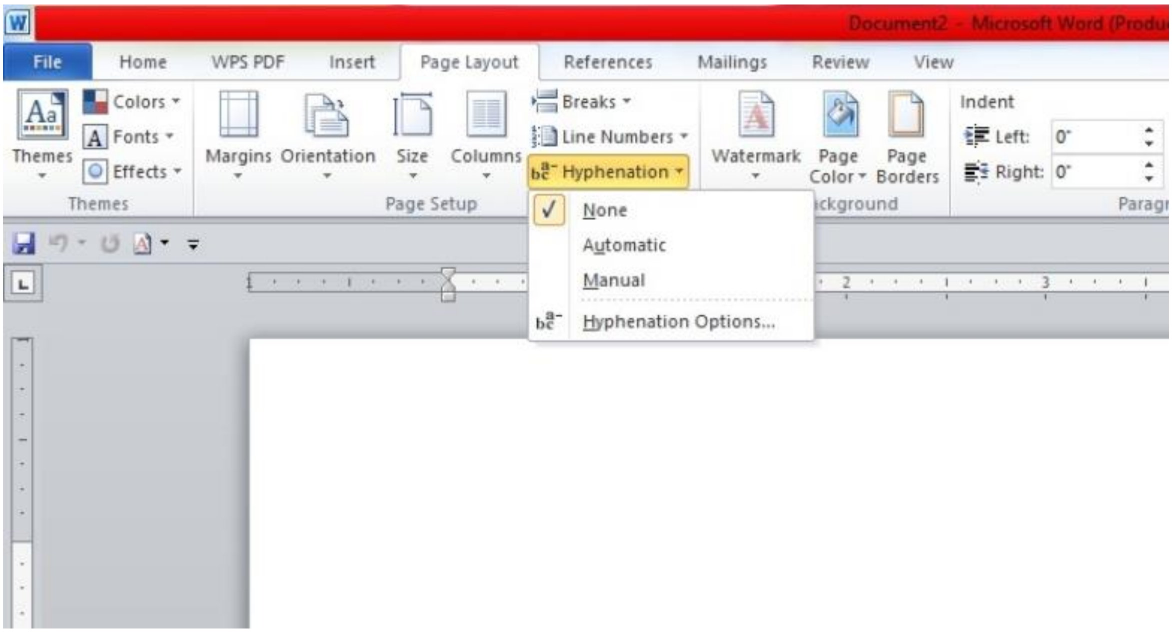

2.2.1.2 प्रूफ पठन: -

मुद्रित लेखन की अशुद्धियों को खोजकर लेखन शुद्ध करने की प्रक्रिया को प्रूफ पठन,प्रूफ शोधन या प्रूफ रीडिंग कहते हैं। प्रूफ पठन प्रकाशन प्रक्रिया का महत्वपूर्ण चरण। कोई ग्रंथ बाहर से कितनाही सुंदर हो या कोई समाचारपत्र कितनाही रंगीन हो यदि उसके अंतरंग में शब्द, वाक्य,विराम चिह्न और व्याकरण की गलतियाँ है तो सुंदर रचना असुंदरता में तब्दिल होती है।पहले टंकण ,प्रूफ पठन अधिक कठीन था लेकिन संगणक और यूनिकोड ने प्रकाशन क्षेत्र में क्रांति कर दी है। वैसे प्रूफ पठन अत्यंत जवाबदेही का काम है लेकिन रुचि होने पर यह बहुत आसान ,कुशलयुक्त और आनंददायी कार्य है। इससे रोजगार मिलता है। ग्रंथ प्रकाशन संस्था,समाचारपत्र,पत्रिकाएँ,सरकारी ,सहकारी,और व्यावसायिक क्षेत्र के साथ कई नवीनतम समाज माध्यमों जैसे अनेक क्षेत्रों में रोजगार के कई अवसर हैं लेकिन आवश्यकता है प्रूफ पठन कौशल की। उस कौशल के लिए व्याकरण,वर्तनी ,शुद्ध लेखन के नियम तथा प्रूफ पठन के चिह्नों का ज्ञान होना चाहिए। आप जितना रियाज करेंगे उतना ही यह कौशल विकसित होता है।

प्रूफ पठन के तीन स्तर:-

प्रथम प्रूफ पठन:- इसमें मूलप्रत का कोई शब्द,वाक्य या परिच्छेद,शीर्षक छूट गया है क्या ?उसे गंभिरता से देखकर दुरुस्ती करने हेतु पृष्ठ के दाई-बाई की खुली जगह पर प्रूफ पठन के चिह्नों द्वारा निर्देशित करें। साथ ही शुद्ध हिंदी की नियमावली के अनुसार पाठ का प्रूफ पठन करें। वचन,लिंग,क्रिया, वाक्यरचना आदि व्याकरणिक नियमों के अनुसार करेक्शन करें। ह्स्व ,दीर्घ,अनुस्वार,विरामचिह्नों की गलतियाँ दुरुस्त करना चाहिए अन्यथा अर्थ का अनर्थ हो जाता है।

दूसरा प्रूफ पठन:- दूसरे प्रूफ पठन में यह देखना जरुरी है कि प्रथम प्रूफ पठन में जिन गलतियों को चिन्हांकित किया था क्या वह दुरुस्त हुई है,उसे पहले देखना चाहिए। इस प्रूफ पठन में ग्रंथ के अध्याय का शीर्षक,उपशीर्षक,संदर्भ,संदर्भ पृष्ठ क्रमांक को बारिकाईसे देखकर गलतियों को चिह्नों द्वारा निर्देशित करना चाहिए।

तीसरा प्रूफ पठन:- इस प्रूफ पठन में यह देखना चाहिए कि दूसरे प्रूफ का करेक्शन हुआ है या नहीं। किसी शब्द,विचार या परिच्छेद के बारे में विवाद होने का संदेह है तो प्रकाशक और लेखक से विचार विमर्श कर निर्णय लें।

प्रूफ पठन के नियम:-

(1) टंकण किए हुए पृष्ठ के दोनों ओर एक-एक इंच की खुली जगह हो।जहाँ अशुद्धियों को खोज कर शुद्धि करने के संदर्भ में प्रूफ पठन के चिह्नों के द्वारा मुद्रक के लिए निर्देशित करना चाहिए।

2)कंपोज किए पृष्ठ सामग्री के प्रत्येक आधे पंक्ति का करेक्शन दायी ओर और आगे के आधी पंक्ति का करेक्शन बायी ओर करना चाहिए।

3) सभी संकेत चिह्न स्पष्ट लिखें,क्रमबद्ध हो ,संकेत चिह्न के पहले तिरछी लकीर लगाइए, जगह के अभाव में अन्य जगह (*) यह चिह्न दे,जो छुटा हुआ शब्द या वाक्य लिखिए ,जिसे मुद्रक समझेगा।

(4) अध्याय का शीर्षक,उपशीर्षक,अंतर्गत मुद्दे आदि के फ़ॉन्ट कितने आकार का हो , बोल्ड हो या सायलेंट हो,उसका भी जिक्र करना चाहिए।

5) भारत सरकार के केंद्रीय हिंदी निदेशालय की अद्यतन 'देवनागरी लिपि एवं हिंदी वर्तनी का मानकीकरण' नामक नियमावली का अनुपालन करना चाहिए।संशोधित नई नियमावली वर्ष 2024 में प्रकाशित हुई है।

प्रूफ पठन की कुछ सूचनाएँ:-

1)ग्रंथ के अनुक्रमणिका में दिए अध्याय शीर्षक के सामने उल्लेखित पृष्ठ क्रमांक और प्रस्तुत ग्रंथ में उल्लेखित पृष्ठ क्रमांक में समानता हो।

2)ग्रंथ लेखन में उद्‌धृत संदर्भ का पृष्ठ क्रमांक और अध्याय के अंत में या पादटिप्पणी (Foot Note) में दिए हुए संदर्भ का पृष्ठ क्रमांक समान हो।

3)सभी अध्यायों के उपमुद्दों का क्रम सही हो।

4) हर परिच्छेद के आरंभ में दो स्पेस दीजिए।

5)सही फ़ॉन्ट और फ़ॉन्ट का आकार सही हो।

6)प्रूफ शोधन के लिए पेन्शील का प्रयोग नहीं करना चाहिए।उससे कई बार करेक्शन अस्पष्ट रह जाते हैं।करेक्शन के लिए लाल,नीली, हरे बॉल पेन का प्रयोग करें।

7) आज कल कई लोग छोटे-मोटे करेक्शन संगणक पर ही कर रहे हैं।उसके लिए आवश्यक है कि धारिका खुली (ओपन फाईल-Word File) हो न कि बंद धारिका (पीडीएफ)। क्योंकि बंद धारिका में करेक्शन नहीं किया जा सकता।

प्रूफ पठन के क्षेत्र:-

प्रूफ पठन के कई क्षेत्र है;जैसे-ग्रंथ प्रकाशन संस्था,समाचारपत्र,विभिन्न साहित्यिक पत्रिकाएँ,सरकारी,सहकारी और व्यावसायभिमुख कार्यालय,शोध प्रबंध,समाज माध्यम आदि में । लेकिन सबसे अधिक रोजगार ग्रंथ प्रकाशन संस्था में मिलता है। ग्रंथ हजारों पीढियों के ज्ञान को वहन करते हैं। ग्रंथ की उम्र दीर्घ होती है।ग्रंथ पढकर ही भाषा समृद्ध और सुंदर होती है। सभी लोगों का ग्रंथ के लेखन और ग्रंथ की भाषा पर अधिक विश्वास होता है।वह उसे प्रमाण मानते हैं।इसलिए प्रत्येक ग्रंथ प्रकाशन के पास कई प्रूफ शोधक होते हैं,जहाँ प्रूफ पठनकर्ता को अच्छा रोजगार मिलता है। दिल्ली के राजकमल और वाणी प्रकाशन के पास जो प्रूफ पठनकर्ता होते है,उन्हें 60-70 हजार रू.तनखा मिलती है।ग्रंथ मात्र बाहर से सुंदर होकर नहीं चलेगा बल्कि ग्रंथ का अंतरंग अधिक उत्कृष्ट और निर्दोष होना चाहिए।उसके लिए भाषा,वर्तनी,व्याकरण का उत्कृष्ट ज्ञान प्रूफ शोधक के पास है तो उसे अच्छा रोजगार मिलता है।वैसे प्रूफ शोधक प्रकाशक और पाठक के बीच का सेतु होता है। प्रूफशोधक को सबसे अधिक रोजगार ग्रंथ प्रकाशन संस्थाओं में मिलता है। निश्चित समय में ग्रंथ का प्रूफ शोधन करना आवश्यक होता है। आज हिंदी में हजारों समाचारपत्र प्रकाशित होते हैं,उसका करेक्शन अत्यंत तत्परता से अत्यंत कम समय में पूर्ण करना आवश्यक होता है।एखाद गलत शब्द ,गलत वाक्य प्रकाशित होने के बाद अर्थ का अनर्थ होता है,जिससे दंगा तथा विवाद हो सकता है। समाचारपत्र में रोजगार है,लेकिन बहुत गंभिरता से जवाबदेही कार्य करना पडता है। बडे समाचार पत्र में कई प्रूफ शोधक होते हैं। हिंदी के प्रतिष्ठित विद्वान शिवपूजन सहाय अच्छे संपादक ही नहीं बल्कि अच्छे प्रूफ रिडर भी थें। साथ ही वर्तमान समय में समाज माध्यम की भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है। कई सरकारी ,सहकारी कार्यालयों में प्रूफ शोधक होते हैं।अत: विभिन्न क्षेत्रों में प्रूफ पठन के लिए रोजगार के अवसर उपलब्ध हैं।

प्रूफ शोधक की योग्यता:-

1)मुद्रित शोधक को भाषा और व्याकरण का ज्ञान हो।

2)मुद्रित शोधक बहुश्रुत हो।उसे विभिन्न विषयों का प्राथमिक ज्ञान हो।

3)प्रूफ पठन का कार्य निश्चित समय में ही पूर्ण करना चाहिए,जैसे हर दिन का समाचार पत्र निश्चित समय में प्रकाशित होता है। गतिशीलता और विश्वनियता के साथ प्रूफ रायटर ने कार्य करना चाहिए।

4)प्रूफ शोधक में एकाग्रवृति और परिश्रमवृति दोनों की आवश्यकता है।

5)प्रूफ पठन के सभी चिह्नों का ज्ञान होना चाहिए।

6)प्रूफ पठन में अपने स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति न हो।

7)सूक्ष्म तथा सौंदर्याभिमुख दृष्टि हो।

8)प्रूफ रीडर के पास शब्दकोश,व्युत्पत्तिकोश,पर्यायवाची कोश,पारिभाषिक कोश,मुहावरा कोश ,उच्चारण कोश,द्विभाषी कोश,विलोम कोश देखने की कला होनी चाहिए।

9)प्रूफ पठन में संगणक,लेआउट,की बोर्ड , फ़ॉन्ट आदि की जानकारी हो।

10)किमान पात्रता बारहवीं या बी.ए.उतीर्ण हो।

प्रूफ पठन के चिह्न:-

1.अक्षर विषयक चिह्न:-

अ.क्र.	चिह्न	चिह्न का कार्य	चिह्न का प्रयोग	खुली जगह पर चिह्न का निशान
1.1		हटा दीजिए।	मैंने किताब ~~नहीं~~ पढी।	
1.2	Stet	जैसा है वैसा रखिए।	उर्वशी काव्य ~~दिनकर~~ ने लिखा।	Stet रखिए
1.3	tr	शब्द आगे हो।	कल गाँव रहा जा हूँ।	tr /
1.4	-	गलत शब्द पर यह शब्द रखिए।	~~हिन्दुस्तान~~ गाँव में बसा है।	भारत /
1.5	See copy	मूल प्रत देखिए।	प्रेमचंद का जन्म वाराणसी ⌃ में हुआ।	लमही /
1.6	?	संदेह है।	महादेवी वर्मा का जन्म 1909 में हुआ है।	1907 /

2. पूर्ण विराम चिह्न:-

2.1	।	पूर्ण विराम	गोपाल गाँव गया ⌃	। /
2.2		अल्प विराम	मोहन राकेश ⌃ राजेंद्र यादव और कमलेश्वर तीनों अच्छे मित्र थें।	
2.3		अर्ध विराम	वे क्या चाहते है ⌃ ठीक समझ में नहीं आता।	
2.4	:	कोलन (द्वि बिंदू चिह्न) दीजिए।	मेघदूत ⌃ एक पुरानी कहानी	: /

2.5	**:**	विसर्ग		: /
2.6	?	प्रश्न चिह्न दीजिए।	क्या आप मेरे साथ चलेंगे ___	? /
2.7	‘ ’	एकल उद्धरण चिह्न का प्रयोग करें।	___ गोदान ___	‘ ’
2.8	“ ”	दोहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग करें।	महात्मा गांधी ने कहा ___ सत्य ही ईश्वर है ___ ।	“ ”
2.9	!	विस्मयादिबोधक चिह्न का प्रयोग करें।	अरे ___ अब तक यही हो?	!/
2.10	-	योजक चिह्न (हायफन) का प्रयोग करें। (दो या अधिक शब्दों को साथ में जोड़ने के लिए।)	भारत ___ श्रीलंका	-/
2.11	——	**निर्देशक चिह्न (डैश) (जो हायफन से अधिक लम्बा होता है; जैसे- तिथि, या समय के लिए)**	तिथि ___ 20 ___ 22 अक्तूबर	—— /
2.12	( )	छोटा कोष्ठक दीजिए। नाटक संहिता के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है।	___ *गुस्साकर* ___ अरे-अरे,दिखता है क्या तुझे?	( )
2.13	[ ]	मध्यम कोष्ठक चिह्न,जिसे वर्ताकार कोष्ठक भी कहते हैं।	संज्ञा ___ Noun ___ की परिभाषा दीजिए।	[ ]
2.14	{ }	बडा कोष्ठक चिह्न,जिसे सर्पीलाकार कोष्ठक भी कहते हैं।	व्यक्तिवाचक जातिवाचक ___ संज्ञा के भेद भाववाचक	}

3. स्थान परिवर्तन के चिह्न

3.1	#	स्पेस का प्रयोग करें।	उसका/घर	#
3.2	#	अक्षर निकाल दीजिए / दो अक्षर अलग करें।	उसकाउसकाघर उस**स**का/उसका/घर	#
3.3		जोड़कर लीजिए।	मुंशी प्रेम चंद महान उपन्यासकार हैं।	
3.4	‖	पंक्तियाँ सीध में रखकर ठीक करें।	‖ वीर शिवाजी की गाथाएँ उसको याद ज़बानी थीं। बुंदेले हरबोलों के मुँह ◄ हमने सुनी कहानी थी। ◄ ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो ◄ झाँसी वाली रानी थी।।	‖
3.5		उलटा है सीधा करें।	गोपाल का 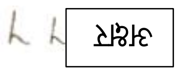 है।	

4. मात्राएँ:-

4.1	T	'आ' की मात्रा लगाना ।	अज	आज/
4.2	Ṫ	'अ' की मात्रा और अनुसार का प्रयोग करें ।	ग्गा	गंगा/
4.3	**f**	छोटी 'इ' की मात्रा लगाइए ।	हींदी	हिंदी/

4.4	h	बडी ‘ई’की मात्रा लगाइए ।	उसकि	उसकी/
4.5	q	छोटे ‘उ’ की मात्रा लगाइए ।	कूसूम	कुसुम/
4.6	w	बडे ‘ऊ’ की मात्रा लगाइए ।	फुल	फूल/
4.7		छोटे ‘ए’ की मात्रा लगाइए ।	पड	पेड/
4.8		छोटे ‘ऐ’ की मात्रा लगाइए ।	नन	नैन/
4.9		‘ए’ की मात्रा और बिंदी का प्रयोग करें।।	गद	गेंद/
4.10		‘ओ’ और ‘औ’ की मात्रा लगाइए ।	मल अर	मोल/ और/
4.11		अनुसार दीजिए ।	अबर	अंबर/
4.12		रफार दीजिए ।	कम	कर्म/

2.3 ग्रंथ प्रकाशन क्षेत्र और रोजगार :-

हिंदी का प्रकाशन क्षेत्र अत्यंत विशाल और बहुस्तरीय है। लेखक,वितरक और पाठक को जोडनेवाले सेतु का नाम है प्रकाशक।ग्रंथ प्रकाशन इस व्यवसाय का मुख्य सूत्रधार प्रकाशक होता है।लेखक की ओर से आयी पांडुलिपि का संपादन , टंकण और मुद्रित शोधन ,प्रकाशन कर वितरक के द्वारा पाठक तक पहुँचानी की प्रक्रिया प्रकाशक करता है। अच्छा प्रकाशक ग्रंथ का चयन करते समय तीन बिंदुओं को महत्वपूर्ण मानता है ,उनमें एक है रचना का स्तर , रचना की पठनीयता और तीसरा रचना की माँग। अच्छा प्रकाशन राजहंस होता है। अच्छा-अच्छा लेता है और थोता-थोता फेंक देता है।उत्कृष्ट या श्रेष्ठ रचना को वरियता देना बहुत जरुरी है। ग्रंथ का विषय,आशय, शैली,भाषा और पाठक की दृष्टि से कितना पठनीय होगा ,उसकी समझ प्रकाशक को होनी चाहिए।जहाँ एक ओर वह पाठक को सजग और संस्कारशील बनाता है तो दूसरी ओर लेखक को भी गढाता है।लेखक की ओर से अच्छी रचना लिखवाकर लेता है। वैसे अच्छा प्रकाशक खुली सोच रखता है क्योंकि वह किसी विशिष्ट विचारधारा का मात्र समर्थक नहीं होता है बल्कि जो ग्रंथ समाजपयोगी है ,जो सामाजिक प्रतिबद्धता रखता है,भले ही उनकी विचारधारा का नहीं हो ,उसे भी वह प्रकाशित करता है।इतना खुलापन प्रकाशक के पास होना चाहिए,जिससे प्रकाशक स्वयं भी संपन्न और समृद्ध होता है और अपने समाज को भी उन्नत, ,विचारोन्मुख,सजग और सौंदर्याभिमुख बनाता है। उनकी अच्छी सोच और समझ से नये पाठक और नये लेखक निर्माण होते हैं। वह पुराने लेखकों से नवीनतम और नये लेखकों से उत्कृष्टतम लिखवाकर लेता है, जिससे पाठक दोनों पीढियों की सोच से अवगत होता है।अच्छी प्रकाशन संस्थान लेखकों को गढाने की प्रयोगशाला होती है और प्रकाशक राजहंस ।

एक समय था कि लोग कविता और कहानी अधिक पढते थे लेकिन आज विमर्शमूलक किताबें अधिक पढते हैं। आज आत्मकथा,संस्मरण,प्रेरणादायी चरित्र,देश तथा विदेश की अनूदित किताबें एवं भाषिक कौशलमूलक किताबें पढी जा रही है। अर्थात समय और समाज के बदलते तेवर का एहसास होना चाहिए। लॉकडाउन के समय प्रकाशन संस्थान को ताले लगे थें लेकिन कुछ प्रकाशकों ने अपने ग्रंथों को ई-बुक्स बनाकर किंडल ऐप पर अपलोड किए थें।। किंडल से ऑनलाइन स्वरुप में लाखों लोगों ने मोबाइल या संगणक द्वारा किताबें पढीं । लॉकडाउन में मैं गाँव की ओर था। इस दौरान मैंने तीनसौ-से अधिक आदिवासी कहानियाँ किंडल पर से पढी थीं। आज लोगों को किंडल पर पढने की आदत-सी बन गई है। आज हिंदी के लाखों किताबें किंडल पर हैं।इन प्रकाशकों ने समय की माँग को देखकर खुद को अपडेट किया। आज प्रकाशन संस्था के पास खुद की अपडेट वेबसाईट होनी चाहिए। लेकिन आज होता है उल्टा । किसी भी लेखक की सामान्य जानकारी उस प्रकाशक के वेबसाईट से उतनी जल्दी नहीं मिलती कि जितनी जल्दी विकिपीडिया से मिलती है। अत: ग्रंथ प्रकाशन व्यवसाय में कई लोगों को रोजगार मिलता है,जिसकी चर्चा निम्नांकित है:-

2.3.1 लेखक :-लेखक अपनी स्वानुभूति या सहानुभूति के आधार पर कल्पकता और कलात्मकता के साथ अपनी कृति को जन्म देता है,जो सृजनात्मक रचना लेखक के लिए अपनी संतान से कम नहीं होती है। लेखक कई रचनाएँ लिखता है लेकिन कोई एक रचना इतनी हाथों- हाथ बिकती है कि साहित्य क्षेत्र में वह रचना कालजयी बन जाती है। ऐसी रचना से कई साहित्यकारों को प्रकाशकों की ओर से रॉयल्टी तथा पुरस्कार के रुप में सरकार या सामाजिक संस्थाओं की ओर से लाखों रुपये मिलते हैं,जैसे-गीतांजलि श्री को 'रेत समाधि' उपन्यास से मिलें।अर्थात एक अच्छी रचना लेखक को पद,प्रतिष्ठा, पैसा देती है।फ्रेंच लेखक बॉल्जाक पर अपनी प्रकाशन संस्था न चलने से बडी मात्रा में कर्ज हुआ था लेकिन उनके उपन्यासों की इतनी ब्रिकी हुई कि उनका सारा कर्ज चुकता हुआ और लेखक ने साहित्यक्षेत्र में अपना नाम काल के कपाल पर शाश्वत रुप में लिख दिया ।

2.3.2 संपादक :- किसी भी प्रकाशन संस्था में संपादक तथा संपादक मंडल होता है,जो पांडुलिपि का संपादन कर ग्रंथ टंकण के लिए भेज देता है। संपादन करते समय ज्ञात होता है कि कुछ बदलाव की आवश्यकता है या विषय ,आशय की गहराई बढानी चाहिए या कुछ बातें जोडनी हैं ,कुछ घटानी हैं तो वह लेखक से विचार विमर्श कर संपादक संहिता को और अधिक पठनीय बनाता है। कोई व्यक्ति किसी क्षेत्र का विशेषज्ञ होता है लेकिन उनके पास लेखन कला नहीं होती है तो ऐसे समय उस विशेषज्ञ के पास से पांडुलिपि लिखवाकर लेनी पडती है, तब वह किताब सबसे अलग होने से हाथों -हाथ बिकती है। कई बार एक ही प्रकाशक के पास अलग-अलग क्षेत्र के चार-पाँच संपादक होते हैं या कई बार एक संपादक सभी ग्रंथों का संपादन करता है।कुछ प्रकाशकों के पास संपादक मंडल होता है।प्रकाशक संपादक के अनुमति से ग्रंथ प्रकाशन के

लिए भेज देता है।इसलिए संपादन का अलग महत्व होता है। संपादनकला के लिए अच्छी तनखा या अच्छा मानदेय मिलता है। अच्छे संपादक के लिए डेढ से दो लाख रु. तनखा मिलती है। अत: ग्रंथ की संपादनकला रोजगार का अच्छा जरिया है।

2.3.3 टंकण और प्रूफ पठन:- संगणक ने प्रकाशन क्षेत्र में क्रांति कर दी है। पहले किताब छपवाने की प्रक्रिया कठीन और जटील थी लेकिन जब से संगणक आया तब से प्रकाशन व्यवसाय अधिक आसान हुआ है।अब चाहे जो फ़ॉन्ट हम प्रयोग कर सकते हैं।पहले भारत में कृतिदेव में टंकण किया पृष्ठ विदेश में देख नहीं सकते थे क्योंकि वह फ़ॉन्ट वहाँ नहीं खुलता था क्योंकि उनके कंप्यूटर कृतिदेव फ़ॉन्ट नहीं है । लेकिन जब से यूनिकोड के फ़ॉन्ट आए तब से कोई भी टंकण किया हुआ पृष्ठ कहीं पर भी खुलता है। प्रत्येक प्रकाशक के पास तीन-चार टंकणकर्ता होते हैं। उन्हें माहवार तनखा मिलती है। उसी भाँति प्रत्येक प्रकाशक के पास एक-दो प्रूफ पठनकर्ता होते हैं,जो प्रत्येक ग्रंथ का करेक्शन करते हैं। उन्हें वर्तनी के नियम के साथ करेक्शन चिह्नों का अच्छा परिचय होता है । ग्रंथ का प्रकार तथा विषय,आशय ,भाषा और शैली अच्छी समझ होनी चाहिए।आवश्यकता है,संगणक की अच्छी जानकारी हो। इसलिए प्रूफ पठन एक कला ,कौशल और रोजगार है। प्रूफ पठनकर्ता को प्रकाशक की ओर से प्रत्येक माह को साठ-सत्तर हजार रु.मिलते हैं।

2.3.4 वितरण:-ग्रंथों का वितरण तीन-चार प्रकार से होता है,जैसे पुस्तकालय और बुक डेपो द्वारा तथा प्रत्यक्ष पाठक या ऑनलाईन द्वारा।पुस्तक बिक्री के लिए प्रकाशक के अनेक बुक डेपो विक्रेता के साथ अच्छे संबंध होने चाहिए। यह व्यवसाय संपर्क पर चलता है। पाठक ग्रंथ पुस्तक विक्रेता के पास ही खरिदते हैं।प्रकाशन पर निर्भर यह अच्छा स्वयंरोजगार है।लेकिन आज अधिकत्तर लोग घर बैठे ऑनलाइन के द्वारा ग्रंथ खरिदते हैं। एमेजॉन कंपनी का मूल व्यवसाय ग्रंथ बिक्री ही था। लेकिन उसका इतना विस्तार हुआ कि वह दुनिया के हर घर में वस्तुएँ बेच रहा है। किंडल के द्वारा भी कई किताबें बेची जा रही है।अत: ग्रंथ वितरण यह अच्छा स्वयं रोजगार है।

2.3.5 प्रकाशक:-प्रकाशक मात्र व्यवसाय ही नहीं करता बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक प्रतिबद्धता का दायित्व भी निभाता है। इलेक्ट्रॉनिक माध्यम कितना भी प्रभावी क्यों न हो लेकिन वह ग्रंथ का विकल्प नहीं बन सकता है। हाँ,वह सहयोगी जरुर बनेगा। यूरोप और अमरिका की इतनी प्रगति हुई है लेकिन वहाँ पाठक किताब खरीदकर ही पढता है। वैसे ग्रंथ की हजारों साल की परंपरा है । उसके रुप,स्वरुप में मनुष्य के पडाव के साथ प्रगति और परिवर्तन हुआ है।इसलिए प्रकाशन का व्यवसाय अभंग और अखंड रहेगा। गत 51 वर्ष से दिल्ली में दिल्ली विश्व पुस्तक मेला आयोजित किया जाता है,जो प्रत्येक वर्ष फरवरी माह के दौरान सम्पन्न होता है। पिछले वर्ष इस मेले में सौ करोड रु. की किताबें बिकी।इस मेले के लिए देश से ही नहीं विदेश से भी कई लोग आते हैं। यहाँ,सबसे अधिक हिंदी की किताबें बिकती है। इसके साथ ही भारत में पटना पुस्तक मेला,जयपुर बुक फेस्टिवल,अंतर्राष्ट्रीय कोलकाता पुस्तक मेला जैसे पुस्तक मेले हर वर्ष आयोजित किये जाते हैं और पाठक को भी एक ही जगह सभी किताबें देखने के लिए मिलती हैं।किताब की एक पंक्ति आदमी की जिंदगी बदल देती है। इसलिए इस व्यवसाय का भविष्य उज्वल और उन्नत है। विभिन्न प्रकाशन संस्थाओं में कई लोगों को रोजगार मिलता है। यह बहुत बढा स्वयं रोजगार है,जो पीढी-दर-पीढी चलता है। आवश्यकता है प्रकाशन हेतु अच्छी रचना का चयन हो,जिसकी पठनीयता हो,अधिक से अधिक पाठक किस रचना के लिए मिल सकते हैं उसकी समझ हो और ग्रंथ के आशय,विषय के साथ उसका बाह्यरुप भी आकर्षक और सुंदर हो तभी वह ग्रंथ हाथों-हाथ बिकता है और व्यवसाय भी होता है। अत:आवश्यकता है ग्रंथ व्यवसाय के कौशल को प्राप्त कर अपने भविष्य का निर्माण करें।

3. समाज माध्यम और रोजगार

3.1 यूटयूब और रोजगार

यूटयूब का परिचय :-
अंतरजाल जगत में आज की सबसे बड़ी वीडियो शेयरिंग वेबसाइट है 'यू-ट्यूब' । जहाँ पर हम अपना या किसी भी विषय से संबंधित वीडियो बनाकर अपलोड कर सकते हैं । केवल अपलोड ही नहीं, इन वीडियो से हम पैसे भी कमा सकते हैं, परंतु जब यू-ट्यूब बनाया गया तब, उस समय ऐसा कुछ सोचा नहीं गया था कि वीडियो अपलोड कर पैसे भी कमाए जा सकते हैं । यू-ट्यूब के आने से पहले भी कुछ वेबसाइटें थीं, जिन पर वीडियो अपलोड करने की सुविधा थी । परंतु इन वेवसाइटों पर केवल वीडियो अपलोड करने की सुविधा थी । यू-ट्यूब पर अपलोड करने के साथ शेयरिंग का एक विशेष फीचर भी उसमें जोडा गया है जिसके कारण आज यू-ट्यूब इतना लोकप्रिय हो गया है। यू-ट्यूब ही नहीं, इंटरनेट पर ऐसी और भी बहुत सारी वेबसाइटें हैं, जो कि किसी-न-किसी विषय से संबंध में प्रसिद्ध हो गई हैं, जैसे कि फेसबुक, गूगल, ट्विटर आदि। इन वेबसाइटों में यू-ट्यूब ही एक ऐसी वेबसाइट है, जिसका उपयोग आज सबसे अधिक हो रहा है। आज विश्व में सर्वाधिक वीडियो फिल्में, गीत, मजेदार किस्से,रिल्स तथा कई अन्य विषयों के वीडियो यू-ट्यूब पर ही देखे जा रहे हैं।

यू-ट्यूब का इतिहास और निर्माण :-
सर्वप्रथम सन 1990में इंटरनेट अस्तित्व में आया और पहली बार इंटरनेट पर सर्च इंजन को स्थापित किया गया जिसके माध्यम से इंटरनेट पर लोगों ने सर्च करना प्रारंभ किया। जब सर्च इंजन स्थापित किया गया तो उसके बाद ही लोग कुछ-न-कुछ चीजें इसके ऊपर सर्च करने लगे और धीरे धीरे इंटरनेट के संबंध में जानकारी लोगों को होने लगी। 1991 में पहली बार इंटरनेट पर एक वेबसाइट चलाई गई । 1998 में गूगल कंपनी ने अपना सर्च इंजन बनाया यह युजर फ्रेंडली था इसी कारण लोगों को किसी भी जानकारी को प्राप्त करने के लिए अधिक कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ा। गूगल के सर्च इंजन के आने के बाद लोगों को जानकारी प्राप्त करना बहुत सरल हो गया। 1998में जब गूगल कंपनी द्वारा सर्च इंजन लाया गया था ,उसी समय पेपैल का भी आविष्कार हुआ और इसमें चाड हर्ले ,जावेद करीम , स्टीव चेन कंपनी में काम करते थे। इन तीनों ने मिलकर एक ऑनलाइन डेटिंग वेबसाइट डेवलप की और एक कंपनी शुरू की। उस कंपनी का नाम था 'ट्यून इन हुकअप'। इस वेबसाइट का मतलब यह था कि कोई भी यूजर अपना बनाया वीडियो इंटरनेट पर अपलोड कर सकता था। इन वीडियो को देखकर अन्य यूजर यह निर्णय कर सकते थे कि उसे हुकअप करना है या नहीं ,आगे इन्होंने 2005में सोचा कि इंटरनेट पर कोई ऐसी वेबसाइट नहीं है ,जो वीडियो शेयरिंग कर सकें । क्योंकि जावेद करीम ने देखा कि 2004में सुपर बॉल इंसिडेंट में हुए जैनेट जैकसन और इंडियन ओशन सुनामी के वीडियो को इंटरनेट पर देखना बहुत मुश्किल हो गया था ,इस कठिनाई के कारण इन तीनों ने सोचा कि कुछ ऐसा बनाया जाए ,जिससे कि इंटरनेट पर न सिर्फ वीडियो आसानी से देखा जाए ,बल्कि उस पर किसी भी तरह के वीडियो को बहुत आसानी से सर्च भी किया जा सके और इसी कठिनाई को दूर करने के लिए इन तीनों ने वीडियो शेयरिंग वेबसाइट यू-ट्यूब बनाई।
यू-ट्यूब की यात्रा :-14 फरवरी, 2005 को यू-ट्यूब की स्थापना हुई । चाड हर्ले ,स्टीव चेन और जावेद करीम ने की थी। यह तीनों पूर्व पेपैल कर्मचारी थे जिन्होंने वीडियो साझा करने के लिए एक मंच बनाने का फैसला किया था। प्रारंभिक दिनों में ,यूट्यूब का मुख्यालय एक गैरेज में था और सबसे पहले 23 अप्रैल, 2005 को यूजर्स के लिए बीटा वर्जन में यू-ट्यूब पर 18 सेकंड का वीडियो बनाया गया और इस वीडियो का नाम था 'मी एट द जू'।जिसे जावेद करीम ने अपलोड किया था। यह वीडियो आज भी जावेद करीम के यू- ट्यूब अकाउंट पर उपलब्ध है। और सितंबर 2005में इस वीडियो पर सबसे पहला कमेंट आया था । यू-ट्यूब पर ब्राजील के फुटबॉल स्टार रोनाल्डिन्हो को प्रदर्शित करने वाला नाइकी का विज्ञापन एक मिलियन व्यू पर पहुँचनेवाला पहला वीडियो बना। नवंबर 2005 में शिकूया कैपिटल ने 3.5 मिलियन का पहला फंड-इन किया। दिसंबर 2005 में यू-ट्यूब आधिकारिक रूप से लॉन्च कर दिया गया। इंटरनेट पर गूगल ने यू-

ट्यूब की बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए 2006 में 1.65 मिलियन यू.एस. डॉलर में इसे खरीद लिया। उस समय यू-ट्यूब के लगभग 67 कर्मचारी थे, जिन्होंने यू-ट्यूब के बाद गूगल में काम करना प्रारंभ कर दिया। मई 2007 में यू-ट्यूब ने पार्टनर प्रोग्राम को लॉन्च किया, जिसका प्रयोग करके यू-ट्यूब पर क्रिएटर्स अपना टैलेंट, हिम्मत और हुनर दिखाकर पैसा कमाना शुरू कर सकते थे। 2009 में वीवो म्यूजिक वीडियो सर्विस प्रारंभ की गई । 2012 में जब लंदन में ओलंपिक खेल हुए थे, उन सभी खेलों की यू-ट्यूब ने लाइव वीडियो सर्विस शुरू की गई स्ट्रीम भी दिखाई और 2012 के ओलंपिक खेलों का प्रचार-प्रसार यू-ट्यूब पर बडे स्तर पर किया गया था । 2012 में ही गंगनम स्टाइल सॉन्ग वीडियो ने बिलियन व्यू को रीच किया। यू-ट्यूब वीडियो रिकॉर्डर 32 बिट इन्टिजर तक ही बनाया गया था। गंगनम स्टाइल सॉन्ग के बाद व्यू को 64 बिट इन्टिजर बनाया गया। इसी तरह समय के साथ-साथ यू-ट्यूब बदलता गया और यूट्यूब ने अपनी सेवाओं का विस्तार किया और नए फीचर्स जैसे कि वीडियो मोनेटाइजेशन ,लाइव स्ट्रीमिंग और वीडियो एडिटिंग टूल्स जोड़े इससे वीडियो क्वालिटी में बहुत से बदलाव आते गए । 3 डी वीडियो, 360 डिग्री वीडियो और यू-ट्यूब रेड, यू-ट्यूब टी.वी. जैसे फीचर इसमें जोड दिए गए।

यूट्यूब पर रोजगार के अवसर :-यूट्यूब आज केवल एक मनोरंजन का साधन नहीं रह गया है, तो यह कमाई का अच्छा माध्यम बन गया है । हम यूट्यूब का सही प्रयोग करें तो घर बैठे लाखों-करोड़ों में पैस कमा सकते हैं । खास बात यह है कि कोई भी बिना किसी निवेश के यूट्यूब में अपना चैनल शुरू कर सकता है और अपने कंटेंट के माध्यम से पैसे कमा सकता है । केवल इतना ही ध्यान रखना है कि जो भी कंटेंट है वह ओरिजिनल हो और अधिक से अधिक लोग उसे देखें ।शेयर करने पर अधिक से अधिक लोगों तक यह कंटेंट भेजा जा सकता है । शेअर करने के पश्चात सबस्क्राइ करने के लिए भी कहना जरूरी है क्योंकि यूट्यूब से कमाई के लिए चैनल पर कम से कम 1000सब्सक्राइबर हो और वॉच टाइम 4 हजार घंटे का होना चाहिए। इसे ही यूट्यूब का पार्टनर प्रोग्राम कहा जाता है। यदि आप यूट्यूब के सभी मानदंडों को पूरा करते हैं ,तब ही मोनेटाइजेशन प्रोग्राम में अप्लाई करने का विकल्प आता है। यूट्यूब के पार्टनर प्रोग्राम में आवेदन करने के बाद चैनल मोनेटाइज हो जाता और फिर एडसेंस अकाउंट जोड़ने का विकल्प आता है। एडसेंस अकाउंट के बाद ही यूट्यूब की ओर से व्यूज के अनुसार पैसे आने लगते हैं।

1. क्रिएटर : अपना स्वयं का यूट्यूब चैनल बनाकर वीडियो बना सकते हैं और उन पर विज्ञापन के द्वारा रोजगार प्राप्त हो सकता हैं।
2. युट्यूब पार्टनर : यूट्यूब के पार्टनर प्रोग्राम में जुडकर अपने वीडियो पर विज्ञापन से रोजगार उपलब्ध हो सकता हैं।
3. ऑनलाइन ट्यूटर : यूट्यूब पर अपने ज्ञान को साझा करके ऑनलाइन ट्यूटर बनकर रोजगार प्राप्त कर सकते हैं।
4. प्रोडक्ट रिव्यूअर : उत्पादों की समीक्षा करके और उन्हें यूट्यूब पर साझा करके भी रोजगार प्राप्त कर सकते हैं।
5. इन्फ्लुएंसर : अपने यूट्यूब चैनल पर उत्पादों या सेवाओं का प्रचार करके भी रोजगार प्राप्त किया जा सकता हैं ।

यूट्यूब से पैसे कमाने के कई तरीके हैं

1. गूगल एडसेंस :

यू-ट्यूब अपनी कमाई गूगल एडसेंस के माध्यम से करता है, हम अपने यूट्यूब चैनल को गूगल से मॉनेटाइज कर सकते हैं फिर गूगल एडसेंस अकाउंट बना सकते हैं । यहां साइट पर आप की सामग्री और दर्शकों के अनुसार अपना विज्ञापन दिए जाते हैं। जिससे वीडियो पर विज्ञापन आने लगते है और इसके पैसे मिलना शुरु होता है । जितने ज्यादा लोग वीडियो देखेंगे ,उतने ज्यादा विज्ञापन आएंगे और उतनी ही कमाई होगी । इसमें अधिकांश वीडियो मुफ्त में देखे जा सकते हैं, परंतु कुछ वीडियो को देखने के लिए पैसे देने पड़ते हैं। इनमें से फिल्में उधार लेकर देखना भी होता है, जिसमें हम कुछ पैसे देकर फिल्म देख सकते हैं। जैसे यू-ट्यूब प्रीमियम की सदस्यता भी हम पैसे देकर ले सकते हैं, जिससे बिना कोई विज्ञापन के कई सारे वीडियो देख सकते हैं और साथ ही यू-ट्यूब प्रीमियम पर कुछ ऐसे वीडियो भी हैं, जिन्हें सिर्फ यू-ट्यूब प्रीमियम की सदस्यता खरीदकर ही देख सकते हैं।

2. विज्ञापन से कमाई :-

यू-ट्यूब की कमाई विज्ञापनों से होती है ,जब भी क्रिएटर्स अपने वीडियो अपलोड करते हैं तो उन वीडियो पर वे अपने विज्ञापन लगाते हैं और उन विज्ञापनों द्वारा ही कमाई होती है। यू-ट्यूब आज भी अपने यूजर्स को बढ़िया से बढ़िया और अच्छी-से-अच्छी सर्विस उपलब्ध कराने की कोशिश कर रहा है। आनेवाले समय में यू-ट्यूब में और भी बढ़िया फीचर

हमें देखने को मिल सकते हैं और यही कारण है कि यू-ट्यूब दिन -प्रतिदिन बहुत लोकप्रिय होता जा रहा है और अब यू-ट्यूब पर किसी भी वीडियो या किसी भी चीज को देखने के लिए ज्यादा कठिनाई नहीं होती है।

यू-ट्यूब अपने पंजीकृत सदस्यों को वीडियो अपलोड करने ,देखने ,शेयर करने ,पसंदीदा वीडियो के रूप में जोड़ने , रिपोर्ट करने ,टिप्पणी करने और दूसरे सदस्यों के चैनल की सदस्यता लेने की अनुमति देता है। इसमें सदस्यों से लेकर कई बड़ी कंपनियों के वीडियो मौजूद रहते हैं। इनमें वीडियो क्लिप ,टी.वी .कार्यक्रम ,संगीत वीडियो ,फिल्मों के ट्रेलर , लाइव स्ट्रीम आदि होते हैं। कुछ लोग इसे वीडियो ब्लॉगिंग के रूप में भी इस्तेमाल करते हैं। गैर-पंजीकृत सदस्य केवल वीडियो देख ही सकते हैं ,वहीं पंजीकृत सदस्य असीमित वीडियो अपलोड कर सकते हैं और वीडियो में टिप्पणी भी जोड़ सकते हैं।

3. एफिलिएट मार्केटिंग :-

यूट्यूब से पैसे कमाने का अन्य तरीक़ा है एफिलिएट मार्केटिंग । ऑनलाइन सामान बेचने वाली कंपनियों से एफिलिएट करके उनके प्रोडक्ट की लिंक अपने यूट्यूब डिस्क्रिप्शन बॉक्स में हम दे सकते हैं । जो भी उस लिंक से कोई भी सामान ख़रीदेगा ,उससे आपको कमिशन मिलने लगता है । इसके अतिरिक्त चैनल के लोकप्रिय हो जाने पर भी स्पॉन्सरशिप मिलने लगती है । जिसमें कई ब्रांड या कंपनियाँ आपको प्रमोशन के लिए पैसे देने को तैयार होती है और आपको अपने वीडियो में उनके उत्पाद या जानकारी को प्रमोट करना होता है ।

स्वाभाविक रूप से लोगों के मन में यह प्रश्न रहता है कि आखिर यूट्यूब में वीडियो के पैसे कितने मिलते हैं ? एक सर्वे के अनुसार अमेरिका में यूट्यूबर्स को लगभग हर महीने 3,70, 000रूपए कमा लेते हैं । उनका वीडियो के 1000व्यूज पर लगभग 1558 रूपए का भुगतान किया जाता है । परंतु वास्तव में कमाई निर्भर करती है वीडियो में चलने वाले एड्स पर । यदि आपके वीडियो में ज्यादा व्यूज आए हैं ,परंतु एड कम चलते है ,तो लोगों ने उसे स्किप कर दिया है ,तो आपकी कमाई कम होगी । वहीं अगर वीडियो के व्यूज कम भी हैं ,लेकिन उन पर चलने वाले एड की कीमत अधिक है । और जितने उस एड को अधिक से अधिक लोगों ने देखते है ,तो उसकी कमाई उतनी ही अधिक होती है ।

4.यूट्यूबर एक प्रोफेशन- आधुनिक युग में युट्यूब विश्व का स्पंदन बन गई है । यूट्यूब जनजीवन की आमदनी का एक बेहतरीन जरिया बन चुका है। अक्सर लोग यूट्यूब पर अपना स्वयं का चैनल क्रिएट कर लेते हैं और उस पर तरह-तरह की वीडियोज पोस्ट करके पैसा कमाते हैं। यूट्यूबर एक प्रोफेशन की तरह बढ रहा है और अधिक से अधिक लोग यूट्यूबर बनना चाहते हैं । यूट्यूब के माध्यम से पैसा कमाने का यही एकमात्र साधन नहीं है। संभव है कि आप स्वयं का चैनल खोल कर वीडियो अपलोड करने में बहुत अधिक रूचि न रखते हों। ऐसे में आप अन्य भी कई तरीकों से अच्छी कमाई कर सकते हैं। यूट्यूब ने आज कमाई के नए अवसर खोले हैं और अब सिर्फ वीडियो पोस्ट करना ही एकमात्र जरिया नहीं रह गया है। हर जिंदगी डॉट कॉम की संपादक मिताली जैन के अनुसार , "यूट्यूब चैनल से सिर्फ वीडियो बनाकर ही पैसे नहीं कमा सकत तो आपके पास कई ऑनलाइन जॉब्स के ऑप्शन भी मौजूद हैं।"

5.यूट्यूब चैनल से मैनेजर को रोजगार :-

यूट्यूब पर कंटेंट क्रिएटर अपने कंटेंट को लेकर नए नए विषयों को खोजने में व्यस्त रहते हैं ,परंतु कंटेंट के साथ-साथ चैनल को सूचारू रूप से चलाना भी उतना ही आवश्यक होता है। जैसे कि ,वीडियो अपलोड करना , थंबनेल सेट करना ,प्लेलिस्ट जोड़ना और नई प्लेलिस्ट बनाना ,ये सभी महत्त्वपूर्ण कार्य हैं जिन्हें समय पर करने की आवश्यकता है। जैसे-जैसे चैनल की लोकप्रियता बढ़ती है ,अकेले सब कुछ संभालना और मैनेज करना कठिन होता है। ऐसे में यूट्यूब चैनल क्रिएटर को एक चैनल मैनेजर की आवश्यकता होती है। यह प्रोफेशनल कमेंट सेक्शन पर भी अपनी पैनी नजर रखते हैं और कई तरह के कमेंट पर रिस्पॉन्स भी करते हैं। वास्तव में एक चैनल के लिए यह बहुत आवश्यक बन जाता है कि वह अपनी ऑडियंस के साथ संपर्क रखें । इसतरह बिना युट्यूब चैनल के लिए फ्रीलांस मैनेजर का काम कर सकते हैं ।

3.2 फ़ेसबुक और रोजगार

सामान्य परिचय:-फ़ेसबुक एक अन्तरजाल पर सामाजिक संजाल (Social Network) सेवा है।इस आभासी प्लेटफ़ॉर्म का उद्देश्य परिवार,मित्रों तथा अन्य सामाजिक,राजनीतिक,धार्मिक,सांस्कृतिक गतिविधियों में एक-दूसरे से संपर्क, विचारों का आदान-प्रदान, मनोरंजन तथा व्यावसायिक प्लेटफ़ॉर्म प्रदान करना।इस माध्यम के जरिये स्टेटस, फ़ोटो, वीडियो, वेब लिंक, और ईवेंट साझे किए जाते हैं। साथ कई कंपनियाँ अपनी वस्तुओं का मार्केटिंग करने तथा ब्राँन्ड हेतु फेसबुक पेज बनाती है।जहाँ कंपनी का ब्यौरेवार वर्णन होता है। फ़ेसबुक मेटा कंपनी द्वारा संचालित है। फ़ेसबुक की खोज 4फरवरी, 2004 में हार्वर्ड विश्वविद्यालय,अमरिका के छात्र ने की,जिनका नाम मार्क जुकेरबर्ग ।वे ही इस कंपनी के सी.ई.ओ. हैं। सन 2004 में 1000 मिलियन युजर्स थे और सन 2022 में दुनिया की एक चौथाई आबादी फ़ेसबुक पर हैं। दुनिया में फेसबुक के 3.065 बिलियन्स युजर हैं।दुनिया में सबसे अधिक जिन पाँच देशों में फ़ेसबुक के युजर्स हैं ,उनकी जनसंख्या क्रमगत इस प्रकार हैं,जैसे- भारत(युजर्स-373.2 मिलीयन्स),युनायटेड नेशन(युजर्स-192.7 मिलीयन्स),इंडोनिशिया(युजर्स-117 मिलीयन्स),ब्राज़ील(युजर्स-110.7 मिलीयन्स), मेक्सिको(युजर्स-90.6मिलीयन्स)। (1 मिलियन यानी 10 लाख और 1 बिलियन यानी 100 करोड) दुनिया में सबसे अधिक फ़ेसबुक युजर्स भारत में हैं।भारत में गुडगाँव,मुंबई,हैदराबाद बैंगलुरु इन चार जगह पर फ़ेसबुक के कार्यालय हैं। फेसबुक को 98% पैसे विज्ञापन से मिलते हैं। फेसबुक को एक घंटे में 100करोड रु.मिलते हैं। फ़ेसबुक मात्र मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि जिसके द्वारा रोजगार भी प्राप्त होता है। जिस युजर्स के 10000 फॉलोअर्स और 60 दिनों में 30000 मिनट वॉच टाइम होता है उनसे पैसे मिलने शुरु होते हैं।आवश्यकता है यूट्यूब की भाँति फेसबुक का भी मोनेटाइज करना आवश्यक है।

फ़ेसबुक में रोजगार के अवसर:-

दुनिया का हर तीसरा आदमी फ़ेसबुक से जुडा है।दुनिया में सबसे बडा वैश्विक मंच फ़ेसबुक को कहा तो अतिशयोक्ति नहीं होगा।दुनिया का अमीर से अमीर और गरीब से गरीब आदमी फ़ेसबुक से जुडा है। फेबबुक मात्र मनोरंजन तक सीमित नहीं बल्कि वह रोजगार कमाने का माध्यम भी है। फ़ेसबुक पर तीन मार्ग से अनेक प्रकार का रोजगार प्राप्त होता है। वे तीन मार्ग हैं- फ़ेसबुक प्रोफाइल, फ़ेसबुक पेज और फ़ेसबुक ग्रुप।

1. नौकरी की खोज:- फ़ेसबुक पर कई ऐसे ग्रुप या पेज हैं जो विशेष रूप से नौकरी के अवसरों की जानकारी साझा करते हैं। आप इन ग्रुपों में शामिल हो सकते हो । अपने क्षेत्र से संबंधित नौकरियों के बारे में अपडेट रह सकते हो। फ़ेसबुक पर कई जॉब ग्रुप्स और पेज हैं, जहाँ कंपनियाँ नौकरी के विज्ञापन पोस्ट करती हैं। नौकरी खोजने, नेटवर्क बनाने और रोजगार के नए अवसर प्राप्त करने के लिए एक प्रभावी माध्यम है। फ़ेसबुक एक शक्तिशाली उपकरण है। कई विश्वविद्यालयों ने अपना फ़ेसबुक प्लेसमेंट पेज शुरु किया है;जैसे-इलाहाबाद विश्वविद्यालय का प्लेसमेंट पेज है- "Offical facebook placement cell_University of Allahabad " ।

2.इन-स्ट्रीम ऐड से आर्थिक लाभ:- फ़ेसबुक पर अधिकत्तर लाभ विज्ञापन से होता है। इसमें चार प्रकार हैं-प्री-रोल विज्ञापन(जो किसी भी वीडियों के पहले आने वाला विज्ञापन) ,मिड -रोल विज्ञापन(वीडियो देखने के दौरान का विज्ञापन),इमेज विज्ञापन(वीडियो के नीचे आने वाला विज्ञापन) और पोस्ट रोल विज्ञापन(वीडियो के समाप्ति पर आनेवाला विज्ञापन)। इसलिए आपको फ़ेसबुक के प्रोफाईल में इन-स्ट्रीम ऐड जोडनी होगी। 5000 सबक्राईबर और

6000 मिनट वॉच टाइम होना चाहिए तभी हम इन-स्ट्रीम ऐड के लिए अप्लाई कर सकते हैं साथ ही आपको सेट अप कर add-on Video को Vnveil करना होगा तभी आपको विज्ञापन से पैसे मिलने शुरु होंगे। फ़ेसबुक पर सबसे अधिक अर्थप्राप्ति विज्ञापन से होगी। अर्थात यह अर्थाजन का अच्छा मार्ग है।

3.मार्केट प्लेस से अर्थ प्राप्ति:- फ़ेसबुक के मार्केट प्लेस पर आप कोई वस्तु बेचकर पैसे कमा सकते हो।आज ऑनलाइन मार्केट बहुत बडा है। आपके पास की वस्तुएँ हैं या किसी अन्य कंपनी या व्यक्ति की तथा अमेजॉन जैसे की कंपनियों के पास की भी वस्तुएँ बेचकर पैसे कमा सकते हो। आवश्यकता है पाँच बातों की सही जानकारी,जैसे - 1.मार्केट प्लेस के सही कैटीगरी का चयन करना।जो वस्तुएँ बिकती हैं वे वस्तुएँ रखिये,जैसे होम डेकोरेशन,कीचन की छोटी- छोटी वस्तुएँ,पुरुषों के वॉलेट या स्रियों के सौंदर्य प्रसादन की वस्तुएँ अर्थात यह वस्तुएँ अधिक बिकती हैं,जिनके ग्राहक अधिक हैं। 2. मार्केट प्लेस सही लोकेशन का चयन करें,जैसे बेंगलुरु,मुंबई,दिल्ली,पुणे,लखनऊ आदि । 3.कम प्राइज रखें ,4 बिक्री हुई वस्तुओं की रेटिंग चेक करते रहिए।जिसकी रेटिंग अधिक है वही वस्तुएँ अधिक बिकेगी।5.सही ग्रुप का चयन,जैसे-बाय ॲन्ड सेल ग्रुप,बडे शहर के ग्रुप ,अपने शहर के ग्रुप से जुडे रहें। इन पाँच बातों को ध्यान रखेंगे तो वस्तुएँ अधिक बिकेगी और जिससे लाभ भी अधिक अच्छा मिलेगा।

4. परफॉर्मन्स बोन्स से अर्थ प्राप्ति:- पहले रिल्स से लाभांश मिलता था लेकिन अभी परफॉर्मन्स से लाभांश लाभांश मिल रहा है। आप अलग-अलग विषय पर रिल्स बनाते हो लेकिन एखाद रिल्स फ़ेसबुक को और अधिक अच्छी लगती है तो फ़ेसबुक की ओर परफॉर्मन्स लाभांश मिलता है। अर्थात जिससे अर्थप्राप्ति होती है।

5.प्रायोजन(Sponsorship)से अर्थप्राप्ति:- यदि आपके पेज पर 5000 से अधिक व्यूज हैं तो आपको प्रायोजन से पैसे मिलते हैं। किसी कंपनी के ब्रान्ड पर स्टोरी बनाकर या उस पर रिल्स बनाकर या उसका लोगो लगाकर उनकी स्पॉन्सरशिप से अर्थप्राप्ति होगी ।इससे अच्छा-खासा पैसा मिल सकता है।परंतु स्पॉन्सरशिप करते समय हॅकर्स से बच के रहना चाहिए क्योंकि वे लालचं दिखाकर फ़ेसबुककर्ता का नुकसान कर सकते हैं।सचेत रहना चाहिए।

6.सबक्राइबर से अर्थप्राप्ति:- वैसे अधिकतर फ़ेसबुक पर सबक्राइबरिंग मुफ्त उपलब्ध होती हैं लेकिन कई फेसबुक पेज अधिक लाभ के होते हैं जिन्हें लोग पैसे देकर देखना चाहते हैं वे   89,160 &199 जैसी निश्चित रक्कम देकर उस फ़ेसबुक को सबक्राइबर करते हैं।सबक्राइबर करने पर कई बार उस कंपनी की वस्तु पर कुछ छूट मिलती है या अन्य प्रकार का लाभ मिलता है।ऐसे फ़ेसबुककर्ता को सबक्राइबरकर्ता की ओर से बडी मात्रा में अर्थप्राप्ति होती है।

7. फ़ेसबुक पेज से रोजगार:- देश के पंतप्रधान से लेकर गाँव के सरपंच तक अर्थात सभी के फ़ेसबुक पेज हैं। कई बडे लोग स्वयं का फ़ेसबुक स्वयं नहीं चलाते बल्कि उनकी टीम होती है,जैसे पंतप्रधान के फ़ेसबुक पेज की कई लोगों की टीम होगी। उस पेज में सामग्री लेखन,वीडियो संपादन,अलग-अलग विषय के विशेषज्ञ,अर्थ,सार्वजनिक, नीति,विधि जैसे क्षेत्र के विशेषज्ञ,पेज डिझाइन,तकनीशीयन आदि प्रकार के हजारों लोग उस पेज पर कार्य करते होगें ।कई राजनेताओं ,सेलिब्रेटी तथा बडी-बडी कंपनियों के फ़ेसबुक पेज होते हैं,जहाँ कई लोगों को रोजगार प्राप्त होता है।

अत: फ़ेसबुक जैसा प्लेटफ़ॉर्म   दुनिया के लोगों के लिए रोजगार तथा स्वयंरोजगार का क्षेत्र है।वह रोजगार का वैश्विक मंच है,जिसमें अनंत संभावनाएँ निहित हैं।

3.3 ब्लॉग लेखन और रोजगार

प्रास्तविक:- ब्लॉग लेखन एक ऐसा क्षेत्र है जो रचनात्मकता, तकनीकी ज्ञान और संवाद कौशल के जरिए रोजगार के अनगिनत अवसर प्रदान करता है। ब्लॉग लेखन में उपलब्ध प्रमुख रोजगार के अवसर निम्न स्वरूप से है।

1. पर्सनल ब्लॉगिंग से कमाई:-अपने ब्लॉग प्लेटफॉर्म पर लेख लिखकर विज्ञापन, एफिलिएट मार्केटिंग, और ब्रांड प्रमोशन से आय अर्जित करना। पर्सनल ब्लॉगिंग से कमाई करना आज के समय में एक लोकप्रिय तरीका बन गया है। अगर आप अपना ब्लॉग शुरू करना चाहते हैं और उससे पैसा कमाना चाहते हैं, तो निम्न माध्यम से कमाई कर सकते है **गूगल ऐडसेंस (Google AdSense)** गूगल ऐडसेंस एक लोकप्रिय तरीका है। इसमें आप अपने ब्लॉग पर विज्ञापन दिखाकर पैसा कमा सकते हैं। विज्ञापन आपकी वेबसाइट के ट्रैफिक और यूजर्स की क्लिक पर आधारित होता है। **एफिलिएट मार्केटिंग (Affiliate Marketing)** एफिलिएट मार्केटिंग में आप किसी कंपनी के प्रोडक्ट्स या सर्विसेज का प्रचार करते हैं और हर सेल पर कमीशन पाते हैं। अमेज़न, फ्लिपकार्ट और अन्य कंपनियां एफिलिएट प्रोग्राम ऑफर करती हैं। **स्पॉन्सरशिप पोस्ट** जब आपका ब्लॉग लोकप्रिय हो जाता है, तो ब्रांड्स आपके ब्लॉग पर स्पॉन्सर्ड पोस्ट पब्लिश करने के लिए पैसे देते हैं। इसमें ब्रांड्स आपके ऑडियंस तक पहुंचने के लिए पैसे देते हैं। **पेड सब्सक्रिप्शन और मेंबरशिप** अगर आप हाई-क्वालिटी कंटेंट या विशेष सेवाएं प्रदान करते हैं, तो आप अपने ब्लॉग के लिए पेड मेंबरशिप या सब्सक्रिप्शन शुरू कर सकते हैं। **डिजिटल प्रोडक्ट्स और सेवाएं बेचें** आप अपने ब्लॉग के माध्यम से ईबुक, गाइड्स, ऑनलाइन कोर्स, या डिजाइन टेम्प्लेट बेच सकते हैं। **ईमेल मार्केटिंग** अपने ब्लॉग पर ईमेल सब्सक्राइबर्स बनाएं और उन्हें प्रोडक्ट्स या सेवाओं के बारे में जानकारी दें।विषय विशेष का ज्ञान, सोशल मीडिया पर सक्रियता, डिजिटल मार्केटिंग ,मेहनत और सही रणनीति अपनाई जाए,नियमित और उच्च गुणवत्ता से पर्सनल ब्लॉगिंग से अच्छी कमाई की जा सकती है।

2. डिजिटल मार्केटिंग और ब्लॉग लेखन:- आज के डिजिटल युग में, ब्लॉग लेखन केवल एक शौक तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह कमाई का एक महत्वपूर्ण साधन बन चुका है। ब्लॉगिंग और डिजिटल मार्केटिंग का सही उपयोग करके, आप अपनी विशेषज्ञता को न केवल साझा कर सकते हैं बल्कि एक स्थिर आय का जरिया भी बना सकते हैं। सबसे पहले, अपने ब्लॉग का विषय चुनें। विषय रुचिपूर्ण , विशेषज्ञता से पूर्ण और प्रासंगिक हो । ब्लॉग को सफल बनाने के लिए डिजिटल मार्केटिंग और सोशल मीडिया मार्केटिंग आवश्यक है । ब्लॉग जितने प्रसिद्ध होंगे कमाई भी उतनी ही अधिक होगी । ब्लॉग लेखन में ब्लॉग की लोडिंग स्पीड, मोबाइल फ्रेंडली डिज़ाइन से ब्लॉग को फेसबुक, इंस्टाग्राम, लिंक्डइन और ट्विटर पर अपनी पोस्ट को प्रमोट करें।

पेड विज्ञापन , ईमेल मार्केटिंग का उपयोग करें नियमित रूप से उपयोगकर्ताओं को उपयोगी सामग्री और ऑफ़र भेजे अपने ब्लॉग पर विज्ञापन दिखाने के लिए Google AdSense का उपयोग करें। जब कोई विज़िटर विज्ञापन पर क्लिक करता है, तो आपको पैसा मिलता है । अमेज़न, फ्लिपकार्ट जैसे प्लेटफॉर्म्स के एफिलिएट प्रोग्राम्स जॉइन करें। प्रोडक्ट्स के लिंक अपने ब्लॉग पर लगाएं और कमीशन पाएं। ई-बुक्स, ऑनलाइन कोर्स, ट्यूटोरियल्स या टेम्प्लेट्स बनाकर बेचे । ब्लॉगिंग और डिजिटल मार्केटिंग का संयोजन आपको न केवल एक सफल ब्लॉगर बना सकता है, बल्कि आपको एक ब्रांड के रूप में भी स्थापित कर सकता है। यदि आप इसे सही रणनीति के साथ शुरू करें, तो यह आपके लिए एक स्थायी आय का स्रोत बन सकता है।

3. विषय विशेष पर एक्सपर्ट ब्लॉगर:- आज के डिजिटल युग में, "विषय विशेष पर एक्सपर्ट" बनकर ब्लॉगिंग करना न केवल आपको एक विशेषज्ञ के रूप में पहचान दिलाता है, बल्कि यह आपके ब्लॉग की विश्वसनीयता और सफलता में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। और ब्लॉगर को कमाई भी हो सकती है । "सब कुछ के लिए सबकुछ" लिखने के बजाय, किसी एक खास क्षेत्र को चुनें जिसमें आप:रुचि रखते हैं या विशेषज्ञता रखते हैं जैसे कि फिटनेस , योगा न्यूट्रिशन ,वजन घटाने के लिए विशेष सुझाव। टेक्नोलॉजी में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस या ब्लॉकचेन। शिक्षा में सिविल सर्विस परीक्षा की तैयारी। वित्त में पर्सनल फाइनेंस और निवेश। अच्छे ब्लॉगर बनने के लिये अपने चुने हुए विषय पर लगातार पढ़ाई और शोध करें। नई जानकारियों और उद्योग के ट्रेंड्स से अपडेट रहें। विशेषज्ञों के लेख, किताबें और केस स्टडी पढ़ें। पाठकों को वह जानकारी दें जो उन्हें कहीं और न मिले। सरल, रोचक और व्यावसायिक शैली में लिखें। चित्र, वीडियो, इन्फोग्राफिक्स का उपयोग करें ताकि सामग्री अधिक आकर्षक बने । अपने अनुभव, सफलता या विफलताओं का विवरण दें । एक्सपर्ट ब्लॉगर बनना एक दीर्घकालिक यात्रा है, जिसमें निरंतर मेहनत, गहन

अध्ययन और पाठकों की जरूरतों को समझने की क्षमता की आवश्यकता होती है। एक बार आप अपने विषय के विशेषज्ञ बन गए, तो आपकी पहचान और कमाई, दोनों में शानदार बढ़ोतरी होगी।

4. **ब्लॉगिंग कोच या मेंटर**:- ब्लॉगिंग कोच या मेंटर के रूप में कमाई करना आज के डिजिटल युग में एक प्रभावी तरीका है। अगर आपके पास ब्लॉगिंग, डिजिटल मार्केटिंग, और कंटेंट क्रिएशन का गहरा ज्ञान है, तो आप इसे दूसरों को सिखाकर अच्छा पैसा कमा सकते हैं। यहाँ इस क्षेत्र में कमाई के कुछ प्रमुख तरीके बताए गए हैं । आप नए ब्लॉगर्स को पेड वर्कशॉप या ऑनलाइन कोर्स के माध्यम से ब्लॉगिंग सिखा सकते हैं। ऐसे कोर्स में SEO, कंटेंट राइटिंग, डिजिटल मार्केटिंग, और वेबसाइट मॉनेटाइजेशन जैसे विषय शामिल हो सकते हैं। एक सब्सक्रिप्शन आधारित कम्युनिटी बनाएं जहाँ सदस्य मासिक शुल्क के बदले ब्लॉगिंग टिप्स, गाइडेंस और नेटवर्किंग का लाभ उठा सकें। ब्लॉगिंग और मार्केटिंग से संबंधित ई-बुक्स लिखें और उन्हें अपनी वेबसाइट या अन्य प्लेटफॉर्म्स जैसे अमेज़न पर बेचें ,एक बार बनाए जाने के बाद यह पासिव इनकम का अच्छा स्रोत बन सकता है। कंपनियों या व्यक्तिगत ब्लॉगर्स को SEO, कंटेंट प्लानिंग और ब्लॉग ग्रोथ में मदद से भी अच्छी कमाई हो सकती है । लाइव सेशंस आयोजित करें, जिसमें आप ब्लॉगिंग से संबंधित महत्वपूर्ण टॉपिक्स कवर कर सकते हैं। अपने छात्रों को ब्लॉगिंग के लिए उपयोगी टूल्स जैसे होस्टिंग, SEO टूल्स, और थीम्स के बारे में बताकर एफिलिएट लिंक से कमाई करें। ब्लॉगिंग, डिजिटल मार्केटिंग और अन्य संबंधित विषयों पर सेमिनार्स और कॉन्फ्रेंसेज में बोलने से आय की प्राप्ती होती है। **ब्रांड्स के साथ पार्टनरशिप और** सोशल मीडिया, वेबसाइट, और YouTube जैसे प्लेटफॉर्म्स के जरिए अपनी कोचिंग सेवाओं का प्रचार करे । अगर आप सही तरीके से मार्केटिंग और क्वालिटी सर्विस देते हैं, तो महीने में ₹50,000 से ₹2,00,000 या उससे ज्यादा कमाना संभव है। नए लेखकों को ब्लॉगिंग के तकनीकी और व्यावसायिक पहलुओं की ट्रेनिंग का व्यवसाय आज वर्तमान समय की मांग है ।

5. **कंटेंट राइटर के रूप में नौकरी**:- कंपनियों या डिजिटल एजेंसियों में नियमित रूप से ब्लॉग, आर्टिकल, और कंटेंट तैयार करना ही कंटेंट राइटिंग है । वर्तमान में कंटेंट राइटर के रूप में नौकरी करना एक बेहद ही लोकप्रिय और उभरता हुआ करियर विकल्प है। डिजिटल मार्केटिंग, ब्लॉगिंग, और ई-कॉमर्स के बढ़ते प्रभाव के कारण कंटेंट राइटिंग की मांग तेजी से बढ़ रही है। इस क्षेत्र में आप फ्रीलांस, पार्ट-टाइम या फुल-टाइम काम कर सकते हैं और अच्छी कमाई कर सकते हैं। भाषा पर अच्छी पकड़ , सटीक, स्पष्ट और रोचक लेखन , प्रामाणिक और सटीक जानकारी इकट्ठा करने की क्षमता , अलग-अलग टॉपिक्स और ऑडियंस के अनुसार लिखने की क्षमता के आधार पर स्वतंत्र लेखक के रूप में स्वयं का ब्लॉग शुरू करके पैसे कमा सकते है तथा **डिजिटल मार्केटिंग एजेंसियाँ** , न्यूज़ पोर्टल और मैगज़ीन ई-कॉमर्स कंपनियाँ (अमेज़न, फ्लिपकार्ट)। एडटेक और एजुकेशन प्लेटफॉर्म में फुल-टाइम जॉब्स करके अच्छी तनख़ा प्राप्त कर सकते है । कंपनियों और ब्रांड्स के लिए गेस्ट पोस्ट लिखकर ब्रांड्स के लिए सोशल मीडिया कैप्शन, पोस्ट्स और स्क्रिप्ट तैयार करके भी पैसे कमा सकते है। आईटी और टेक्नोलॉजी सेक्टर के लिए गाइड्स और डॉक्यूमेंट्स तैयार करके भी कमाई कर सकते है।**कंटेंट राइटर के रूप में सफल होने के लिए** नियमित रूप से लिखना और प्रैक्टिस करना , ट्रेंड्स को फॉलो कर नए टॉपिक्स पर काम करना , क्लाइंट्स के फीडबैक को गंभीरता से लेंना तथा डिजिटल मार्केटिंग का ज्ञान बढ़ाना आवश्यक है ।कंटेंट राइटिंग एक ऐसा करियर है जिसमें आप अपनी रुचि और मेहनत से सफलता की ऊंचाइयों तक पहुंच सकते हैं।

6. **घोस्ट राइटिंग (गोपनीय लेखन)**:-गोपनीय ब्लॉग लेखन (Anonymous Blogging) का मतलब है कि आप अपनी असली पहचान छुपाकर ब्लॉगिंग करते हैं। इसमें आपकी पहचान निजी रहती है और आप केवल अपने कंटेंट के माध्यम से ऑडियंस तक पहुंचते हैं। आप गोपनीय ब्लॉग पर एफिलिएट लिंक डाल सकते हैं और हर सेल पर कमीशन कमा सकते जैसे -अमेज़न, फ्लिपकार्ट या अन्य एफिलिएट नेटवर्क। यह आपकी पहचान के बिना पैसा कमाने का सुरक्षित तरीका है। आप ई-बुक्स, कोर्स, या डिजिटल टूल्स बना सकते हैं और उन्हें अपने ब्लॉग के माध्यम से बेच सकते हैं। स्पॉन्सरशिप पोस्ट से ही कमाई हो सकती है जैसे-जैसे आपका ब्लॉग लोकप्रिय होगा, ब्रांड्स आपके ब्लॉग पर विज्ञापन देने या स्पॉन्सर्ड पोस्ट पब्लिश करने में रुचि दिखा सकते हैं। आप अपने ब्लॉग के लिए पेड सब्सक्रिप्शन शुरू

कर सकते हैं। **व्यावसायिक लेखन, ग्राहक की जरूरतों को समझने की क्षमता** ट्रेंडिंग विषय पर ब्लॉग लिखे जिसमें लोग रुचि रखते हों। उदाहरण: टेक्नोलॉजी, गाइड्स, एंटरटेनमेंट, या व्यक्तिगत कहानियाँ । गोपनीय ब्लॉगिंग से कमाई में समय लग सकता है, लेकिन सही रणनीति के साथ आगे बढ़ने होगा । गोपनीय ब्लॉगिंग उन लोगों के लिए एक बेहतरीन विकल्प है जो अपनी पहचान को सुरक्षित रखते हुए अपने विचार और ज्ञान साझा करना चाहते हैं।

7.एडिटिंग और प्रूफरीडिंग:- ब्लॉग और लेखों को संपादित करना और व्याकरण, भाषा, और शैली को सुधारना यह एडिटर का महत्वपूर्ण कार्य है । ब्लॉग एडिटिंग और प्रूफरीडिंग से कमाई करना एक शानदार तरीका है, खासकर यदि आपके पास भाषा पर अच्छी पकड़ है तो आप **अपना खुद का ब्लॉग एडिटिंग बिजनेस शुरू कर सकते है ।** एक वेबसाइट बनाएं और अपनी सेवाएं जारी करे । ग्राहकों को बेहतर अनुभव देने के लिए कस्टम पैकेज ऑफर करें। अपने व्यवसाय को प्रमोट करने के लिए सोशल मीडिया और गूगल विज्ञापन का उपयोग करें। Upwork, Fiverr, Freelancer, और Workana जैसी वेबसाइट्स पर अपनी प्रोफाइल बनाएं। अपने कौशल, अनुभव और सैंपल वर्क्स को दिखाएं। ब्लॉगर्स और कंटेंट क्रिएटर्स को प्रूफरीडिंग और एडिटिंग की आवश्यकता होती है। इसलिए सोशल मीडिया (LinkedIn, Facebook ग्रुप्स) पर नेटवर्किंग करके क्लाइंट्स खोजें। कई एजेंसियां ब्लॉगर, वेबसाइट्स और कंपनियों के लिए कंटेंट तैयार करती हैं उनके साथ जुड़कर रेगुलर काम पा सकते हैं। प्रूफरीडिंग और एडिटिंग के बारे में वर्कशॉप या ऑनलाइन कोर्स ऑफर करके भी कमाई की जा सकती है। ई-बुक्स, रिसर्च पेपर, या थीसिस एडिटिंग जैसे बड़े प्रोजेक्ट्स लें। यह काम शुरुआत में धीमा हो सकता है, लेकिन जब आप नियमित ग्राहक बना लेंगे, तो आपकी कमाई बढ़ती जाएगी।

8. विजुअल कंटेंट क्रिएशन:-ग्राफिक डिज़ाइन और मल्टीमीडिया टूल्स की जानकारी के द्वारा ब्लॉग्स के लिए इन्फोग्राफिक्स, चित्र, और वीडियो सामग्री तैयार करना इसके अंतर्गत आता है । विजुअल कंटेंट क्रिएशन आज के डिजिटल युग में तेजी से बढ़ता हुआ क्षेत्र है। इस क्षेत्र में क्रिएटर्स अपने टैलेंट का उपयोग करके अच्छी खासी आय कमा सकते हैं। ग्राफ़िक डिज़ाइन करना जिसमें लोगो, बैनर, पोस्टर, सोशल मीडिया पोस्ट डिज़ाइन करना आता है । वीडियो एडिटिंग और प्रोडक्शन जिसमें यूट्यूब वीडियोज़, सोशल मीडिया रील्स, और एडवरटाइजमेंट के लिए वीडियो तैयार करना फोटोग्राफी और फोटो एडिटिंग । एनिमेशन और मोशन ग्राफिक्स वेबसाइट और यूजर इंटरफेस डिज़ाइन तथा सोशल मीडिया कंटेंट बनाना तथा कंपनियों और ब्रांड्स के लिए विजुअल कंटेंट बनाकर भी अच्छी खासी कमाई होती है। विजुअल कंटेंट क्रिएशन सिखाने के लिए ऑनलाइन कोर्स बनाकर भी कमाई कर सकते है। छोटे व्यवसायों को उनकी ब्रांडिंग और विजुअल कंटेंट बनाने में मदद करके भी आय प्राप्त कर सकते है । विजुअल कंटेंट क्रिएशन में मेहनत, क्रिएटिविटी और समय के साथ आप एक स्थिर और आकर्षक आय अर्जित कर सकते हैं।

9. पब्लिशिंग और मीडिया पार्टनरशिप:- पेशेवर लेखन और ब्रांड की जरूरतों के अनुसार लेखन क्षमता के आधार पर बड़े ब्रांड्स और मीडिया हाउसेस के लिए ब्लॉग सामग्री तैयार करना आता है । पब्लिशिंग और मीडिया पार्टनरशिप के द्वारा कमाई करना एक अत्यधिक प्रभावी तरीका है, खासकर यदि आपके पास कंटेंट क्रिएशन, मार्केटिंग और ब्रांड बिल्डिंग का अनुभव है। यह तरीका बड़े ब्रांड्स, छोटे व्यवसायों और व्यक्तिगत कंटेंट क्रिएटर्स के लिए आय के कई रास्ते खोल सकता है। पब्लिशिंग और मीडिया पार्टनरशिप के अनेकों प्रकार है जिसमें डिजिटल पब्लिशिंग आता है । ब्लॉग, ई-बुक्स, या मैगज़ीन का प्रकाशन। विज्ञापन, सब्सक्रिप्शन और स्पॉन्सर्ड कंटेंट के माध्यम से कमाई की जा सकती है। मीडिया पार्टनरशिप , इन्फ्लुएंसर पार्टनरशिप , ई-बुक्स और प्रिंट बुक्स , पॉडकास्ट और वीडियो पब्लिशिंग , विज्ञापन और सब्सक्रिप्शन , ब्रांड्स के लिए लेखऔर वीडियो, डिजिटल विज्ञापन Google AdSense, Mediavine जैसे प्लेटफॉम , स्पॉन्सर्ड पोस्ट्स ब्रांड्स को उनके प्रोडक्ट/सेवा का प्रमोशन करने के लिए कंटेंट बनाकर बेचना , डायरेक्ट विज्ञापन, सब्सक्रिप्शन और प्रीमियम कंटेंट।, एफिलिएट मार्केटिंग , इवेंट पार्टनरशिप्स , मीडिया पार्टनरशिप करके इवेंट्स, वेबिनार्स या वर्कशॉप्स से कमाई करें। लाइसेंसिंग और रॉयल्टी , पार्टनरशिप डील्स और कोलैबोरेशन आदि माध्यम से अच्छी कमाई की जा सकती है । गुणवत्ता पूर्ण कंटेंट , नेटवर्किंग मार्केटिंग , डेटा एनालिटिक्स , सही प्लेटफॉर्म का चुनाव जैसे ब्लॉग, यूट्यूब, या सोशल मीडिया , ई-पब्लिशिंग इन सभी के सही प्रयाग ,

सही रणनीति और कड़ी मेहनत के साथ, पब्लिशिंग और मीडिया पार्टनरशिप से एक स्थिर और दीर्घकालिक आय अर्जित की जा सकती है।

ब्लॉग लेखन में रोजगार के अवसरों की कोई कमी नहीं है, लेकिन इसमें सफलता पाने के लिए समर्पण, नियमितता और रचनात्मकता आवश्यक है। सही कौशल और सही रणनीति के साथ ब्लॉग लेखन को न केवल एक पेशा बल्कि एक लाभदायक करियर बनाया जा सकता है।

4. अनुवाद

4.1 साहित्यिक अनुवाद

4.1.1 साहित्यिक अनुवाद का सामान्य परिचय-

प्रस्ताविक: -**साहित्यिक अनुवाद अन्य अनुवाद प्रकारों से अधिक गंभीर,सूक्ष्म और बहुस्तरिय होता है। स्रोत भाषा की सामग्री जैसी की वैसी संवेदना,भाव और विचार के साथ लक्ष्य भाषा में तब्दील होना ही साहित्यिक अनुवाद कहलाता है।सही और सार्थक अनुवाद पुनःसृजन होता है। अच्छा और स्तरिय अनुवाद मूल कृति जैसा लगता है। एक सफल अनुवाद पाठक को मूल कृति जैसा अर्थ और आनंद देता है। साहित्यिक अनुवाद में न कुछ घटाना,न कुछ छोडना और न कुछ जोडना है।एक बोतल का इत्र दूसरी बोतल में उसी सुगंध के साथ आता है,उसी प्रकार साहित्यिक अनुवाद भी होता है।साहित्यिक अनुवाद के लिए दो भिन्न भाषा पर प्रभुत्व होना चाहिए। दो भिन्न संस्कृति की गहरी समझ हो, दो भिन्न समाज की सामाजिक संरचना,इतिहास,भूगोल, परिवेश , पर्यावरण का सामान्य परिचय हो तभी अच्छा और सार्थक साहित्यिक अनुवाद होता है। किसी कृति का अनुवाद करते समय मन में कुछ प्रश्न उपस्थित होने चाहिए,जैसे -प्रस्तुत ग्रंथ अनुवाद क्यों करें?क्या, उसकी आवश्यकता है? क्या ,ग्रंथ मेरे रुचि का है? क्या, प्रस्तुत विषय अच्छी तरह से मैं जानता हूँ? क्या ,दिए हुए निश्चित समय में अनुवाद पूर्ण होगा?ऐसे कई प्रश्नों के उत्तर के पश्चात ही साहित्यिक अनुवाद का कार्य प्रारंभ करना चाहिए।**

साहित्यिक अनुवाद की प्रक्रिया:- **यह प्रक्रिया अभिव्यक्ति से अनुभूति की ओर और अनुभूति से अभिव्यक्ति की ओर चलती है।यह मात्र भाषिक प्रक्रिया नहीं बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक सेतु है,जिसका दूत अनुवादक होता है, जो लेखक और ग्रंथ का मध्यबिंदु होता है।अत: साहित्यिक अनुवाद की जो प्रक्रिया है,वह कई चरणों से से पूर्ण होती हैं ।वे चरण हैं;जैसे-पाठ-पठण,पाठ-विश्लेषण,अन्तरण,प्रतिस्थापन और तुलनात्मक विश्लेषण।**

प्रथम चरण-पाठ-पठण:- **अनुवादक ने मूल पाठ को बडे मनोयोग से एक-दो बार पढना चाहिए और उसमें निहित अर्थ,भाव, विचार,आशय,विषय, शिल्प को सूक्ष्मता से समझना जरुरी है। परकाया प्रवेश से लेखकीय अनुभूति के पास जो अनुवादक जितना नजदीक जाता है,उतनी मात्रा अनुवाद अच्छा होता है। पाठ पढते समय कठिन तथा प्रतिशब्द नहीं मिलते हैं तो मूल पाठ में रेखांकन करना चाहिए।पाठ की विषय-वस्तु, प्रकृति और उद्देश्य को समझना जरुरी है।**

द्वितीय चरण-पाठ-विश्लेषण:-**यहाँ अनुवादक आंतरिक प्रक्रिया तय करता है। अनुवाद किसके लिए किया जा रहा है,यह बात पाठ विश्लेषण में अधिक महत्वपूर्ण होती है।इस चरण में मूल पाठ का आशय लक्ष्य भाषा में परिवर्तित किया जाता है।**

तृतीय चरण-भाषान्तरण:- -**इस चरण में मूल भाषा का कथ्य लक्ष्य भाषा में अंतरित होता है।अनुवादक सही भाषा ,सही वाक्यरचना,सही और सटीक प्रतीक का चयन करता है।वह देखता है कथ्य के साथ न्याय हो रहा है या नहीं। यह चरण अधिक कठिन होता है।**

चतुर्थ चरण-प्रतिस्थापन:- **वाक्य रचना,पदबंद्ध,प्रवाह,प्रतिछाया,शब्द संगति को लक्ष्य भाषा के पाठ में रखकर देखना अर्थात यह चरण भाषान्तरण के साथ-साथ चलता है।**

पंचम चरण-तुलनात्मक विश्लेषण:- **अनुवाद कार्य होने पर इतश्री हुई है ऐसा न समझकर लक्ष्य भाषा की संहिता को मूल पाठ से तुलना कर यह देखना चाहिए कि कहीं अर्थसंकोच ,अर्थविस्तार , अर्थोपदेश या कहीं अर्थ का अनर्थ तो नहीं हो रहा है। मूल पाठ का अर्थ अनूदित कृति में सही और सार्थक रुप में आता है तभी वह कृति मूल जैसी लगती है।इसलिए तुलनात्मक विश्लेषण अनुवाद प्रक्रिया का महत्वपूर्ण और अंतिम चरण है।**

4.1.2 साहित्यिक अनुवाद में रोजगार के अवसर

आज अनुवाद की आवश्यकता ही नहीं अनिवार्यता है।अंतरजाल ने विश्व को ग्राम बनाया। विदेश के उत्कृष्ट और प्रसिद्ध ग्रंथ हिंदी में आ रहे हैं,जैसे-युवाल हरारी का 'सेपियन्स' तथा हिंदी का उत्कृष्ट उपन्यास अँग्रेजी में अनूदित ही नहीं हुआ बल्कि बुकर पुरस्कार से सन्मानित हुआ जिसका नाम है-गीतांजलि श्री का 'रेतसमाधि'। जिसका अँग्रेजी में अनुवाद अमरिकन डेजी रॉकवेल ने 'टाम्ब ऑफ सैंड' नाम से किया । 'रेतसमाधि' की लेखिका गीतांजलि श्री और अनुवादक को वर्ष 2022 का बुकर पुरस्कार प्राप्त हुआ जिसकी राशि 50000 डाॅलर थी। अर्थात साहित्यिक अनुवाद का उज्वल भविष्य है। 2022 में साहित्यिक अनुवाद के लिए भारतीय साहित्य को मिला यह पहला बुकर पुरस्कार है। उसी भाँति वर्ष 1913 में रवींद्रनाथ टैगौर के 'गीतांजलि' को पहला नोबेल पुरस्कार मिला वह अँग्रेजी में अनूदित 'सॉन्ग ऑफ़ ऑफ़रिंग्स' काव्य संग्रह को ।यह अनुवाद स्वयं उन्होंने किया।दुनिया को संत कबीर , रवींद्रनाथ टैगौर द्वारा हिंदी से अँग्रेजी में 'वन हंड्रेड पोएम्स ऑफ़ कबीर' कविताओं का अनुवाद किया। दुनिया के लोगों ने कहा कि कबीर मात्र कवि और भक्त ही समाज सुधारक हैं तब कहाँ हमारी आँखें खुल गई। अनुवाद के बिना न भारत से जुड सकते हैं और न दुनिया से। अनुवाद के लिए पुरस्कार की मुहर किंमती होती है क्योंकि जब कोई ग्रंथ ज्ञानपीठ तथा साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित हो जाता है तब वह ग्रंथ तुरंत भारत की सभी भाषाओं अनुवादित हो जाता है और उसे उत्सुकतावश अधिकत्तर पाठक पढते हैं।अत: साहित्यिक अनुवाद से जो अर्थप्राप्ति होती है,उसकी चर्चा निम्नांकित मुद्दों के जरिए-

(1) अकादमिक अनुवाद से अर्थप्राप्ति:- **साहित्य अकादमी-दिल्ली,राष्ट्रीय पुस्तक न्यास-दिल्ली-NBT(1957),केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा तथा राज्यों की अकादमी,भारतीय अनुवाद परिषद जैसी सरकारी संस्थाओं के साथ रजा फाऊन्डेशन ,दिल्ली जैसी कई सरकारी तथा निजी संस्थाओं की ओर से साहित्यिक अनुवाद के लिए आर्थिक सहायता मिलती है। इन संस्थाओं की ओर से एक शब्द के अनुवाद के लिए 1रु. से 5रु.तक मिलते हैं।एक पृष्ठ अनुवाद के लिए 400/500 रु. मिलते हैं। इन स्स्थाओं द्वारा साहित्यिक अनुवाद की अच्छी पहल अनुवाद क्षेत्र में कारगर साबित हो रही है।**

(2) विभिन्न प्रकाशकों से अर्थप्राप्ति:- **हिंदी में कई निजी प्रकाशन संस्थाएँ हैं,जो अनुवाद पर विशेष कार्य कर रही हैं,जैसे हिंदी पेंगुइन बुक इंडिया,राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली आदि। इन प्रकाशनों ने अँग्रेजी,फ्रेंच,रुसी,जर्मनी और जापानी से अनेक ग्रंथों का अनुवाद करवाया है। देश-विदेश के ग्रंथों का जिन्होंने अनुवाद है ,उन्हें प्रकाशकों की ओर से अच्छी अर्थ प्राप्ति होती है,यह सर्व विदित है। आज कल प्रकाशक पैसे देकर ही साहित्यिक कृतियों का अनुवाद करवाते हैं। पाठक भी अनूदित कृतियों को बडी उत्सुकता से पढ रहे हैं,जिससे ग्रंथों की बिक्री हो रही है। जिसका लाभ प्रकाशकों को रहा है।इसलिए कई प्रकाशक पैसे देकर अनुवाद करवा कर छाप रहे हैं,जिसका लाभ अनुवादकों को हो रहा है। मराठी में मेहता प्रकाशक,पुणे ने सबसे अधिक विदेशी ग्रंथ अनूदित किए हैं।**

(3) अधिकत्तर अर्थप्राप्ति कथा साहित्य से:- **एक जमाना था अधिकत्तर लोग कविता पढते थें और अधिकत्तर काव्यग्रंथ प्रकाशित होते थें। लेकिन आज अधिकत्तर पाठक कहानी,उपन्यास और आत्मकथा जैसी विधाओं की कृतियों को पढ रहे हैं। इसलिए आज अधिकत्तर अनुवाद कहानी,उपन्यास और आत्मकथाओं के हो रहे हैं।वैसे कविता का अनुवाद करना भी अधिक कठीन होता है। आज उत्कृष्ट लेखन कथा साहित्य में रहा है क्योंकि वर्तमान समय की सामाजिक संरचना अधिक जटिल और बहुस्तरीय है,जिसकी अभिव्यक्ति कथा साहित्य में अधिक कारगर साबित हो रही है।**

(4) व्यावसायिक अनुवादक:- **अनुवादक दो प्रकार के होते हैं ;जैसे - 1.सेवाभावी वृत्ति और 2.व्यावसायिक अनुवादक।कुछ अनुवादकों ने साहित्य की सेवा अविरत रुप से की है।उन अनुवादकों ने किसी प्रकार की अपेक्षा न रखते अनुवाद का कार्य किया ,जैसे-वेदकुमार वेदालंकार जी ने समग्र तुकाराम,संत ज्ञानेश्वर ,समग्र महात्मा फुले और**

डॉ.सूर्यनारायण रणसुभे जी ने मराठी की दलित आत्मकथाएँ तथा नाटकों का अनुवाद हिंदी में किया है। इसी प्रकार प्रो.केशव प्रथमवीर, प्रो.रामजी तिवारी, प्रो. अर्जुन चव्हाण, प्रो.दामोदर खडसे जैसे विद्वानों ने सेवाभाववृति से साहित्यिक अनुवाद किये हैं। हिंदी में कुछ लोगों ने व्यावसायिक दृष्टि से अनुवाद किए हैं।व्यावसायिक दृष्टि से अनुवाद करना कोई गलत नहीं है। हाँ,उसमें स्तरियता हो । दिनचर्या चलाने हेतु पूर्ण समय कोई अनुवादक अनुवाद करता तो यह अच्छी बात है। हिंदी में कई लोगों ने ऐसे अनुवाद किए हैं। देश- विदेश में ऐसे अनुवादों की बहुत माँग हैं। आज कई छात्रों को उच्च शिक्षा के बाद भी नौकरी नहीं लगती है तो ऐसे छात्र अनुवाद कौशल से रोजगार प्राप्ति हेतु साहित्यिक रचनाओं का अनुवाद करेंगें तो अभिनंदनीय कार्य होगा और रोजगार भी मिलेगा।आवश्यकता है छात्रों में अनुवाद कौशल विकसित हो। अहिंदी भाषिक छात्रों के लिए यह सुनहरा अवसर है क्योंकि अहिंदी भाषिक छात्रों को दो-तीन भाषाएँ आती ही हैं।अतः व्यावसायिक अनुवाद से रोजगार प्राप्ति के साथ सामाजिक-सांस्कृतिक प्रतिबद्धता भी सिद्ध होती है।

(5) पुरस्कार से अर्थ प्राप्तिः- आज सरकारी तथा निजी संस्थाओं की ओर से साहित्यिक अनुवाद करने पर पुरस्कार के रुप में पाँच-पाँच लाख प्राप्त हुए हैं,जो अभिनंदनीय कार्य है। साहित्यिक अनुवाद के लिए सबसे अधिक पुरस्कार दक्षिण भारत के अनुवादकों को मिलें हैं।भारतीय भाषाओं की प्रसिद्ध रचनाओं का सबसे अधिक साहित्यिक अनुवाद हिंदी में या हिंदी से दक्षिण भारतीयों ने ही किया है। दक्षिण भारत में पढाने हेतु कई उत्तर से कई हिंदी भाषिक हिंदी अध्यापक आये हैं ,उन्होंने अधिकत्तर अनुवाद हिंदी में किए हैं। हाँ,यह बात सही है कि मातृभाषा में अनुवाद करना अधिक सहज होता है और वह अधिक अच्छा भी बनता है। अनुवाद करना यह कष्टसाध्य कार्य है लेकिन दो भाषाओं और संस्कृतियों के बीच सेतु का कार्य अनुवाद करता है। वह पुर्नःसृजन है। सबसे अधिक ज्ञानपीठ पुरस्कार दक्षिण भारतीय भाषाओं को मिलें हैं,जिससे दक्षिण भारतीय रचनाओं के अधिकत्तर अनुवाद सभी भारतीय भाषाओं में हुए हैं और उन अनूदित रचनाओं को उत्कृष्ट अनुवाद के लिए कई पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं,जिनकी राशि दो-तीन लाख रु.तक हैं। यह अभिनंदनीय कार्य है।नये पीढी के डॉ.गोरख थोरात ने वर्ष 2023 में राम बोरगावकर के 'नदिष्ट' उपन्यास का उत्कृष्ट अनुवाद हिंदी में किया है। 'नदिष्ट' पढते समय मूल रचना का आनंद मिलता है। अनुवाद इतना सुंदर हुआ कि मैंने एक ही बैठक में पूरा उपन्यास पढा,जिसका श्रेय अनुवादक को जाता है। इस अनुवाद के लिए गोरख थोरात को पुरस्कार के रुप में उन्हें दो लाख रु. की राशि प्राप्त हुई । पुरस्कार की राशि से पैसा कमाना प्रधान उद्देश्य नहीं होता है लेकिन आज अनेक अनुवाद के लिए मिलने वाली पुरस्कार राशि अत्यंत सम्मानजनक होती है। मुझे लगता है कि पहले कि तुलना में आज साहित्यिक अनुवाद के लिए अच्छे दिन आये हैं। पुरस्कार रोजगार का साधन नहीं है लेकिन अच्छे साहित्यिक अनुवाद के लिए सम्मानजनक राशि मिलती है।

(6) बेस्टसेलर से अर्थप्राप्तिः- अर्थात सबसे अधिक बिकनेवाली लोकप्रिय किताब। जो बेस्टसेलर किताब होती है ,उसका अनुवाद अधिकत्तर भाषाओं में होता है; जैसे-हेक्टर गार्सिया और फ्रान्सेस्क मिरालेस की 'इकिगाई'। यह जापानी से हिंदी में अनूदित किताब है।खूब बिकी। आनंददायी जीवन जीने के लिए सचमुच अच्छी किताब है।यह किताब पढनी चाहिए क्योंकि यह बहुत अच्छी और पठनीय किताब है। रोजगार की दृष्टि से बेस्टसेलर किताब अधिक महत्वपूर्ण और लाभदायक होती है । हाँ,वह लोकप्रिय होती है लेकिन कई बार क्लासिक्ल नहीं होती है।क्योंकि हर पॉपुलर रचना क्लासिकल नहीं होती और हर क्लासिकल रचना पॉपुलर नहीं होती।

(7) स्थापित अनुवादक को अर्थ प्राप्तिः- जो अनुवादक अनुवाद क्षेत्र में स्थापित हो चुके हैं,जिनका नाम है उन्हें साहित्यिक अनुवाद का अधिकतर कार्य मिलता है। क्योंकि उन्हें अनुवाद कला का अच्छा ज्ञान और समझ होती है। वे समय सीमा में अनुवाद करा देते हैं।लेखक तथा प्रकाशक इन्हीं को प्रधानता देते हैं लेकिन नये अनुवादक को भी अच्छा साहित्यिक अनुवाद करने पर सम्मान और पैसा मिलता है। अतः नये अनुवादकों को भी अच्छी रोजगार की प्राप्ति होती है। अतः जहाँ एक ओर साहित्यिक अनुवाद से पद,प्रतिष्ठा और पैसा मिलता ही है तो दूसरी ओर यह सामाजिक-सांस्कृतिक सेतु का कार्य है।

4.2 मशीनी अनुवाद

4.2.1 मशीनी अनुवाद का सामान्य परिचय:-

भारत बहुभाषी देश है। 'भारतीय लोकभाषा सर्वेक्षण' के अनुसार भारत में 780 भाषाएँ बोली जाती है। सांस्कृतिक,सामाजिक समन्वय तथा ज्ञान के आदान-प्रदान हेतु अनुवाद की अत्यधिक आवश्यकता है। लेकिन मनुष्य द्वारा अनुवाद की अपनी सीमा है। ऐसे अवसर पर मशीनी अनुवाद का कार्य अधिक कारगर साबित होगा। मशीनी अनुवाद के पास गति है। मशीनी द्वारा सैंकडों भाषाओ में अनुवाद होता है।मनुष्य के लिए अवगत भाषाओं की अपनी मर्यादा है। लेकिन मशीनी अनुवाद एक ही समय जब चाहें,जहाँ चाहें वहाँ भारत की 22 भाषाओं का अनुवाद कर सकता है। इससे समय,धन,श्रम की बचत होती है और उसके द्वारा विशालकाय अनुवाद भी संभव है। मशीन से सैकडों पृष्ठों का अनुवाद चंद मिनटों में पूर्ण होता है।

मशीन अनुवाद यानी कंप्यूटर के माध्यम से एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करना अर्थात स्रोत भाषा की सामग्री लक्ष्य भाषा में मशीन द्वारा ले जाने की प्रणाली ।यह प्रणाली शब्द सामग्री ,व्याकरण की नियमावली के अनुसार एल्गोरिदम के आधारपर होती है।आज ए.आय. से और अधिक अच्छे अनुवाद हो रहे हैं। एल्गोरिदम की स्मृति जितनी व्यापक,गहरी और सूक्ष्म होगी अनुवाद उतना ही अच्छा होगा।मशीनी अनुवाद भी मनुष्य जैसा विश्लेषण,अंतरण और पुनर्गठन की प्रणाली से ही पूर्ण होता है।

मशीनी अनुवाद का विकासक्रम :-

(अ) विदेश में मशीनी अनुवाद:-

मशीनी अनुवाद का प्रारंभ सन1947 से वारेन वीवर का 'ऑन ट्रांसलेशन' लेख से माना जाता है।इसका सही प्रयोग 1954 में जार्ज टाउन विश्वविद्यालय,वाशिंगटन (अमरिका) के मशीन ट्रांसलेशन तथा लैंग्वेज प्रोजेक्ट के अंतर्गत पहली बार 60 वाक्यों का अँग्रेजी से रुसी में अनुवाद हुआ । इस दौरान अमरिका और सोवियत संघ में होड लगी थी।साथ ही1966 में अमरिका एल्पैक कमिटी (ALPAC-Automatic Language Processing Advisory Committee) , 1976 में कनाडा में कनाडा ब्राडकस्टिंग कार्पोरेशन ने टॉम -मैटो(Taum-Meteo) ,सारब्रुकेन विश्वविद्यालय से सूसी(Susy),क्योतो विश्वविद्यालय और जापान से एम.यू.(MU) मशीनी अनुवाद तंत्र विकसित हुए।

(ब) भारत में मशीनी अनुवाद:-

आई.आई.टी कानपुर,आई.आई.टी.मुंबई,प्रगत संगणन विकास केंद्र(C-DAC), भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मुंबई, आई.आई.आई.टी.हैदराबाद, सुपर इंफोसा ॅफ्ट,नई दिल्ली,भारतीय भाषाओं के लिए प्रौद्योगिकी विकास(TDIL-Technology Development for Indian Languages) आदि संस्थाओं ने भारतीय भाषाओं के लिए मशीनी अनुवाद प्रणाली विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।1980 आई.आई.टी.कानपुर ने 'अक्षर भारती' नामक मशीनी अनुवाद प्रणाली राजीव संगल व विनीत चैतन्य ने अंतरभाषा आधार पर भारतीय भाषाओं के पार्सर और जेनरेटर विकसित कर कार्य किया ।आर.एम.के.सिन्हा,राजीव संगल आदि विद्वजनों ने भारतीय मशीनी अनुवाद में अँग्रेजी व्याकरण पद्धति को नकार कर पाणिनी व्याकरण को आधार बनाया 1992 में आई.आई.टी.कानपुर ने 'आंग्ल भारती' उदाहरण आधारित मशीनी अनुवाद तंत्र से अँग्रेंजी-हिंदी मशीनी अनुवाद आरंभ किया ,जो स्वास्थ्य मंत्रालय की सेवा के लिए बनाया था।

सन 1995-2000 के दौरान सी-डैक ने 'मात्रा' (Matra)अनुवाद तंत्र विकसित किया ,जिसका उदेश्य समाचारों का अनुवाद करना था। सन 1989-1999 के दौरान सी-डैक (पुना) ने 'मंत्रा'(MANTRA- Machine associated Translation) का

विकास किया,जो भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों तथा राज्यसभा में सबसे अधिक प्रयोग हुआ। सरकारी कार्यालयों में अँग्रेजी से हिंदी और हिंदी से अँग्रेजी कार्यालयीन अनुवाद हेतु प्रयोग किया;जो आज भी अच्छी मात्रा में कार्यरत है। यह स्मृति आधारित मशीनी अनुवाद है। भारत सरकार के कार्यालयों के लिए सबसे अधिक लाभकारी सिद्ध हुआ है। इसके विकास के लिए भारत सरकार गृहमंत्रालय के राजभाषा विभाग ने 1997 में 1.5 करोड आर्थिक सहयोग दिया था। इसका अधिकत्तर अनुवाद सही होता है,अल्पमात्रा में मनुष्य सहयोग की आवश्यकता होती है। इसके साथ ही मशीनी अनुवाद में 'अनुवादक','अनुसारक', "शिव','शक्ति' आदि मशीनी अनुवाद तंत्र कार्यरत हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषाओं के साथ हिंदी को जोडने के लिए आई.आई. टी.कानपुर ने यूनिवर्सल नैटवर्किंग लैंग्वेज (UNL)अच्छा कार्य कर रहा है। आज विश्व की 15-16 भाषाओं के साथ मशीनी अनुवाद का कार्य जारी है,जिसमें पुष्पक भट्टाचार्य की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

(क) गूगल और मायक्रोसॉफ्ट द्वारा अनुवाद:-

वर्तमान समय में उपर्युक्त मशीन अनुवाद से अधिक गूगल और मायक्रोसॉफ्ट के ऑनलाईन अनुवाद अधिक कारगर साबित हो रहे हैं।जैसे-यदि हम गूगल में http://translate.google.com डालेंगे तो बाएँ -दाएँ में दो बॉक्स आयेंगे।बाएँ बॉक्स में आपको जिस भाषा के द्वारा अनुवाद करना है वह डेटा डालिए।अर्थात वहाँ स्रोत सामग्री होती है। आप भाषा चुनकर Traslate बटन पर क्लिक करोगे तो आपको दाएँ ओर के बॉक्स में आप जिस भाषा में चाहते उस भाषा में 90 प्रतिशत सही अनुवाद प्राप्त होगा।अर्थात वह लक्ष्य भाषा होगी। साथ गूगल लेंस(google Lens) दृष्टि आधारित Android App है,जो अनजान वस्तुओं की जानकारी पाने के साथ पाठ की सामग्री को फोटो कॉपी के द्वारा मंगल फॉन्ट टंकण के साथ उस साम्रगी का 90प्रतिशत सही अनुवाद होता है। गूगल के साथ मैक्रोसॉफ्ट वर्ड में भी अच्छा अनुवाद होता है।मैक्रोसॉफ्ट वर्ड में REVIEW के अंतर्गत Translate में ऑनलाइन अनुवाद होता है।

मशीनी अनुवाद की प्रक्रिया :-

अनुवाद करते समय पाठ विश्लेषण पद-निरुपित्र (Parser) सॉफ्टवेयर द्वारा होता है,जो स्रोत भाषा के पाठ के व्याकरण के अनुसार वाक्य का विश्लेषण कर अन्वयार्थ लगाता है। इसके बाद शब्द-विश्लेषत्र (Lexical Analyser) सर्वप्रथम शब्द की क्रिया को पहचानता है और स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के पर्यायी शब्दों का मिलान कराता है। क्रिया को पहचानने के बाद 'क्रिया पदबंध विश्लेषित्र (Verb Pharse Analyser)सॉफ्टवेयर के द्वारा धातु,काल आदि का विश्लेषण करता है।शब्द-संचय (Database for Lexion)में एकभाषी -बहुभाषी शब्दकोश होते हैं। उसमें से अनुवादित्र (Translater) सॉफ्टवेयर एकभाषी -बहुभाषी शब्दकोश से पर्यायी शब्दों को ढूँढता है और जनित्र (Generator) के द्वारा लक्ष्यभाषा के व्याकरण के अनुसार वाक्य का अनुवाद करा देता है।ऐसी मशीनी अनुवाद की प्रक्रिया होती है। जैसे-

स्रोत भाषा-पद-निरुपित्र—> शब्द विश्लेषित्र—> क्रिया पदबंध विश्लेषित्र—>शब्दसंचय—>अनुवादित्र—> जनित्र-लक्ष्यभाषा

4.2.2 मशीनी अनुवाद में रोजगार के अवसर:-

आज के गतिशीलयुग में मशीनी अनुवाद समय की माँग है और अनुवाद क्षेत्र में मनुष्य की भी अपनी सीमा है।मशीन द्वारा अत्यंत अल्पावधि में कई पृष्ठों का अनुवाद होता है। पहले की तुलना में आज मशीनी अनुवाद जिस भाषा में चाहे उस भाषा में और जब चाहे तब अत्यंत स्तरिय अर्थात लगभग नब्बे प्रतिशत सही अनुवाद दे रहा है लेकिन

सौ प्रतिशत नहीं । जहाँ कहीं शब्दगत,वाक्यगत,लिंगगत ,क्रियागत गलतियाँ होती है वह सभी गलतियाँ मनुष्य द्वारा दुरुस्त की जा सकती है। दुरुस्ती हेतु अच्छे अनुवादकों की आवश्यकता है। इसलिए मशीनी अनुवाद के क्षेत्र में कई रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे जिनका विवरण निम्नांकित मुद्दों के जरिये-

(1) मशीनी अनुवाद में भाषागत रोजगार:- **प्रकाशन संस्था, सरकार तथा निजी व्यवसाय के स्तर पर बडी मात्रा में मशीनी अनुवाद हो रहा है।मशीनी अनुवाद से विशालकाय अनुवाद होते हैं।सैंकडों अनुवादकों के द्वारा जो कार्य नहीं होगा वह मशीन करती है। अर्थात अनुवादक और और मशीनी अनुवाद दोनों एक-दूसरे के पूरक और सहयोगी हैं।मशीनी अनुवाद में व्याकरण तथा वर्तनीगत कुछ गलतियाँ रह जाती है। भाषागत कई त्रुटियाँ रह जाती है।उन करेक्शन हेतु कई अनुवादकों की आवश्यकता होती है।यह रोजगारप्राप्ति का अच्छा क्षेत्र है।क्योंकि मशीन पूर्णता-से सौ प्रतिशत सही अनुवाद नहीं करती। इसलिए पाठ का भावगत,आशयगत, भाषागत ,शिल्पगत के प्रूफ-पठन की आवश्यकता है। इसके लिए कई अनुवादकों की माँग है।**

(2) भारत के विशाल ज्ञान का परिचय मशीनी अनुवाद से:- **भारत का विशाल ज्ञान दुनिया को उसी समय ज्ञात होगा जिस समय उसका अनूदित रुप इंटरनेट पर उपलब्ध होगा। इतना अनुवाद मनुष्य द्वारा संभव नहीं है।वह संभव होगा मशीनी अनुवाद की सहायता से । आज की दुनिया में जानकारी सबसे बडी शक्ति है। उस शक्ति पर प्रभुत्व जताने और अर्थ कमाने हेतु भविष्य में कई कंपनियाँ मशीनी अनुवाद से विभिन्न प्रकार का साहित्य अनूदित करेगी । मशीनी अनुवाद व्दारा कार्य करवा ने के लिए कई युवाओं की आवश्यकता होगी। इसलिए मशीनी अनुवाद के क्षेत्र में अनंत रोजगार की संभावनाएँ उपलब्ध होगी।**

(3)संवेदना के द्वारा परकाया प्रवेश से रोजगार **:- प्रारंभिक मशीनी अनुवाद शब्दकोश पर निर्मित था । तब मात्र मशीन द्वारा शब्दानुवाद होता था। लेकिन तदनंतर एल्गोरिदम से मशीनी अनुवाद व्याकरणिक नियमावली के आधार पर हुआ जिससे इस अनुवाद प्रणाली में प्रगति हुई।जिसका सकारात्मक पक्ष यह है कि मशीन अनुवादक की व्याकरणिक नियमावली का आधार पाणिनी का व्याकरण है और भारतीय भाषाओं की व्याकरणिक बुनियाद पाणिनी का व्याकरण है । मशीनी अनुवाद में एल्गोरिदम के साथ कृत्रिम बुद्धिमता (AI)ने तो धमाल कर दिया। क्योंकि कृत्रिम बुद्धिमता के पास मनुष्य जैसा तर्क,समझ और व्यवहार है,जिससे मशीनी अनुवाद और अधिक बेहतर हो रहा है ।लेकिन उसके पास मनुष्य जैसी संवेदना कहाँ है? अनुवादक साहित्यिक अनुवाद के लिए संवेदना के रास्ते से परकाया प्रवेश करता है। कार्यालयीन अनुवाद करना मशीन को संभव है लेकिन साहित्यिक अनुवाद के लिए संवेदनात्मक धरातल पर अनूदित पाठ को अंतिम रुप देने के लिए अनुवादकों की आवश्यकता पढेगी। इसलिए प्रस्तुत क्षेत्र में और अधिक रोजगार उपलब्ध होने की अनंत संभावनाएँ हैं।**

(4) सांस्कृतिक ज्ञान के अपूर्ति की पूर्ति मनुष्य द्वारा:- **दुनिया में सबसे श्रेष्ठ ग्रंथ अपनी मातृभाषा में ही लिखें हैं। मातृभाषा मात्र भाषा नहीं होती है बल्कि उसमें संस्कृति छिपी होती है। वह अपने संस्कृति की वाहक होती है। मशीनी अनुवाद के एल्गोरिदम में भाषिक तथा व्याकरणिक संरचना है लेकिन संस्कृति को एल्गोरिदम में सूचीबद्ध करना कठिन-सा है।क्योंकि व्याकरण की भाँति संस्कृति को निश्चित साँचे में बंदिस्त नहीं किया जा सकता,जैसे - 'वेळअमावस्या' जैसा त्यौहार महाराष्ट्र के कनार्टक सीमावर्तिय क्षेत्र में मनाया जाता है ।इस त्यौहार में प्रयुक्त कुछ शब्द कहीं अन्य जगह पर नहीं मिलेंगे। मराठी में 'पोळी' शब्द के लिए हिंदी में कोई पर्यायी शब्द नहीं है क्योंकि वह व्यंजन हिंदी बेल्ट में पकाया ही नहीं जाता। हाँ,कुछ अनुवादकों ने उसे मिठ्ठी रोटी जरुर कहा है। 'पोळी" के लिए यह शब्द सार्थक अर्थ नहीं है। मशीनी अनुवाद के लिए सांस्कृतिक अर्थ देने में उसकी अपनी सीमा है।वहाँ अनुवादक ही विकल्प होगा। अनुवादक दोनों भाषा को ही नहीं बल्कि दोनों संस्कृतियों गहराई जानता है। इसलिए मशीनी अनुवाद में रोजगार के अवसर उपलब्ध हैं।**

(5) मशीनी अनुवाद के तंत्र से रोजगार:- **मशीनी अनुवाद के लिए अनुवादक को संगणक,टंकण ,मुद्रित शोधन तथा मशीनी अनुवाद तंत्र का ज्ञान होना चाहिए। कई अनुवादक स्तरिय अनुवाद करते हैं लेकिन मशीनी अनुवाद का**

कौशल पिछली पीढी को ज्ञात नहीं है,उनके लिए मशीनी अनुवाद से रोजगार नहीं मिलेगा।लेकिन नई पीढी नेटीजन की पीढी है, जिससे नई पीढी के लिए अधिक रोजगार मिलेगा। प्रस्तुत कौशल से जहाँ एक ओर नई पीढी के लिए रोजगार मिलेगा तो दूसरी ओर उनकी सामाजिक प्रतिबद्धता भी सिद्ध होगी।4.3 कार्यालयीन अनुवाद और रोजगार के अवसर

भारतीय संविधान के 343 के अनुसार हिंदी इस देश की राजभाषा है। राजभाषा का तात्पर्य सरकारी या कार्यालयीन कामकाज की भाषा ,जो हिंदी है। राजभाषा अधिनियम 1963की धारा (3)(3)में निर्दिष्ट है कि केंद्र सरकार के कार्यालयों के सभी दस्तावेजों में हिंदी और अँग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जायेगा। भारत बहुभाषिक होने से कार्यालयीन अनुवाद की आवश्यकता है । कार्यालयीन अनुवाद का अलग महत्व है।कार्यालय से कार्यालयीन शब्द बना है। कार्यालय वह स्थान है जहाँ सरकारी या निजी कामकाज होता है और अनुवाद का अर्थ है एक भाषा में व्यक्त विचार दूसरी भाषा में मूल अर्थ के साथ ले जाना। अर्थात कार्यालयीन अनुवाद का अर्थ है सरकारी कामकाज में प्रयुक्त अनुवाद। राजभाषा अधिनियम 1976 के अनुसार केंद्र सरकार और 'क' वर्ग राज्यों में कार्यालयीन कामकाज हिंदी में ,'ख' वर्ग राज्यों के साथ हिंदी और अँग्रेजी में तथा 'ग' वर्ग के राज्यों के साथ अँग्रेजी में कार्यालयीन व्यवहार होता है,जिससे केंद्र तथा राज्य सरकार के कार्यालयों में हिंदी में या हिंदी से विभिन्न कार्यालयों में अनुवाद होता है। 'क" वर्ग के राज्य में - उत्तर प्रदेश,मध्यप्रदेश,हिमाचल प्रदेश,राजस्थान,हरियाणा, बिहार,झारखंड; 'ख' वर्ग में गुजरात,महाराष्ट्र,पंजाब और 'ग' वर्ग में कर्नाटक,तेलंगाना,आंध्रप्रदेश,तमिलनाडु,केरला,गोवा,पश्चिम बंगाल,उडिसा तथा ईशान भारत के राज्य आते हैं। भारत में ही नहीं विदेश के भारतीय दूतावास में हिंदी में या हिंदी से कार्यालयीन अनुवाद होता है। केंद्र, राज्य,संसद,विधान मंडल जैसे कई क्षेत्र हैं ,जिसमें हिंदी अनुवादक,हिंदी अधिकारी,उपनिदेक,निदेशक जैसी कई नौकरियों की अनंत संभावनाएँ हैं। उन क्षेत्रों का विवरण निम्नांकित है-

(1) भारतीस संसद तथा विधान मंडल में रोजगार के अवसर**:- भारतीय संविधान के राजभाषा के संवैधानिक उपबंधों के भाग-5(120) के अनुसार संसद में सांसद हिंदी और अँग्रेजी में अपने विचार रख सकते हैं लेकिन किसी दक्षिण या ईशान भारत जैसे राज्य के सांसद को अपनी मातृभाषा में बोलना है या यह दोनों भाषाएँ नहीं आती हैं तो लोकसभा के अध्यक्ष की अनुमति से वह सांसद सदन को मातृभाषा से संबोधित कर सकता है। उस भाषण को हिंदी और अँग्रेजी में अनूदित करना अनिवार्य होता है। संसद के सदन में जो सांसद हिंदी में भाषण देते हैं,उनके भाषण अँग्रेजी में या जो सांसद अँग्रेजी में भाषण देते हैं,उनके भाषण हिंदी में अनूदित किए जाते हैं। साथ ही सरकारी -गैरसरकारी विधयकों का अनुवाद तथा सांसदीय कार्यवाही का लेखा-जोखा,कार्यसूची,प्रश्न सूची,अल्प सूचना,संसदीय बजट,समिति प्रतिवेदन,संसदीय समाचार,ज्ञापन,टिप्पण,प्रारुपण,कार्यवृत आदि कागजातों एवं विभिन्न पत्रों का हिंदी में या हिंदी से अँग्रेजी में अनुवाद अनिवार्य रुप में किया जाता है।संसद में लिखित तथा मौखिक दोनों प्रकार के अनुवाद किए जाते हैं। इसलिए हिंदी अनुवादकों,हिंदी अधिकारियों तथा आशु अनुवादकों के लिए संसद तथा विधान मंडल में रोजगार की कई संभावनाएँ उपलब्ध हैं।**

(2) केंद्र तथा राज्य सरकार के कार्यालयों में रोजगार के अवसर:- **राजभाषा अधिनियम 1976 के अनुसार केद्र सरकार का सभी राज्य सरकारों से जो कार्यालयीन पत्र व्यवहार होता है वह 'क', 'ख' और 'ग' के भाषाई वर्गीकरण के आधार पर होता है।उस वर्गीकरण का उल्लेख प्रास्ताविक में आया है।इन मंत्रालयों में विभिन्न प्रकार के पत्र होते हैं,जो हिंदी में या हिंदी से अँग्रेजी में अनूदित होते हैं,जैसे-अनुज्ञप्ति,अनुज्ञापत्र,अहवाल,अधिसूचना,सूचना,संकल्प, संविदा,सामान्य आदेश,नियम,निविदा,प्रेस विज्ञप्ति आदि। साथ ही सरकार तथा अनेक कंपनियों से जो करार होते हैं वे भी हिंदी तथा अँग्रेजी उपलब्ध होते हैं।इन कार्यालयों में जो अनुवाद कार्य है वह अत्यंत व्यापक है।इसके लिए कनिष्ठ अनुवादक,वरिष्ठ अनुवादक,हिंदी अधिकारी ' हिंदी निदेशक के पद उपलब्ध होते हैं,जहाँ बडी मात्रा नियुक्तियाँ होती हैं,जिनकी पात्रता एम.ए.हिंदी,अनुवाद पदविका और बी.ए.स्तर पर अँग्रेजी विषय होना चाहिए। पूर्व परीक्षा,मुख्य परीक्षा में उतीर्ण होने पर साक्षात्कार के लिए बुलाया जाता है और साक्षात्कार में उतीर्ण होने पर उम्मीदवार का चयन होता है। केंद्र सरकार के गृहमंत्रालय के अंतर्गत केंद्रीय अनुवाद ब्यूरों का कार्यालयीन अनुवाद में महत्वपूर्ण योगदान है। 1मार्च,1971 से 30जून**

2014 तक 23,90,701पृष्ठों का हिंदीअनुवाद किया,जो स्मृति आधारित होने से उसका हर दिन प्रयोग तथा उपयोग होता है।अनूवाद ब्यूरो की ओर एक और योजना है कि किसी भी व्यक्ति को अनुवाद करने में रुचि है तो वह अनुवादक प्रति हजार शब्द के लिए 250 रु. मानदेय पर कार्य कर सकता है। केंद्रीय अनुवाद ब्यूरों की ओर अनुवाद प्रशिक्षण के लिए छह कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं;जैसे-1.त्रैमासिक अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम,2.इक्कीस दिवसीय अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यक्रम,3.पाँच दिवसीय अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यक्रम,4.उच्चस्तरिय पुनश्चर्या अनुवाद प्रशिक्षण,5.राष्ट्रीय प्रशिक्षण नीति और 6.विशेष अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम।

(3) विधि के क्षेत्र में रोजगार के अवसर**:- मोडी ,पालि,प्राकृत भाषाओं को पढना हो या अन्य भाषाओं के पुराने कागजात को पढकर हिंदी-अँग्रेजी में अनूदित करने हेतु अनुवादकों की विधि क्षेत्र में आवश्यकता होती है। विधि क्षेत्र में प्रयुक्त किए हुए आदेश,नियम,उप -विधि तथा अन्य कागजात को संसद,विधान मंडल तथा केंद्र सरकार को भेजते समय हिंदी तथा अँग्रेजी में अनुवाद करने के लिए अनुवादकों की आवश्यकता होती है। कुछ न्यायलयों में अँग्रेजी के साथ हिंदी में भी फैसला सुनाया जा रहा है ऐसे समय आशुअनुवादकों की आवश्यकता होती है।इस क्षेत्र के अनुवादक को स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के साथ विधि क्षेत्र का सामान्य परिचय होना चाहिए।**

(4) बैंकों में रोजगार के अवसर**:-भारत की सभी राष्ट्रीयकृत बैंकों में कामकाज हेतु कार्यालयीन भाषा के रुप में हिंदी का प्रयोग होता है।क्योंकि सभी राष्ट्रीयकृत बैंक केंद्र के अधीनस्थ होती हैं।राजभाषा आयोग के अनुसार केंद्र सरकार हो या उनसे संबंधित बैंक ,बीमा,डाक हो इन कार्यालयों की प्रयुक्त भाषा हिंदी है।इसलिए बैंकों के दिवारों पर लिखा होता है कि हिंदी का प्रयोग करें । अनेक बैंकों में ग्राहकों को हिंदी का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। केंद्र सरकार , रिजर्व बैंक तथा विभिन्न कंपनियों के साथ पत्रव्यवहार ,करार तथा अन्य कार्यालयीन व्यवहार हिंदी में होता है। साथ ही कार्यालयीन परिपत्र,प्रेस विज्ञप्ति तथा विभिन्न फॉर्म हिंदी में होते हैं।पूरकभाषा के रुप में अँग्रेजी होती है। इसलिए कार्यालयीन अनुवाद के लिए अनुवादक,उपप्रबंधक,प्रबंधक,उप महाप्रबंधक (हिंदी) जैसे कई पद होते हैं।स्टेट बैंक के अतिरिक्त अन्य सभी राष्ट्रीयकृत बैंकों के विभिन्न पदों की परीक्षाएँ 'बैंकिग कार्मिक चयन संस्था' (IBPS) लेती है।**

(5) विदेशी तथा अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों में रोजगार के अवसर**:- दुनिया में ऐसे कई राष्ट्र हैं जहाँ की मुख्य तथा द्वितीय भाषा हिंदी है क्योंकि वहाँ प्रवासी भारतीयों जनसंख्या प्रधानता से हैं;जैसे-मॉरीशस,सूरीनाम,कैनडा आदि । साथ ही नेपाल, बांग्लादेश ,आफगाणिस्तान,पाकिस्तान जैसे राष्ट्रों में हिंदी का प्रयोग बडी मात्रा में प्रयोग होता है। विभिन्न देश के भारतीय दूतावास में हिंदी अनुवादक,हिंदी अधिकारी तथा सूचना अधिकारी नियुक्त होते हैं। यहाँ रोजगार के कई अवसर हैं।इनका चयन भारतीय विदेश मंत्रालय के द्वारा होता है।**

(6) शिक्षा क्षेत्र में रोजगार:- **भारत में 56 केंद्रीय विश्वविद्यालय हैं ,जो लगभग सभी राज्यों में उपलब्ध हैं। साथ ही देश - विदेश में 1099 केंद्रीय विद्यालय तथा 661 जवाहरलाल नवोदय विद्यालय उपलब्ध हैं। इन सभी की स्थापना तथा प्रारंभ संसद के अधिनियम के तहत होता है। इन विश्वविद्यालयों तथा विद्यालयों के सभी कार्य भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अनुसार कार्यरत है। भारत की राजभाषा हिंदी होने से इन सभी जगह पर अधिकत्तर पत्रव्यवहार तथा अन्य कार्यालयीन कामकाज प्रधानता से हिंदी में होता है। इतने विशालकाय कार्य के लिए अनेक अनुवादकों आवश्यकता होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-NEP-2020 के अनुसार एन.सी.ई.आर.टी. का नया पाठ्यक्रम हिंदी,अँग्रेजी के साथ भारत की बाईस भाषाओं में जिसका अनुवाद हुआ है। यह बडा कार्य अनुवादकों तथा मशीनी अनुवाद द्वारा पूर्ण किया है।इसलिए शिक्षा क्षेत्र में अनुवादकों के लिए कई संभावनाएँ हैं।**

(7) प्रकाशन संस्थाओं में रोजगार:- **भारत सरकार की कई प्रकाशन संस्थाएँ हैं।जहाँ से ग्रंथ तथा मासिक,त्रैमासिक,वार्षिक पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं। कुछ पत्रिकाएँ देश की विभिन्न भाषाओं में अनूदित रुप में छपती है, 'योजना' जैसी पत्रिका तेरह भाषाओं में प्रकाशित होती है।साहित्य अकादमी,राष्ट्रीय पुस्तक न्यास(NBT)जैसी सरकारी संस्थाओं की ओर से अनुवाद का अच्छा कार्य हो रहा है। यह संस्थाएँ मानदेय देकर अनुवाद करवाती है।केंद्रीय हिंदी**

निदेशालय,हिंदी संस्थान आगरा जैसी संस्थाओं की ओर से प्रकाशन तथा अनुवाद का उत्कृष्ट कार्य हुआ है और हो रहा है।अतः सरकार की प्रकाशन संस्थाओं में अनुवादकों के लिए कई अवसर उपलब्ध हैं।